Vol. I
No. 1

Tuesday
9th March, 1951

सत्यमेव जयते

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES

Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

GOVERNMENT PRESS
HYDERABAD-DN.
1954

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 9th March, 1954.

The House met at Half Past Two of the Clock

[*Mr. Speaker in the Chair*]

QUESTIONS & ANSWERS

(SEE PART I.)

BUDGET—GENERAL DISCUSSION

Mr. Speaker : We shall now proceed to the other item on the agenda.

శ్రీ గోపిడి గంగారెడ్డి (నిర్మల్–జనరల్):

పూజనీయ సభాపతి, స్వామీ !

నిన్న నేను అటవీశాఖ గురించి మాట్లాడుతూ సమయం అయిపోవడంవల్ల మరల నేడు....

مسٹر اسپیکر - آنریبل ممبر یہ ملحوظ رکھیں کہ کل وہ کافی وقت لے چکے ہیں -

श्री गोपिडी गंगा रेड्डी :—काफी वक्त नहीं लिया हूं लेकिन कल के जितना वक्त मैं आज नहीं लूंगा।

مسٹر اسپیکر - آپ تو ھندی میں تقریر کرسکتے ہیں .. اگر آپ یہ چاہتے ہیں کہ بعض آنریبل ممبرس آپ کی تقریر سمجھنے سے محروم رہیں اور آپ کی تقریر ان کے لئے دلچسپی کا باعث نہ ہو تو یہ اور بات ہے لیکن اگر آپ ایسا نہیں چاہتے تو ھندی میں کہیں -

श्री गोपिडी गंगा रेड्डी :—चीफ मिनिस्टर तेलगु जान सकते हैं जिस लिये मेरा जवाब देने में उनको दिक्कत नहीं होगी।

مسٹر اسپیکر - خیر آپ کوشش تو کیجئے -

श्री गोपिडी गंगा रेड्डी :—हिंदी में बोलने की कोशिश करूंगा तो कुछ अनपार्लियामेंटरी ([illegible]) मेरे मुंह से निकल जाय, जिसका मुझे डर मालूम होता है। दूसरी बात [illegible] नहीं बोल सकता।

डेप्युटी मिनिस्टर फॉर अेज्यूकेशन अँड लोकल गवर्नमेंट (श्रीमती संगमलक्ष्मीबाई) :— तेलगू में बहुत खराब बोलते हैं अिसलिये आपको हिंदी में ही बोलना चाहिये।

श्री. गोपिडी गंगारेड्डी :—अध्यक्ष महोदय, कल मैं जंगलात के बारे में कह रहा था अुतने में ही सभा का समय खतम हो गया। जंगलात के अंदर जो खराबियां है वह बहुत बडी नही हैं अैसा समझना बडी गलती होगी। जंगलात का जब गुत्ता दिया जाता है तो लकडी काटने के बाद वहां जो कचरा पडा रहता है अुसको साफ करने की जिम्मेदारी गुत्तेदार पर होती है। लेकिन गुत्तेदार अिस काम को नही करते, क्योंकि गुत्ते में अुनको जितना पैसा मिलता है अुससे ज्यादा अिस सफाअी में ही निकल जाता है। अिसकी तरफ गवर्नमेंट तवज्जह नहीं देती। गुत्तेदार सौ दो सौ रुपये अमीन साहब, या मददगार साहब को देता है और अुस सफाअी की जिम्मेदारी अुन पर डाल देता है। अमीन साहब या मददगार साहब सब कचरा अेक जगह जमा करते है, अुसको आग लगा देते हैं। नतीजा यह हो जाता है कि कभी कभी सब जंगल को आग लग जाती है और अुस में जो छोटे छोटे झाडों के पौदे होते हैं वे भी जल जाते हैं और अिस तरह से पूरे जंगलात की खराबी होती है। हर बजट सेशन में हम गवर्नमेंट का ध्यान अिस तरह की चीजों की तरफ दिलाते है लेकिन गवर्नमेंट अुनकी तरफ ध्यान नहीं देती। गवर्नमेंट को चेहरा माना जाता है और अपोजीशन को आयना माना जाता है। चेहरा आयने में देखा जाता है, लेकिन अपना चेहरा ठीक न होने वाले लोग आयने को फेंक देते हैं, वे नहीं समझते कि अुनको चेहरा ठीक नहीं है, आयने का अुसमें दोष नहीं है। अुसी तरह से अपोजीशन जो हुकूमत की खामियां बताती है अुनकी तरफ हुकूमत को तवज्जह देनी चाहिये।

तामीरात के बड बडे अिंजीनिअर्स होते है और अुनको हद से ज्यादा नतख्वाह दी जाती है लेकिन आज तक अुन्होंने प्रोजेक्टस के लिये जो अेस्टीमेटस बनाये अुनमे से कौनसे सही रहे हैं? हमेशा गलत अेस्टीमेटस किये जाते हैं। जहां दो रोड का अेस्टीमेट किया जाता है वहां १२ करोड खर्च करने पडते हैं। ये अस्टीमेटस बनाते वक्त अुनकी काबिलियत न जाने कहां जाती है। अेक अनपढ और अनाडी किसान जिसको आप कहते हैं वह भी अपनी खेती को सुधारने के लिये दो रुपये का जहां अंदाजा लगाता है वहां ८ रुपये खर्च नही करता। अुसका अंदाजा अिनसे कअी गुना ज्यादा सही होता है। लेकिन ये लोग जितनी तनख्वाह पाते हैं अुससे २० गुना ज्यादा भत्ता लेते हैं लेकिन अेस्टीमेटस बराबर नहीं करते। अिस तरह से हमारी हुकूमत को जंग लगा दिया गया है लेकिन हमारी गवर्नमेंट अिसकी तरफ ध्यान नहीं देती।

अिसके बाद मैं हुकूमत से पूछना चाहताहूं कि डेप्युटी कलेक्टर, डेप्यूटी मिनिस्टर यह सब डेप्यूटी, डेप्यूटी का ओहदा किस लिये रखा गया है। किसी काम के लिये जाओ तो ये लोग हमको अिधर जाओ, अुधर जाओ कहकर सिर्फ रास्ता बताते हैं जैसे कि चौरहे पर अेक कान्स्टेबल साअिड बताता है। तहसीलदार के पास जाओ तो वे कलेक्टर की तरफ साअिड बताते हैं, डेप्यूटी मिनिस्टर की तरफ जाओ तो वे मिनिस्टर की तरफ साअिड बताते हैं। अैसा क्यों हो रहा है? बडे बडे जागीरदारों में से डेप्यूटी कलेक्टर्स बनाये गये हैं और नाहक हमारे खजाने पर बार डाला गया है। यह लोग मजा अुडाते हैं। अिस तरह से आमदनी से ज्यादा खर्चा रखकर हमारी हुकूमत किस तरह से सही सलामत रहेगी यह सवाल सामने आता है।

तलफेमालके बारे में मैं कहूंगा कि अेक तारीख मुकर्रर की गयी है, लेकिन हुकूमत करनेवालों का यह मालूम नहीं है कि हैदराबाद स्टेट मे जो तरह तरह की फसल पैदा होती है वह कितने महीने में होता है और कब कटाअी जाती है। तारीख खतम होनेके बाद वे पंचनामा करने के लिये वहां जाते हैं। कुछ फसल अैसी होती हैं जो तीन महीने के बाद काटी जाती है, कुछ अैसी होती है जो ६ महीने के बाद काटी जाती है। वह कभी भी काटी जानेवाली हो अफसर लोग मुकर्रर तारीख के बाद ही वहां पंचनामा करने के लिये जाते हैं, और अुनके बैलों को चराने के लिये जो घान होता है अुसको भी वे काट लेते हैं। ये डेप्यूटी कलेक्टर लोग बडे बडे खानदान से लिये हुअे हैं, बडी बडी डिग्रीयां अुन्होंने हासिल की होंगी लेकिन काश्तकारी को वे जान नहीं सकते। हमारे जैसे मामूली लोग अुनको जान सकते हैं क्योंकि हम किसान तबके से आये हुअे हैं। हमारे मिनिस्टरान भी अुसी तबके से आये हैं, वे भी अिसका तजरुबा रखते हैं लेकिन मिनिस्ट्री की नशा में वे भी अिन सब चीजों को भूल गये हैं। बैल की निशानी रखकर आपने वोट हासिल किये लेकिन किसान के बैलों के लिये चारा रहता है या नहीं अिसकी भी अुन्हें आज कदर नहीं है। तलफेमाल के भी अिस तरीके के बारे में गुजिश्ता साल चीफ मिनिस्टर साहब के सामने मैंने यह चीज रखी थी, लेकिन तेरा के दस और दस के सोला की फिकर में वे शायद अिसको भूल गये। खुद का मकान संभालने की फिकर में शायद वे बाहर की चीजों का ख्याल भूल गये। हर आदमी जानता है कि कौनसी फसल तीन महीने में निकलती है और कौनसी छ: महीने के बाद निकलती है। जो धान निकलता है अुसके बारे में तलफेमाल को दरख्वास्त दे तो गिरदावर, या डेप्यूटी कलेक्टर साहब या तहसीलदार साहब अपनी मुकर्रर तारीख के बाद ही वहां जायेंगे तो अुस वक्त वहां क्या रहनेवाला है ?

आबकारी शाखा में भी अिसी तरह से अंधाधुंद कारोबार हैं। मद्रास सिस्टम के मुताबिक हमारे यहां जिन बैठकों को निकाल दिया गया है अुनको बरकरार रखने का फैसला किया गया है। अेक गांव में बैठक नहीं है और अुसके पास के गांव में बैठक है तो अेक गांव के लोग दूसरे गांव में जाकर शराब पीते हैं और गुत्तेदारों के जेब गरम हो जाते हैं। जिस गांव में बैठक नहीं है अुस गांव में बैठक रखी जाय तो कम से कम गवर्नमेंट की कुछ आमदनी बढेगी, लेकिन अिसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। अिसको दुरुस्त करने के लिये हर बजट सेशन के वक्त हम कहते हैं लेकिन अिसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। अिसके संबंध में तेलगु में अेक लोकोक्ति है—

" ఎద్దుకైనగాని ఏడాది దెప్పిన
మాట తెలిసి నడుచు మర్మమెరిగి,
చెప్పి తెలియలేదు ముప్పదేండ్లకునైన "

फर्ज कीजिये किसी बैल के साथ हम हमेशा रहे और अुसको कुछ बोलते गये तो कुछ सालों के बाद वह भी हमारे अिशारों को समझने लगता है, लेकिन अब क्या बोलूं मैं अपने विचारों को हिंदी में समझा नहीं सकता, लेकिन साल ब साल हम यहां बोलते रहते हैं फिर भी आप अुसको नहीं समजते। कलेक्टर साहब, तहसीलदार या गिरदावर वगैरा दौरे पर जाते हैं, अुनको भत्ता मिलता है लेकिन अुनका भार किसानों पर पडता है। ये अफसर लोग अुनकी दिक्कतों को दूर करने के लिये कोअी रास्ता नहीं निकलाते।

अिसी तरह से फूड अिन्सपेक्टर्स (Food Inspectors) किस लिये रखे गये हैं यह मेरी समझ में नहीं आता। हम देख रहे हैं दो साल से अिनके जरिये से कोअी काम नहीं

हो रहा है। अैसी हालत में अिन लोगों को बरकरार रखते हुअे अुनकी तनख्वाह बढाते रहने में क्या फायदा है। शायद आप कहेंगे कि अिनको निकाल दिया जाय तो बेरोजगारी बढेगी, लेकिन अिन लोगों को निकालने से बेरोजगारी का मसला कोअी ज्यादा बढनेवाला नहीं है। गिर-दावर और फूड अिन्सपेक्टरों को निकाल दिया जाय तो बेरोजगारी नहीं बढेगी। आप सिर्फ पढे लिखे लोगों की बेरोजगारी की तरफ ही ध्यान देते हैं, लेकिन आपकी हुकूमत आने के बाद जो रवैया अेख्तियार किया गया है अुसकी वजह से देहातों के गरीब तबके में जो बेरोजगारी बढी है अुसको दूर करने की तरफ आप तवज्जह नहीं देते। आप जरा देहातों का दौरा करके देखिये। पुलिस अेक्शन के पहले की हालत क्या थी और आज की क्या है अुसको जरा देखिये। आपने जो ट्रेक्टर्स और दीगर अिंजिन्स वगैरा देहातों में चलाये हैं अुनकी वजह से कितने लोग बेरोजगार हो गये हैं। जो लोग पहले हाथ से काम करते थे और अपनी रोजी कमाते थे आपके ट्रेक्टरों की वजह से अुनकी रोजी बंद हो गअी है। देहात के कुछ लोग दूसरों का अनाज पीस कर आटा बना देते थे और रोजी कमाते थे। अब आपने बडे बडे लोगों को चक्की चलाने के परमिट देकर अुनकी रोजी बंद कर दी है। मशीनों के मैं खिलाफ नहीं हूं, लेकिन अुनका अिस्तेमाल सोच समझकर किया जाना चाहिये। आप कहते हैं कि ट्रेक्टरों से बेरोजगारी दूर होगी, लेकिन क्या आप ट्रेक्टर सब लोगों में तकसीम कर सकते हैं। अगर आप वैसा कर सकते तो मुझे मशीनों के खिलाफ बोलने की जरूरत न होती, लेकिन जहां हाथों से काम किये जाने चाहिये वहां आप मशीनरी और अिंजिन लगाकर देहातों में बेरोजगारी बढा रहे हैं। आखिर में अेक लोकोक्ति कहकर मै अपना भाषण समाप्त करूंगा—

కానివానిచేత గాసు వీసంతిచ్చి
వెంట దిరుగువాడె వెర్రివాడు
పిల్లి తిన్న కోడి పిలిచినపలుకునా,
విశ్వదాభిరామ వినురవేమా !

శ్రీ గోకా రామలింగం (భువనగిరి) :
అధ్యక్ష మహాశయా,

ఇక్కడ బడ్జెట్ మీాద రెండు రోజులనుంచి డిస్కషన్ జరుగుతోంది. రాజప్రముఖ్ అడ్రెసు మీాదకూడా చర్చలు జరిగాయి. బడ్జెటుమీాద, రాజప్రముఖ్ అడ్రెసు మీాద యిక్కడ చేసిన ప్రసంగాలు విన్నాము. ఆ రాజప్రముఖ్ అడ్రెసుమీాద ఇచ్చిన స్పీచెస్ (Speeches) కూడా స్లేటు రికార్డుచేసి ఇక్కడ పెట్టినట్లయితే బాగుంటుంది.

ఇప్పుడు బడ్జెటుమీాద మాట్లాడేటప్పుడు రెండుమూడు సంగతులున్నాయి. మనవద్దకు రకము ఎట్లా వస్తోంది. దానిని ఏ విధముగా ఖర్చు పెట్టాలి, మనకయ్యే ఖర్చుకన్న వచ్చే ఆదాయము తక్కువైనది. తక్కువ ఎట్లా అయినదని చెప్పి నిన్న చినకొండూరు గౌరవ సభ్యులు మాట్లాడారు. నేను దానిని పూర్తిగా వ్యతిరేకిస్తున్నాను. ఇంకా సోర్సెస్ (Sources) ఎక్కువ చేసి ఆదాయాన్ని ఎక్కువచేసి దేశాన్ని బాగు చేయడానికి మనం ప్రయత్నం చేయాలి. నేను చెప్పే దేమంటే ల్యాండు రెవిన్యూ, ఎక్సైజు, సేల్సుటాక్సు వీటి బకాయీలు (అరియర్సు) (Arrears) వసూలు కావలసినవి చాలా వున్నాయి. వాటిని గురించి గౌరవమంత్రులు ఎక్కువ శ్రద్ధ తీసుకొని ఆయా శాఖలలో ప్రభుత్వం ఎక్కువ డబ్బును సంపాదిస్తారని ఆశిస్తున్నాను.

లీడరు ఆఫ్ ది అపొజిషన్ (ప్రతిపక్షనాయకుడు) మన పంచవర్ష ప్రణాళిక (Five year plan) గురించి మాట్లాడుతూ, దానిలో గుత్తేదార్లు పని చేస్తున్నారని అది గుత్తేదార్ల మీద ఆధారపడి వున్నదేగాని ప్రజలనుంచి రెస్పాన్సు (Response) రావడం లేదని చెప్పారు. అపొజిషన్ పార్టీవారేకాదు, మనమంతా, పదిమందీమి కలిసి చేస్తేనే అది జయప్రదమౌతుంది. ఆ పంచవర్ష ప్రణాళికనేది ట్రెజరీ బెంచెస్‌మీద కూర్చున్నవారే చేస్తారని అనుకోకూడదు. మన మంతా ప్రజలలో చొచ్చుకొనిపోయి వారి సహకారముతో చేయవలసిన బాధ్యత మన అందరిమీద వున్నది.

తక్కావి లోన్సు జమీందార్లకు, జాగీర్దార్లకే యిస్తున్నారంటున్నారు. తక్కావి లోన్సు వారికే యివ్వవలసి వుంటుందని గుర్తించాలి. ఎందుచేతనంటే భూమి ఎవరికి వున్నది? భూమిగలవారికే తక్కావిలోన్సు యిస్తే భూమియందు ఎక్కువ ధాన్యము పండించి దేశాన్ని వృద్ధిలోకి తీసుకు రాగలరు. వారికి తక్కావి లోన్సు ఎందుకు ఇవ్వకూడదంటున్నారో నాకు అర్థము కావడములేదు.

[MR. DEPUTY SPEAKER IN THE CHAIR]

తరువాత ఆర్. టి. డి. బడ్జెటు ౧౯౫౨–౫౩ లో ౩౭ లక్షలు ఎస్టిమేషన్ వున్నది. కాని ౧౭ లక్షలే వచ్చింది. దీనికి కారణం మనకు తెలిసే వున్నది. కాని ఈ సంవత్సరం ౨౪ లక్షలు మాత్రమే వేశారు. దీనికి కారణం ఏమిటి? ౨౪ లక్షలనుండి ౩౦ లక్షలు ఎందుకు కాలేదో నాకు తెలియడం లేదు.

హారిజన్ వెల్ఫేర్ క్రింద ౨౭ లక్షల ౨౩ వేల ౨ వందలున్నది. దీనిలో (యఫ్. ఎ.) లో బ్యాక్‌వార్డు క్లాసెస్ కూడా కలసి వున్నది. దానిలో తప్పొప్పులు ఏమిటో నాకు తెలియుట లేదు. దానినికూడా గుర్తిస్తారని చెప్పి నేను ఆశిస్తున్నాను.

మనదేశంలో పంటలు సమృద్ధిగా పండినందువలన కరువుకాటకాలను మనం దూరం చేసుకొన్నాము. ఇప్పుడు కంట్రోల్సు కూడా ఎత్తివేయబడ్డాయి. దానివలన మనకు ఫ్యూచర్ (Future) బాగుంటుందని ఆశిస్తున్నాను.

ఇంకొక విషయం, లా అండ్ ఆర్డర్ విషయంలో, ఈ రెండు సంవత్సరములనుండి ఎక్కడా ఏమీ ఇబ్బందులు లేకుండా వున్నందుకు ప్రజలకు ధన్యవాదములర్పిస్తున్నాను.

శ్రీ పెండెం వాసుదేవ్:— లా అండ్ ఆర్డర్ బాగుంటే పోలీసు ఖర్చు తక్కువచేయమని చెప్పండి.

శ్రీ రామలింగం: చేస్తారు, యింకా తక్కువగుతుంది.

ఇంకొక విషయం, చేనేత పరిశ్రమకు ౧౬ లక్షల రూపాయలు గవర్నమెంటువారు యిచ్చారు. ఈ ౧౬ లక్షల స్కీము మన అడ్వైజరీ బోర్డు ముందు వున్నది. దానివలన మన చేనేత పరిశ్రమ చాలా ముందుకు తీసుకు రాబడుతోంది. ఇంకా గవర్నమెంటు మనకు సహాయం చేస్తుంది. ఇది కూడా ఒక ముఖ్య విషయమని మనము గుర్తించ వలసియున్నది.

ఈ తుంగభద్ర ప్రాజెక్టు ఏదైతే వున్నదో దానిని ౩౦, ౪౦ సంవత్సరాలనుంచి కట్టవలెనని అనుకుంటున్నారు. ౧౯౪౫ నుంచి కట్టబడుచున్నది. కొంత వరకు పని జరిగింది. దాని క్రింద

అనేక స్కీములున్నవి. దానిలో రాజోలుబండ స్కీము ఆగిపోయినది. దీని మీద హైదరాబాదు గవర్నమెంటుకు, ఆంధ్ర గవర్నమెంటుకు కొంత సంధి జరుగ వలసియున్నది. అందుకని అది అట్లాపడి వున్నది. దాని విషయం ప్రభుత్వంవారు వెంటనే గుర్తించినట్లయితే బాగుంటుంది. ఇట్లా అనేక విషయాలున్నాయి. వాటన్నింటి మీద ప్రభుత్వము వారు తగిన శ్రద్ధ తీసుకొని దానిని త్వరలో పూర్తి చేస్తారని ఆశిస్తున్నాను.

ల్యాండ్ ఇంప్రూవ్‌మెంట్ బోర్డు ఒకటున్నది. మనం ల్యాండ్ ఇంప్రూవ్‌మెంటు బిల్లు ఒకటి ప్యాస్ చేశాము. దానివలన దేశానికి చాలా లాభం వున్నది. స్టేటుకూడా లాభ పడు తుంది. ఆ బోర్డు సరిగా పనిచేస్తుందని ఆశిస్తూ యింతటితో ముగిస్తున్నాను.

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి (రామాయంపేట):

అధ్యక్ష మహాశయా,

౧౯౫౪ సం. నుంచి ౧౯౫౫ సం. వరకు ప్రభుత్వం ఒక బడ్జెటు ప్రవేశ పెట్టింది. ఆ బడ్జెటు పైన నిన్న, యివ్వాళ చర్చలు జరుగుతున్నాయి. బడ్జెటును ప్రవేశపెడుతూ ఆర్థిక శాఖామంత్రి గారు వ్యాఖ్యానం చేస్తూ ఒక ఉపన్యాసం గావించారు. రాజప్రముఖ్ ఈ శాసన సభాసమావేశం ఆరంభమైనప్పుడు ఒక ఉపన్యాసము గావించారు. ఆ ఉపన్యాసమును, ఈ బడ్జెటును, దృష్టిలో వుంచుకొని బడ్జెటులోని ముఖ్యాంశాలు ఆధారం చేసుకొని, నా అభిప్రాయాలు, నా యొక్కసూచ నలు, విమర్శలు యివ్వదలచుకొన్నాను.

౧౯౫౪-౫౫ నకు ప్రభుత్వానికి ౨౭ కోట్ల ౯౬ లక్షల ౪౦ వేలు ఆదాయం వస్తుందని, ౨౯ కోట్ల ౭ లక్షలు ఖర్చుఅని బడ్జెటులో చెప్పబడింది. ఈ విధంగా ఆదాయ వ్యయాలు దృష్టిలో వుంచుకొని చూస్తే ఈ సంవత్సరం ప్రభుత్వానికి ౧ కోటి ౩౧ లక్షల ౭౦ వేల కొరత ఏర్పడు తుందని ఈ బడ్జెటు తెలుపుతోంది. అయితే గత సంవత్సరం ప్రభుత్వానికి ౨౫ కోట్లకు పైన ఆదాయం వచ్చిందని ఈ బడ్జెటులో చెప్పబడింది. ఈ సంవత్సరం ౨ కోట్ల ౯ లక్షల పన్ను వివిధ రూపాలలో రైతాంగంపై ఎక్కువవేసి వసూలు జేయబడుతుందని బడ్జెటు చూసిన తరువాత తెలుస్తున్నది. రాజప్రముఖ్ యిచ్చిన ఉపన్యాసంలో ఈ సంవత్సరం క్రొత్త పన్నులు వేస్తారని ఆ పన్నులు భరించడానికి ప్రజలు సిద్ధంగా వుండాలని సూచించారు. ఈ నాడు అధికారంలో వున్న కాంగ్రెసు పార్టీలోనికొందరు ప్రతి పక్షములో ఉన్న, మాతోవున్నవారు కొందరు కలసి ఆంధ్ర, మహారాష్ట్ర, కర్ణాటక సభలు స్థాపనచేశారు. ఆ రోజుల్లో హైదరాబాదులో రైతుపైన మోయరాని పన్నుల భారం వుందని దానిని తగ్గించాలని ఆంధ్ర, మహారాష్ట్ర, కన్నడ వేదికలనుంచి ఎన్నో తీర్మానాలు చేశారు. ఎన్నో మెమోరాండములు ఆనాడు అధికారంలోవున్న ప్రభుత్వానికి, పంపారు. వారు ఈ నాడు అధికారములోకి వచ్చినతరువాత ఆంధ్ర, మహారాష్ట్ర, కన్నడ వేదికలనుంచి చేసినతీర్మానాలు, ప్రభుత్వానికి పంపిన మెమోరాండాలు అన్నీ మరచి పోయి వాటిని బుట్టదాఖలు చేసి రైతులపైన క్రొత్త క్రొత్త పన్నులు వేసి వసూలు చేస్తున్నందుకు నా యొక్క విచారాన్ని తెలుపుతున్నాను. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో దాదాపు ౬౦౦ జాగీర్దార్లు, హైదరా బాదులోని ౨౫ వేల గ్రామాలలోని దాదాపు ౭ వేల గ్రామాలకు పైన జాగీర్దార్లు నిరంకుశ

పరిపాలన సాగించేవారు. జాగీర్దార్లకు వ్యతిరేకంగా అక్కడి జాగీరు రైతులు సంఘటిత పడి [illegible] పోరాటాలు సాగించారు. ఆ రోజులలో రాజకీయపార్టీలన్నీ జాగీర్దారీ రైతులతో కలసి పోరాటాలు సాగించడం, ఆ పోరాటాల ఫలితంగా వారు కొన్నిహక్కులు సాధించారు. ఆ [illegible] ఈ ప్రజా ప్రభుత్వమని చెప్పుకొనే ఈ కాంగ్రెసు ప్రభుత్వము గుర్తించు [illegible] ఉదాహరణలు ఇవ్వగలను. ఇప్పుడు ఒకటి రెండు ఉదాహరణ లిస్తాను. [illegible] జాగీర్లున్నాయి. ఆ జాగీర్దార్ల పరిపాలనలో [illegible] ఎక్కువచేశారు. ౧౯౪౩-౪౪ లో జాగీర్ రైతులు [illegible] చేసారు. ఆ పోరాట ఫలితంగా జాగీర్దారు హెచ్చించిన ౧౦ [illegible]. ౧౯౪౭-౪౮ వరకు జాగీర్ రైతుల జాగీర్ దారునిచే మాఫిగావించ[illegible] తక్కిన పన్నును చెల్లించుచువచ్చారు. ఈ ప్రభుత్వం అధికారం లోకివచ్చాక [illegible] రద్దు చేశారు. అప్పటినుంచి ఈ నాటి వరకు కొలనుపాక గ్రామంలో తిరిగి ౧౯౪౦ నుంచి జాగీర్దారుచే మాఫీ గావించబడిన డబ్బు రైతుల నుంచి నిర్బంధంగా వసూలు చేస్తున్నారు. ఇంకొక ఉదాహరణ యిస్తాను. మెదక్ జిల్లా నార్సింగ్ గ్రామంలో ఐదారువేల జనాభావున్నది. కమాల్‌యార్ జంగ్ ౨౦ సంవత్సరముల క్రింద దవాఖానా ఏర్పరచి ఉచితంగా మందులు యిచ్చే ఏర్పాటు చేశాడు. జాగీర్దారీ విధానం రద్దు ఐనతరువాత గత సంవత్సరం అక్కడ వున్న దవాఖానాను ఈ ప్రభుత్వం తీసేశారు. ఈ లాటివి ఎన్నో ఉదాహరణలున్నాయి.

రాజప్రముఖ్ ఉపన్యాసంలో ౧౫౦౦ జాగీర్ గ్రామాలలో ఖాల్సా ప్రాంతములో వసూలు చేయ బడుచున్న పన్నులు వసూలు చేస్తున్నారు. ఈ స్టేటులో మొత్తం ౭ వేల జాగీర్ గ్రామా లున్నాయి. ఆ ౭ వేల గ్రామాలలో ౧౫౦౦ గ్రామాలనుండి మాత్రమే ఖాల్సా పన్నులు వసూలు చేస్తున్నామని రాజప్రముఖ్ తెలియజేశారు. తక్కిన ౬ వేల గ్రామాలలో ఈ నాటివరకు అక్రమ పన్నులు వసూలు చేస్తున్నారని, బడ్జెటును చూస్తే, బడ్జెటుపై గావించిన ఉపన్యాలను చూస్తే బోధపడుతుంది. అయితే ఈ జాగీర్దారీ విధానం రద్దుచేస్తామని కాంగ్రెసుపార్టీ అధికారంలోకి రాకపూర్వం ఎన్నో తీర్మానాలు చేసింది. ఉపన్యాసాలు గావించారు. కాని వారు అధికారం లోకి వచ్చిన తరువాత జాగీర్దారీ విధానం రద్దుచేయలేదని, ఏదో నామ మాత్రంగా చేశారని ఘంటాపథంగా చెబుతున్నాను. నామమాత్రంగా ఎందుకు చేశారంటే రజాకార్ల కాలంలో జాగీర్దార్లకు పన్నులు చెల్లించడానికి జాగీరు ప్రజలు నిరాకరించారు. పోలీసుయాక్షను తరువాత ఆ గ్రామాలకు జాగీదార్లు వెళ్ళి వసూలు చేయలేకపోయారు. జాగీర్దారీ విధానం రద్దుచేశామని ప్రభుత్వం ప్రకటించింది. అంతకు పూర్వం జాగీర్ అధికారులు రైతులనుండి పన్నులు వసూలు చేసేవారు. ఇప్పుడు కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం పన్నులు వసూలు చేస్తున్నారు. ఈ మార్పు తప్ప అక్కడ వేరే మార్పు లేదని చెబుతున్నాను. కాంగ్రెసు ప్రభుత్వంవచ్చిన తరువాత జాగీరు రైతులకు ఏలాంటి మేలు కలగలేదు. ఆనాటి ౬౦౦ జాగీర్దార్లలో పెద్ద జాగీర్దారైన నైజాము నవాబును గద్దెపై కూర్చుండబెట్టి పర్ఫెఖాస్‌పైన సంవత్సరమునకు ౫౦ లక్షలు, రాజప్రముఖ్ పేర భరణంమరో ౫౦ లక్షలు మొత్తం సంవత్సరానికి ౧ కోటి రూపాయలు యిస్తూ ప్రజలనెత్తిపై కూర్చుండబెట్టినందుకు విచారము తెలుపుతున్నాను. రాజప్రముఖ్‌ను గద్దెపైనుంచి దించే అధికారము ప్రజలకుందన్నారు.

కాంగ్రెసు ప్రధాన మంత్రి పండిట్ నెహ్రూ, సర్దార్ వల్లభాయిపటేల్ ఇక్కడికివచ్చి ప్రకటించారు. వాటినన్నింటిని బుట్టదాఖలుచేసి నైజాము నవాబును గద్దెపై కూర్చుండబెట్టి సంవత్సరానికి ౧ కోటి రూపాయలు యివ్వడం సహించరాని పని. ఈ నైజాంనవాబు-రజాకార్ల కాలంలో ఎందరో స్త్రీల మానభంగాలు చేయడం, ఎన్నోవేలమంది అన్నదమ్ములను కాల్చి చంపడం హైదరాబాదు ప్రజలు ఎన్నటికి మరువలేరు. ఇలాంటి వానిని గద్దెపై కూర్చుండపెట్టి సంవత్సరానికి కోటి రూపాయలు యివ్వడం హైదరాబాదు ప్రజలు సహించరు. అదే విధంగా జాగీర్దార్లకు సంవత్సరానికి ౧ కోటి ౩౯ లక్షల, ౯౬ వేలు నష్టపరిహారమనిచెప్పి యిస్తున్నారు. చిన్నచిన్న జాగీర్దారులుంటే అటువంటివారి కుటుంబ పోషణకు యిస్తే నాకు ఆక్షేపణ లేదు. సంస్థానాధీశులు, పెద్దపెద్ద జాగీర్దార్లు నవాబ్ జంగులు, గద్వాల్ రాజా, వనపర్తి రాజా మున్నగు వారికి నష్టపరిహారం యివ్వడం సహించరాని పని. ఆ విధంగా నష్టపరిహారంగా యిస్తున్న డబ్బును తగ్గించాలని నేను కోరుచున్నాను.

ఈ కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం అధికారానికి రాకపూర్వం దున్నేవానికి భూమి యిస్తామని చెప్పి ఎన్నో సార్లు ప్రకటించారు. ఈ ప్రభుత్వం అధికారంలోకి వచ్చి రెండు సంవత్సరాలైనది. మూడవ సంవత్సరం ఆరంభమయినది. ఈ కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం అధికారంలోకి వచ్చిన తరువాత ఎక్కడైనా రైతాంగానికి ఒక్క ఎకరమైనా భూమి యిచ్చిందా అని సవాలు చేస్తున్నాను. ఎక్కడా యివ్వలేదు. నైజాము నవాబుకు ౨౦ వేల ఎకరాలభూమి వుందని ప్రభుత్వమే అంగీకరించింది. నైజామునవాబు ఆలాంటి పెద్దపెద్ద జాగీర్దార్ల భూములను తీసుకొని ప్రజలకు ఈ ప్రభుత్వం యిచ్చిందా అంటే లేదు. విసూ్నరు దేశముఖ్, సూర్యాపేట దేశముఖు, జన్నారెడ్డి కుటుంబాలు, కల్లూరు రాజేశ్వరరావు మున్నగు వారికి వేలకు వేల భూమి వున్నది. అటువంటివారి కుటుంబములకు సరిపోయె భూమిని వదిలి మిగతా భూమిని తీసుకొని బీద రైతాంగానికి యిచ్చేటందుకు యీ ప్రభుత్వం సంసిద్ధంగా లేదు. ఇస్తారనే నమ్మకం ప్రజలకు కూడా పోయింది. దున్నేవానికి భూమి యిస్తామని చెప్పి గత శాసన సభలో ఒక భూసంస్కరణాల చట్టమును-ప్యాస్ చేసింది. ఆ భూసంస్కరణాల చట్టము దృష్టిలో వుంచుకొని భూములు లేని వారికి భూములు యిస్తామని ప్రభుత్వం చెప్పింది. కాని ఆ చట్టాన్ని చూస్తే ఒక్కరికి కూడా దానివలన భూమి దొరకదని ఘంటాపథంగా చెప్ప వచ్చును. ౬ లక్షల కౌలుదార్లకు యింతకు పూర్వం వున్న చట్టప్రకారం రక్షిత కౌలు ఫారాలు యిచ్చారు. ఈ రక్షిత కౌలుదార్లు చేసుకుంటున్న భూమి అయినా దక్కుతుందనే నమ్మకంలేదు. స్వంత సేద్యం పేరుతో జమీన్‌దార్లు జాగీర్దార్లు నోటీసులు యిచ్చి రక్షిత కౌలుదార్ల చేతుల్లోనుంచి భూములను స్వాధీన పరచుకొనే అవకాశం ఆ భూసంస్కరణాల చట్టములో వున్నదని నేను వేరే తెలప నవసరం లేదు. ౧౯౪౮ నుంచి యీ నాటివరకు జాగీర్దార్లు వేలకు వేలు భూముల నుండి రైతులను బేదఖలుచేసి స్వంతసేద్యముచేసు కొనడమో, లేక అమ్ముకొనడమో జరిగినది. బేదఖళ్లు ఆపేందుకు ఒక ప్రత్యేక ఆర్డినెన్సును చేశామని రాజప్రముఖ్ చెప్పాడు. ఆర్డినెన్సు వున్నప్పటికి వేలకు వేల భూములనుండి రైతులను, గూండాల, పోలీసుల సహాయముతో జాగీర్దార్లు, జమీన్‌దార్లు బేదఖలు చేశారు. అమ్ముకొని లక్షల డబ్బును సేకరించారు. జనగామ తాలూకా దేవరుప్పల గ్రామంలో విసూ్నరు దేశముఖు కాశింరజ్వీకి కుడిభుజంగా వుండి రజాకార్ల కాలంలో ఎంతోమంది అన్నదమ్ముల ప్రాణాలను గైకొన్నాడు. ఒక లక్ష రూపాయల విలువగల భూమిని [illegible] దేవరుప్పల గ్రామములోనే అమ్ముకొన్నాడు. ఈ విధంగా ఎన్నో ఉదాహారణ లివ్వవచ్చును.

భేదాలు చేయకుండా ప్రత్యేక ఆర్డినెన్సు చేశామని చెప్పి కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం మహా గొప్పలు చెప్పుకుంటున్నది. కాని ఆ ఆర్డినెన్సు కాగితాలమీద వున్నది గాని దానివలన ప్రజలకు మేలు కలుగలేదు. ఈ ప్రభుత్వముచే చేయబడిన చట్టాలన్నీ కాగితాలపైననే వుండి పోవుచున్నవి.

౩ కోట్ల, ౨౯ లక్షల, ౩౯ వేల రూపాయలు పోలీస్‌పైన ఖర్చు పెడతామని ప్రభుత్వం బడ్జెటులో చూపించారు. ఈనాడు పోలీసు ఏమి చేస్తోంది ? దేశంలో శాంతి భద్రతలను కాపాడేందుకు పోలీసును వుంచారా ? నిన్నమొన్న హోం మినిస్టరు, తక్కిన కొందరు, సభ్యులు, యిప్పుడు మాట్లాడిన భువనగిరి సభ్యులు ఈ నాడు హైదరాబాదు రాష్ట్రములో లా అండ్ ఆర్డరు చాలా బాగుందని అంటున్నారు. నల్లగొండ జిల్లాలో చూచినట్లయితే ౩౦, ౪౦ పోలీసు క్యాంపులున్నాయి. వీటిని శాంతి భద్రతలను కాపాడడానికి వుంచారా ? లేదు. ప్రతిపక్షం వారిని అణిచే ఉద్దేశంతో ఈ పోలీసులను వుంచారు. ఈ పోలీసుపై ౩ కోట్ల, ౨౯ లక్షల, ౩౯ వేలు ఖర్చుపెట్టడం సహించరాని పని. దీనిని చూస్తే యిది ప్రజాప్రభుత్వం బడ్జెటు కాదని పోలీసు బడ్జెటు అని చెప్పగలను. ఈ పోలీసుమీద ఖర్చు పెడుతున్న డబ్బును చూసి నేను చెప్పగలను. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో, విద్యార్థులు సాగించే పోరాటము అణచడానికి, కార్మికుల పోరాటం అణచడానికి, రైతాంగం పోరాటములను అణచడానికి ఈ పోలీసులను వినియోగిస్తున్నారే గాని శాంతి భద్రతలను కాపాడడానికి కాదు. రెండు సంవత్సరాలనుంచి ఈ శాసన సభ ఆరంభమైనప్పటినుంచి చూస్తున్నాము. శాసనసభ నలువైపుల పోలీసులుంటారు. ఆవరణ మధ్య సి. ఐ. డి. లుంటారు. ఏ శాసన సభ్యుడు ఎవరితో ఏమి మాట్లాడేది నోట్ చేస్తారు. ప్రజలు కష్టసుఖాలు చెప్పుకునేందుకు ఇక్కడకు రాదలచుకుంటే ఈ శాసనసభ చుట్టూ ౪౦౦ గజాల దూరంలోగా ఎవరూ రాకూడదని హోం మినిస్టరు ఆర్డరు వేస్తారు. విద్యార్థులు, కార్మికులు, రైతులు సాగిస్తున్న పోరాటాలు అణచేందుకు పోలీసుపై కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం కోటానకోట్ల సొమ్ము ఖర్చు చేస్తున్నారు. రజాకార్ల కాలంలోవలె ప్రజలు పోలీసులంటే భయపడుతున్నారు. గ్రామాలలో పోలీసులు దొంగతనం, లంజతనం సాకుతో ప్రజలమీద కేసులు పెడుతున్నారు. ఖానూన్ ప్రకారం అరెస్టు చేసిన ౨౪ గంటలలోగా నేరస్థుని కోర్టులో హాజరు పెట్టాలి. అది లేకుండా రోజుల కొలది పోలీసులు కస్టడీలో వుంచి హింసించడం, అనేక బాధలు పెట్టడం చేస్తున్నారు. ఈ బాధలుపడలేక అనేక మంది చనిపోయారు. ఈ విషయం ఈ శాసనసభలో ఎన్నోసార్లు ప్రభుత్వ దృష్టికి తీసుకవచ్చాము. అడ్జర్న్‌మెంటు మోషన్సు తెచ్చాము. హోం మినిస్టరుతో కలిసికొని చెప్పాము. మెమోరాండాలు సమర్పించాము. ఈ కేసుల గురించి ప్రత్యేక విచారణ కొరకు ప్రత్యేక కమీషన్ వేయమని కోరినప్పటికీ, ప్రభుత్వం యింతవరకు కనీసమైన యీ కోర్కెను గుర్తించలేదు. పోలీసులచేత ప్రజలు హింసించబడుచున్నారు. పోలీసులు శాంతి భద్రతలను కాపాడేందుకు వున్నారని కాంగ్రెసు చెప్పే మాటలు ఎవరూ నమ్మడం లేదు. గత రజాకార్ ప్రభుత్వానికి వ్యతిరేకంగా ఆయుధాలు చేతబట్టి పోరాడినవారు పోలీసు యాక్షను తరువాత అరెస్టు గావింప బడ్డారు. వారంతా యీనాటివరకు జైళ్ళలో మ్రగ్గుతున్నారు. నాలుగైదు సంవత్సరాలనుంచి పోలీసులు వారిపై అనేక హత్యకేసులు, లూటీ కేసులు పెట్టారు ఆ శిక్షలు పూర్తిచేసుకొని జైలునుంచి బయటకు వచ్చిన వెంటనే తిరిగి వారిని అరెస్టుచేసి క్రొత్త కేసులు పెడుతున్నారు. పూడూరు మల్లయ్య అను నతడు గత ౫ సంవత్సరముల నుంచి జైలులో వున్నాడు. అతని మీద కేసులు కొట్టివేసినందువలన సెంట్రలు జైలు నుంచి బయటకు రావడంతోనే

క్రొత్త కేసులు కల్పించి పెట్టేందుకు తిరిగి అరెస్టు చేసినట్లు ఇపుడే నాకు రిపోర్టు వచ్చింది. ప్రభుత్వం జైళ్ళశాఖపైన ౨౫ లక్షల, ౮౫ వేల వరకు ఖర్చు పెడుతోంది. కాని ఈ జైళ్ళు నరక కూపాలుగా వుంటున్నాయి. రజాకారు ప్రభుత్వంలో అందరం ఆ జైళ్ళలో వుండి వచ్చిన వారమే. అవి ఏ విధంగా వుంటాయో అందరికీ తెలుసు. ఇప్పుడు కూడా జైళ్ళ పరిపాలనలో మార్పేమీ రాలేదు. ఈ నాడు జైళ్లలో మగ్గుతున్నవారితో శాసన సభ్యులమైన మేము కలసి డిఫెన్సుకు ఏర్పాటు చేయాలంటే హోం మినిస్టరు అనుమతి హోం సెక్రెటరీ అనుమతి తీసుకొని పోవలసియుంటుంది. ఈ నాడు హైదరాబాదు జైళ్ళలో వుండే డిటెన్యూలు, అండర్ ట్రయల్స్ (Under-trials) తో మాట్లాడాలంటే ప్రత్యేక అనుమతిని తీసుకోవాలి. దానికి ప్రత్యేక ఫారముల నింపి ప్రభుత్వ అనుమతి పొందాలి. పోనీ తరువాతైనా వారితో కలసి ప్రత్యేకంగా మాట్లాడనివ్వరు. మధ్య ఇనుప తెర వుంటుంది. సి. ఐ. డి. లుంటారు. డిఫెన్సు విషయమై మాట్లాడడానికి వెళ్ళి నప్పుడు అక్కడ సి. ఐ. డి. లుంటే డిఫెన్సు విషయం ఏ విధంగా మాట్లాడగలము? ఈ విషయం ప్రభుత్వంవారు తీవ్రంగా ఆలోచించాలి. జైళ్లలోవున్నవారిని అక్కడనుంచి కోర్టులకు తీసుకు వెళ్తారు. అప్పుడు కాళ్లకు చేతులకు బేడీలు, సంకెళ్లు వేసి తీసుకు వెళ్తారు. ఇప్పుడు కమ్యూనిస్టు పార్టీ పాలసీలో మార్పు వచ్చిందని తెలుసు. అటువంటప్పుడు కారాగారాలనుంచి కోర్టుకు తీసుకు వెళ్లేటప్పుడు బేడీలు, సంకెళ్లు వేసి తీసుకు వెళ్లడం సహించరాని విషయం. ఈ విషయమై యిక్కడ అనేక సార్లు అసెంబ్లీలో ప్రశ్నలు వేశాము. ఆ విధంగా తీసుకుపోవడం లేదని శుద్ధ అబద్ధం చెప్పారు. ఆరోగ్యము కోల్పోయిన పేషంట్సు, అండర్ ట్రియల్ పేషంట్సును దవాఖానాలందు గొలుసులతో మంచానికి కడుతున్నారంటే అది శుద్ధ అబద్ధమని అసెంబ్లీలో చెప్పారు. ఎన్నోసార్లు మెమోరాండాలు పెట్టాము. ఈ నాటివరకు సెంట్రలు జైలులో జరుగుచున్న వాటిని చెప్పుతాను. బి. నరసింహారెడ్డి, తిరుమలరావు మున్నగు వారిని తక్కిన ఖైదీలనుంచి వేరు చేశారు. ఇతర ఖైదీలతో మాట్లాడేందుకు వీలు లేదు. స్వంత ఖర్చులతో కారాగారములో వున్నవారు అభ్యుదయ సాహిత్యం తెప్పించుకొనే అవకాశం లేదు. రోజుకు ఏడు, ఎనిమిది అణాలు బత్తా యిస్తారు. ఇలాంటి పరిస్థితులున్నప్పుడు రాజప్రముఖ్ శాసన సభాప్రారంభంలో చేసిన ఉపన్యాసంలో ఒక్క డిటెన్యూ కూడా లేడని చెప్పారు. ఈ నాడు రజాకార్లకు వ్యతిరేకంగా పోరాటం జరుపుటచే ప్రజలచే ప్రజానాయకులని గుర్తింప బడ్డవారు ఆరు, ఏడు వందలమంది వుంటారు. వారు రాజకీయఖైదీలు కారని, హత్యలు చేశారని, లూటీలు చేశారని ప్రభుత్వం వ్యాఖ్యానిస్తోంది. ఈ నాడు ట్రెజరీ బెంచెస్ మీద కూర్చొన్న మీరే చెప్పండి. ఉమ్రీబ్యాంకు ఎవరు లూటీ చేశారు? వాళ్లను, నైజాము మీద బాంబులు వేసి శిక్షలు పడ్డ నారాయణరావు గండయ్యలను విడుదల చేశారు. మేము చేత ఆయుధాలు పట్టుకొని రజాకార్లకు వ్యతిరేకంగా పోరాడిన ఫలితంగా కక్షను సాధించుకొనవలయుననే తలంపుతో కేసులు పెట్టి నిర్బంధించి వారు రాజకీయ ఖైదీలు కాదని చెప్పడం జరుగుతున్నది. ఒకప్రక్క నైజాముమీద బాంబులు వేయగా ఉరిశిక్షలు పడ్డవారిని విడుదల చేయడం, యింకొకప్రక్క రజాకార్లకు వ్యతిరేకంగా పోరాడినవారిని రాజకీయ ఖైదీలు కాదని చెప్పి కక్షలు సాధించడం జరుగుతోంది. ఒక్కమాటలో చెప్పాలంటే రజాకార్ ప్రభుత్వం వలెనే ఈ ప్రభుత్వంకూడా అవలంబిస్తోందని చెప్పవచ్చును. ఈ ఖైదీల డిఫెన్సుకు ప్రభుత్వ సహాయంలేదు. తాయఖ్ అలీ, ఖాశిం రజ్వీపైన బీబీనగర్ కేసు [illegible] ఆ ఒక్క కేసుపై ౬౦ లక్షలు ప్రభుత్వం ఖర్చు పెట్టారు. కాని ఈ ఖైదీలకు

ప్రభుత్వము ఏమీ సౌకర్యాలు చేయలేదు. ఒక్కొక్క హత్య కేసుకు ౫౦ రూపాయలు యిస్తుంది. ఖాశిం రజ్వీపైన ౭౦ లక్షలు ఖర్చుపెట్టారని ప్రభుత్వం అంగీకరించింది, పత్రికల్లో చదివాము. కమ్యూనిస్టులకు న్యాయస్థానములో సరైన న్యాయము జరుగుట లేదు. ఒక ఉదాహరణ చెబుతాను. బి. నరసింహారెడ్డి, తిరుమలరావు, దొడ్డ నరసయ్య, లక్ష్మినారాయణ, మేదరమట్ల మట్టయ్య, కృష్ణమూర్తి మున్నగు ౧౧ గురి మీద వారంట్సు వున్నవా ? అని ౧౧-౩-౧౯౫౩న అసెంబ్లీలో ప్రశ్న వేశాము. వారిమీద వారంట్లు కేసులు లేవని హోం మినిస్టరుగారు చెప్పారు. అది ప్రకటించిన మూడవ రోజున, రహస్య జీవితం గడుపుచున్నటు వంటి, చెట్లల్లో, గుట్టలల్లో తిరుగుతూ ఎన్నో కష్టాలకు గురిఅవుతున్నవారు బహిరంగంగా వస్తే వారు హత్యలు చేశారని, లూటీలు చేశారని క్రొత్తగా కేసులు పెట్టి జైలులో పెట్టారు. దానిపైన చీఫ్ మినిస్టరుగారిని, హోం మినిస్టరు గారిని మాపార్టీనాయకులు కలిశారు. మెమో రాండము లిచ్చారు. దానిపై అలోచించి విడుదల చేస్తామని, ఏలాంటి షరతులు లేకుండా విడుదల చేస్తామని హామీలు యిచ్చి యింతవరకు విడుదల చేయలేదు.

అదే విధంగా కమ్యూనిస్టులు ఆయుధాలు వప్పగిస్తే బేషరతుగా కేసులు ఎత్తివేసి, వారంట్సు ఉపసంహరించుకుంటామని చీఫ్ మినిస్టరుగారు వాగ్దానం చేశారు. ఆ ప్రకారం మావద్దనున్న ఆయుధాలు వప్పగించాము. ఒకటిన్నర సంవత్సరాలయినది. ఈ ప్రభుత్వం పాలసీలో మార్పు వచ్చిందని ఉద్దేశపడి ఆయుధాలు వప్పగించాము. కాని మాసదుద్దేశం ప్రభుత్వం దృష్టిలో పెట్టుకొనలేదు. లేనిపోని క్రొత్తక్రొత్త కేసులు కల్పించి మాపైన మోపి జైళ్ళలో పెట్టి ప్రతి పక్షాన్ని అణచాలని ప్రజాపోరాటాన్ని అణచాలని ఈ ప్రభుత్వం కంకణం కట్టుకొన్నదని చెబుతున్నాను.

ఈ నాడు జైలు శాఖపై ౨౫,౮౭,౦౦౦ ఖర్చు పెట్టుచున్నది. కారాగారాలలో శిక్షలు అనుభవిస్తున్న రాజకీయ ఖైదీలను గాని రాజకీయేతర ఖైదీలనుగాని విడుదల చేయాలని కోరు తున్నాను.

شری سری ھری (کنوٹ) - آنریبل ممبر ایسے کیسس کا حوالہ دے رہے ھیں جو عدالت میں زیر دوران ھیں - رول نمبر ۴۳ کلاز بی کی رو سے ایسے کیسس کا حوالہ اسپیچ میں نہیں دیا جاسکتا -

شری عبدالرحمن (ملک پیٹھ) - کسی ایسے مقدمہ کا انہوں نے حوالہ نہیں دیا ھے جو عدالت میں فی الوقت زیر دوران ھو - آنریبل ممبر کو یہ غلط فہمی شاید اسلئے ھورھی ھے کہ وہ تلنگی نہیں سمجھ سکے یا محض اعتراض کی خاطر یہ اعتراض کیا گیا ھے -

شری سنگی ریڈی وینکٹ ریڈی (نستلا پور) - گذشتہ سال جو مقدمات چل رہے تھے اس کے بارے میں یاد دلا رھے ھیں -

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - جو مقدمات عدالت میں چل رہے ھیں انکو ریفر (Refer) نہ کیا جائے -

శ్రీ అరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి : గౌరవ సభ్యులు ఏవో కోర్టులో కేసులు నడుస్తున్నాయని వాటి విషయం మాట్లాడకూడదని అభ్యంతరం చెబుతున్నారు. నేను మాట్లాడే విషయాలు వారు అర్థము చేసుకొనుట లేదని తెలుస్తోంది.

ఈ విధంగా హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో వున్న వేలకు వేల రాజకీయ, రాజకీయేతర ఖైదీ లందరినీ విడుదల చేసిన ప్రభుత్వ ఖజానాపై ౨౫ లక్షల, ౮౫ వేల భారం తగ్గుతుందని చెప్పగలను. ప్రక్కనవున్న ఆంధ్ర రాష్ట్రము ఏర్పడగానే ఆంధ్ర ప్రభుత్వం వివిధ జైళ్ళలో వుండే ౬, ౭ వేల మంది ఖైదీలనందరినీ విడుదల చేశారు. ఇక్కడ రజాకార్ ప్రభుత్వం పోయి ప్రజాప్రభుత్వం వచ్చినా ఆ విధంగా ఎవరినీ విడుదల చేయలేదు. రాజకీయపక్షాలను సంబంధించని వారినికూడా ఆంధ్ర ప్రభుత్వం వదిలేసింది. ఆ విధంగా యిక్కడ కూడా చేస్తే ఖజానాపై భారము తగ్గుతుందని మనవి చేస్తున్నాను.

ఇంకొక విషయమేమంటే హైదరాబాదు రాష్ట్రములో వున్న ౨౨ వేల గ్రామాల్లోని సేత్‌సేందీలు గ్రామంలో ౨౪ గంటలూ పనిచేయాలి. ప్రభుత్వాధికారులకు, ఉద్యోగులకు రాత్రింబవళ్లు సేవ చేయాలికాని ప్రతీ వొక్క సేత్‌సేందికి ప్రభుత్వం మాసానికి మూడురూపాయలు మాత్రం జీతం యిస్తుంది. ఈ మూడు రూపాయలతో వాళ్ల జీవితం ఏవిధంగా గడపాలో ఆలోచించండి. ఈనాడు ఈ బూర్గుల రామకృష్ణారావు ప్రభుత్వం ఈ సేతు సేందీల విషయం ఏమీ ఆలోచించడం లేదు. రాజప్రముఖుకు కోటిరూపాయలు ఇంకా జాగీదార్లకు లక్షలకొలది రూపాయలు యివ్వడానికి అలా యివ్వకున్న ఎడల వారు గుండె పగిలి చస్తారని ఆలోచిస్తూ ఆ సేత్‌సేందీల మీద ఏమీ దయాదాక్షిణ్యాలు చూపుట లేదు.

ఈ నాడు హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో వున్న పటేలు పట్వారీల మౌరూసీ పద్ధతిని రద్దు చేయాలని ఆందోళన వున్నది. ఈ పటేలు పట్వారీల మౌరూసీ పద్ధతి రద్దుచేసి వారినికూడా ప్రభుత్వోద్యోగులుగా గుర్తించి మాసానికి ౬౦, ౭౦ రూపాయలు జీతం యిచ్చి, గిర్దావర్ల మొస్తరుగా ట్రాన్స్‌ఫర్ చేయాలని కోరుతున్నాను. ఈ నాడు గ్రామాలలో పటేలుపట్వారీలు ఖాస్రా ఫారములు నింపేటప్పుడు, మాల్‌గుజారీ చేసేటప్పుడు; లెవీ వసూలు చేసేటప్పుడు ప్రజలవద్ద ఎన్నో పేర్లు చెప్పి డబ్బు వసూలు చేసుకుంటున్నారు. కాబట్టి పటేలుపట్వారీ పద్ధతిని రద్దు చేసి, వారికి వేతనాలు యిచ్చి ఆ విధంగా ట్రాన్స్‌ఫర్లుకూడా చేయడం అవసరమని చెబుతున్నాను.

ఇంకోసంగతి; మన హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ఒక తారతమ్యం చూస్తున్నాము. హైదరాబాదు ప్రభుత్వంలో పెద్ద పెద్ద ఉద్యోగులు ఉన్నారు; సెక్రెటరీలు ఉన్నారు; ఐ.జీ.పి.లు ఉన్నారు వీరికి ఒక్కొకరికి మాసానికి వేలకువేలు జీతాలు ఇవ్వడం జరుగుతోంది. రెండు వేల నుంచి మూడు వేల వరకు ఇస్తున్నారు. వారికంటే ఎక్కువ పని కష్టము ఉండే సిపాయిలకు, చప్రాసీలకు 30 రూపాయలు ఇస్తున్నారు. ఈ 30 రూపాయలు జీతం తీసుకొని వారు ఏవిధంగా జీవితం గడుపు తున్నారన్న సంగతి అయినా కాంగ్రెసు ప్రభుత్వము గమనించడం లేదు.

శ్రీమతి సంగం లక్ష్మీబాయి :—మీ ఇంట్లో ఉండే నౌకరుకు ఎంత జీతం ఇస్తున్నారు ?

శ్రీ అరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి :— మా ఇంట్లో నౌకరు లేడండి. మా ఇంట్లో పనిఅంతా మేమే స్వయంగా చేసుకొంటాం. ఇప్పుడు డెప్యూటీ మంత్రిగారు మీ ఇంట్లో నౌకరుకు ఎంత

జీతం ఇస్తున్నారని అంటున్నారు. మా ఇంట్లో ఎంతమంది నౌకర్లు ఉన్నారో, వారికి ఎంత జీతం ఇస్తున్నామో మా ఇళ్లకు వచ్చి చూస్తే తెలుస్తుంది. మేము ఏమీ ఆనందభాగ్య భోగ్యములనుభవించడం లేదు. మాకు గాని, మా పార్టీవారికిగాని, లేదా మా పార్టీ నాయకులకు గాని, లేదా మా పార్టీ పక్షంనుంచి ఎన్నుకోబడ్డ సభ్యులు ఎవరైతే ఉన్నారో వారికి ఎంతమంది నౌకరులు ఉన్నారో వాళ్ల ఇండ్లకు వెళ్లి చూడండి. మా ఇళ్లలో మాకు వచ్చే ఆదాయాన్ని దృష్టిలో ఉంచుకొని స్వంతంగానే పనులు చేసుకొంటాం. మేం కష్టపడి మా పనులు స్వయంగా చేసుకొంటాం. ఇప్పుడు, సెక్రెటరీలకు, పెద్ద ఆఫీసర్సుకు ఉద్యోగులకు రెండువేలనుంచి మూడు వేల వరకు వేతనాలు ఇస్తున్నారు. ఇప్పుడు మనం శాసనసభలో ఉన్నాం. ఇక్కడ స్పీకరుగారు ఉన్నారు. మంత్రులు ఉన్నారు. ఉపమంత్రులున్నారు. వారికి ఎంతెంత వేతనాలు ఇస్తున్నారో ఇక్కడ జరిగే సమావేశం ఆరంభమైన మొదటి నుండి చివరవరకు చేతులు కట్టుకొని నిలబడి పని చేస్తున్న చప్రాసీలకు ఎంత జీతం ఇస్తున్నారో ఆలోచించండి. క్రింది ఉద్యోగులకు చప్రాసీలకు 30 రూ. ఇవ్వడం పై ఉద్యోగులకు 3 వేల రూపాయలు ఇవ్వడం, యీ తారతమ్యం సహించ రానిది. ఒక చప్రాసీ బీడిముక్కకు ఆశపడి చిన్న తప్పు చేస్తే వాడిని బర్తరఫ్ చేస్తున్నారు. పెద్దపెద్ద ఉద్యోగులకు రెండు వేలనుంచి మూడు వేలవరకు ఇస్తున్న వేతనాలను తగ్గించవలసి ఉన్నది. ఇప్పుడు మంత్రులు తీసుకొంటున్నటువంటి వేలకువేలు జీతాలను తగ్గించవలసి ఉన్నదని ఒక్క మాటలో మనవి చేస్తున్నాను.

అదేవిధంగా భాషాప్రయుక్తరాష్ట్రాలు గురించి రాజప్రముఖ్ తన ఉపన్యాసములో ఏమాత్రం చెప్పలేదు. బడ్జెటు స్పీచ్ సందర్భములో కూడా, బడ్జెటును ప్రవేశపెడుతూ ఫైనాన్సు మినిస్టర్ గాని దానిని గురించి చెప్పలేదు. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో తెలంగాణాలో ఒక కోటికి పైన తెలుగు ప్రజలు ఉన్నారు. అల్లాగే ౪, ౫ జిల్లాలలో మహారాష్ట్రులు, 3 జిల్లాలలో కర్ణాటకులు ఉన్నారు. వీరందరూ హైదరాబాదు స్టేటులో ఉన్నారు. ఇదంతా కలగూరగంపలాగా ఉంది ఈ విధంగా విశాలాంధ్ర, సంయుక్తమహారాష్ట్ర, ఐక్యకర్ణాటక ఏర్పడడం అవసరమని ప్రతి పక్షాలవారే కాకుండా కాంగ్రెసు పక్షంవారు కూడా ఎలుగెత్తి చాటుతున్నారు. విశాలాంధ్ర సంయుక్తమహారాష్ట్ర, ఐక్యకర్ణాటక వద్దనే వారు ఎవరూలేరు. అవి వద్దని ఏ మంత్రి అనడం లేదు. భాషారాష్ట్రాలకు వ్యతిరేకంగా మాట్లాడేందుకు ఏ మంత్రికీ ధమ్ములు లేవు. గత ౩౫ సంవత్సరాలనుండి కాంగ్రెసు పార్టీలో ఉన్నప్పుడు అనేక సిద్ధాంతాలను వెల్లడించాం. తీర్మానాలు చేశాం. అయినప్పటికి భాషారాష్ట్రాల గురించి-ప్రభుత్వముయొక్క వైఖరి ఏమిటో ప్రభుత్వంయొక్క పాలసీ ఏమిటో రాజప్రముఖ్ యొక్క ఉపన్యాసంలోగాని, బడ్జెటు ఉపన్యాసంలో గాని చెప్పలేదు కాబట్టి ప్రభుత్వముయొక్క పాలసీని చెప్పవలసిఉన్నదని భావిస్తున్నాను. ఆంధ్ర రాష్ట్రం దానంతట అదే రాలేదు. ఆంధ్ర రాష్ట్రాన్ని అచ్చటి ప్రజలు వీరోచిత పోరాటాల ద్వారా సాధించుకొన్నారు. ప్రజలు పోరాడిన పోరాటాల ఫలితంగా కేంద్రప్రభుత్వం లొంగి రావలసివచ్చింది. ప్రెజరిబెంచెస్‌లో ఉన్న కాంగ్రెసువారు "హై పవర్ కమీషన్ వేశారు; వారు విశాలాంధ్ర, సంయుక్తమహారాష్ట్ర, ఐక్యకర్ణాటక ఏర్పాటు చేస్తారు;" అని అంటున్నారు. ఈ రాష్ట్రంలో ఉన్నటువంటి మహారాష్ట్రులు, కర్ణాటకులు, తెలుగువారు అందరూ కూడా ఎడతెగని పోరాటాలు చేస్తేనేగాని యీ భాషారాష్ట్రాలు ఏర్పడవు. హైదరా బాదు పట్టణమును ఇండిపెండెంటు పట్టణము చేయాలని, కమీషనర్ పట్టణము చేయాలని

కొంతమంది అభిప్రాయము తెల్పుతున్నారు. హైదరాబాదు పట్టణమును కమీషనర్ పట్టణము చేయాలనడం, విశాలాంధ్రకు నిజాం రాజప్రముఖ్‌గా ఉండాలనడం తెలంగాణా ప్రజలుగాని ఆంధ్రప్రజలుగాని ఏ మాత్రం సహించరని ఒక మాటలో చెబుతున్నాము. ప్రజలు తమ యొక్క ఐక్యపోరాటాల ద్వారా భాషారాష్ట్రాలను నిర్మించుకొంటారు. ఈ భాషారాష్ట్రాలను గురించి యీబడ్జెటు ఉపన్యాసములో ఎక్కడా కనపడటంలేదు. ప్రభుత్వం తన పాలసీని ప్రకటించవలసి యున్నది.

అదే విధంగా, నందికొండ ప్రాజెక్టు గురించి రాజప్రముఖ్ ఉపన్యాసంలో ఎక్కడాలేదు. ఈ ప్రాజెక్టు క్రింద ౬౦ లక్షల ఎకరాలు సేద్యం అవుతుందని ఇంజినీయర్లు నిపుణులు తెలుపుతున్నారు. ౬౦ లక్షల ఎకరాలు భూమి సేద్యం అయి, అందులో పంట పండితే, అ పంటహైదరాబాదు స్టేటులో ఉండే అందరికీ సరిపోతుందని చెబుతున్నాను. మన దేశంలో బంగారం పండే భూములు ఉన్నాయి. పెద్దపెద్ద నదులు ఉన్నాయి. వీటిని అరికడితే దేశంలో ఎంతో పంట పండించగల్గుతాం. బంగారం పండించే భూమి ఉన్నప్పుడు, కృష్ణా గోదావరి మొదలైన పెద్దపెద్ద నదులు ఉన్నప్పుడు కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం అమెరికా వైపు అహారధాన్యాల కోసం చేతులు చాపుతున్నారు. అమెరికానుంచి గోధుమలు తెప్పిస్తువారు. ఈ నందికొండ ప్రాజెక్టు ప్రాముఖ్యతను యీ ప్రభుత్వం గుర్తించడంలేదు. ఈ బడ్జెటులో దానిని చేర్చి, దానియొక్క నిర్మాణానికి వెంటనే పూనుకోవాలని కోరుతున్నాను. గ్రామాలలో అనేక కుంటలున్నాయి. చెరువులున్నాయి. అనేక చెరువులకు కుంటలకు గండ్లు పడి ఉన్నాయి. ఈ కుంటలను చెరువులను సరియైన మరమ్మతులు చేయించవలసివుంది. ఇందుకు ప్రజలయొక్క సహకారం ఉందని చెబుతున్నాను. ఇంతకుముందు భువనగిరి సభ్యులు మాట్లాడుతూ ప్రజల యొక్క సహకారం వుందని చెబుతున్నారు. చెరువులను, కుంటలను ప్రజలయొక్క సహకారంతో మరమ్మతులు చేయించగల్గుతాము. రజాకారు ప్రభుత్వపుకాలంలో రజాకార్లకు వ్యతిరేకంగా పోరాడుతూ ప్రజల సహకారంతో చెరువులను, కుంటలను మరమ్మతులు చేయించాం. చెరువులకు గట్లు వేయించాం. తూములు పూడ్పించాం. ప్రజలయొక్క సహకారంతో యీ పనులు చేయగలమని చెప్పటానికి యీ ఉదాహరణలు ఇస్తున్నాను. ప్రభుత్వం డబ్బులేదని అంటున్నారు నందికొండ ప్రాజెక్టు కట్టాలన్నా, రోడ్లు వేయించాలన్నా, టపాకానాలు ఎక్కువచేయించాలన్నా డబ్బులేదని దివాళాకోరు ప్రభుత్వం చెబుతోంది. డబ్బులేదని మాకూతెలుసు. కాని డబ్బును రాబట్టే విధానాలు ఉన్నాయి. నైజాం దగ్గర కోట్లకొలది డబ్బు మూలుగుతోంది. ఆ డబ్బును స్వాధీనపర్చుకొనే ధైర్యం లేకుండాఉంటే, కనీసం రాజప్రముఖ్ వద్దనుంచి ఆ డబ్బును అప్పుగానైనా తీసుకోవచ్చును. ఈ ప్రాజెక్టుల నిర్మాణం చేయవచ్చును. ఈ చేతగానిప్రభుత్వం డబ్బులేదని అంటున్నదే గాని, డబ్బు వచ్చేందుకు సరియైన మార్గములు ఆలోచించడం లేదు మేముచెప్పే మాటలన్నింటిని ప్రభుత్వపక్షం కాదనడం, ప్రతిపక్షంవారు ఏది చెబితేఅది వారు వ్యతిరేకించడం ప్రభుత్వపక్షంవారు నేర్చుకొన్నారు. అది వారికి అలవాటైపోయింది. మా సహకారం లేదని అంటున్నారు. మేము ప్రజలకు మేలు చేసేందుకు అన్నివిధాలా సహకరించడానికి సిద్ధంగాఉన్నాం. ఆహార, ఆర్థిక సమస్యలను పరిష్కరించడానికి, రాష్ట్రంలోని చెరువులు కుంటలు మరమ్మతులు చేయించడానికి మేం సిద్ధంగానే ఉన్నాం. అదే దృష్టిలోప్రశ్నలు వేస్తున్నాం. సప్లయి కమిటీలో, ప్లానింగ్ కమిటీలో, ఎడ్వైజరీ కమిటీలో మెంబర్లు ఎవరిని

ప్రశ్నలు అడిగితే ప్రభుత్వం కప్పిపుచ్చటానికి ప్రయత్నం చేస్తోంది. ౧౫ జిల్లాలలో సప్లయి కమిటీలు ఉన్నాయి. ఎడ్వైజరీ కమిటీలు ఉన్నాయి. అఫిషియల్, నాన్‌అఫీషియల్ మెంబర్సు ఉన్నారు ఇటువంటి కమిటీలు ఉన్నాయి.

श्री रतनलाल कोटेचा (पाटोदा) :—सप्लाय कमेटी के मेंबरों से यहां क्या ताल्लुक है यह मेरी समझ में नही आता ।

شری جی - راجہ رام (آرمور) - پہلے آنریبل ممبر تلگو سمجھیں -

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి : కాబట్టి మేము ప్రభుత్వముతో సహాకరించడానికి సిద్ధంగానే ఉన్నాం. మీరు భూసంస్కరణల బిల్లు తీసుకవచ్చినపుడు మేము చర్చించాం. మేము ఆ చర్చలలో పాల్గొన్నాం. ఎక్కడైతే మేము ఏకీభవించడానికి ఇష్టపడలేదో అప్పుడు వాకౌట్ చేశాం, చట్టములోగల పాజిటివ్ సైడును తీసికొని సహాకరించి పనిచేస్తాము. ఆ దృష్టితోనే ల్యాండ్ కమీషన్‌కు మా పి. డి. ఎఫ్ పక్షం తరఫున అభ్యర్థిని నిలబెట్టాం. ఇప్పుడు అధికారంలో ఉన్న పార్టీ ఏవిధంగా మా అభ్యర్థిని ఓడించడానికి ప్రయత్నంచేసింది, ఏ విధంగా కుట్ర పన్నింది చెప్పనక్కరలేదు. ల్యాండు కమీషన్ ఏర్పడ్డది. ప్రభుత్వంవారు నిజంగా ప్రతిపక్షాల వారి సలహాలను కోరుతున్నట్లయితే ఎప్పుడైనా యీ ౧౬ మంది మంత్రులలో ఒకరైనా మమ్మల్ని పిల్చి విషయాలు మాట్లాడారా? అసెంబ్లీ, ఫ్లోర్ మీదకు వచ్చి స్టేజీ మీదకు వచ్చి " మీరు సహాకరించడంలేదు; మీరు సహాకరించడంలేదు " అని ఊతపదాలు వాడుతున్నారు. ఈ విధంగా చెప్పడం సరైందికాదు. ఏ విషయంలో మీతో సహాకరిస్తున్నామో, ఏ విషయంలో సహాకరించలేక పోతున్నామో మీకూ తెలుసు. మేము సహాకరించాలను కొన్నప్పుడు సహాకరిస్తూనే వున్నాము. మేము సహాకరించడములేదని రాజప్రముఖ్ కూడా అంటున్నారు. అన్నిపార్టీలవారు సహాకరించి పని చేయవలసిన అవసరం వచ్చింది. యుద్ధ ప్రమాదం మన దేశానికి ఏర్పడింది. యు. యస్. పాకిస్తాన్ సైనికసంధితో మన దేశానికి యుద్ధ ప్రమాదం ఏర్పడింది. ఈ యుద్ధ ప్రమాదాన్ని ఎదుర్కోడానికి, అవసరమైతే అయుధాలు పట్టుకొని అమెరికాకు వ్యతిరేకంగా యుద్ధరంగంలో నిలబడి పోరాడుతామని మా పార్టీ ప్రకటించింది. ఆంగ్లో అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదులతో మన ప్రభుత్వం ఆర్థిక సంబంధాలు పెట్టుకొంది. మన దేశం ఆహారధాన్యాలకు, గోధుమల కోసం, బియ్యం కోసం, అమెరికావైపు చూస్తున్నాం. చివరకు, యుద్ధపరికరాలైన ఆయుధాలకు, సైనికులకు కావలసిన తుపాకులకు కూడా అమెరికా వైపే చూస్తున్నాం. ఈ విధంగా మనం అన్ని రంగాల్లో అమెరికాతో సంబంధాలు పెట్టుకొంటే, అమెరికా యుద్ధం ప్రకటిస్తే మన దేశ రక్షణకు కావలసిన ఆయుధాలు యుద్ధసామగ్రి ఎక్కడనుంచివస్తాయ్? మన దేశ స్వాతంత్ర్యాన్ని రక్షించుకోవలసిన బాధ్యత మనపై ఉంది. మనదేశాన్ని యుద్ధంనుంచి రక్షించుకోవాలంటే మనదేశం స్వయంపోషకం కలిగిఉండాలి. దేశ రక్షణ విషయంలో ఆయుధాలు గాని, తుపాకులుగాని, అమ్యునిషను లో గాని మనం స్వయంపోషకం కలిగిఉండాలి. మనదేశాన్ని సైనికంగా స్వయంపోషకం చేసుకొనేందుకు, ఆహారవిషయంలో స్వయంపోషకం చేసుకొనేందుకు దేశాన్ని పారిశ్రామికంగా అభివృద్ధి చేయడానికి ప్రతిపక్షం అన్ని విధాలా తోడ్పడుతామని ఘంటాపథంగాచెబుతున్నాను.

श्री रूखमाजी घोंडीबा पाटिल (आष्टी) :—आनरेबल मेंबर अगर पूरे दिन बोलें तो हमें उजर नहीं है लेकिन वे कम से कम हिंदी में बोलें तो अच्छा होगा यही मेरी अपील है ।

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి :—అయితే, మధ్య మధ్య మిత్రులు లేచి మాట్లాడుతున్నారు. నేను మాట్లాడేభాష కొందరి సభ్యులకు తెలియక పోవచ్చును. నేను హిందీలోగాని ఉర్దూలోగాని మాట్లాడితే నా భావాలను పూర్తిగా తెలియజెప్ప లేను కనుక నా భావాలను స్పష్టంగా తెలియజేసేందుకు తెలుగులోనే మాట్లాడుతాను. ఈ నాడు అనేక విషయాలు చూస్తున్నాము. కాశ్మీర్‌లో స్వాతంత్ర్య పోరాటంలో నెహ్రూగారికి కుడిభుజంగా నిలబడి పోరాడి పేరుగాంచిన షేక్‌అబ్దుల్లాను ఏమిచేశారో చూశాము. ఆంగ్లో అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదులు ఆ షేక్‌అబ్దుల్లాను బుట్టలో వేసుకున్నారు. ఇరాన్‌లో సాదిఖ్ ప్రభుత్వాన్ని కూలద్రోశారు. అరేబియన్‌దేశాలందు అనేక కుట్రలు పన్నబడుచున్నవి. ఆంగ్లో అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదులు ఏ విధంగా కుట్రలు పన్నుతున్నారో, యీ ప్రభుత్వము, దేశంలోని అన్నిపార్టీలు వెయ్యి కండ్లతో చూడవలసి యున్నది. అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదుల ఏజెంట్లు హైదరాబాదు స్టేటులో లేరని అంటే పొరపాటు పడుతున్నారు అని చెప్పక తప్పదు. కాంగ్రెసు పార్టీవారు, ప్రజలు అందరు వారి కుట్రలను వెయ్యి కళ్ళతో కనిపెట్టి చూడటం అవసరమని మనవి చేస్తున్నాను.

౫౪–౫౫ సంవత్సరమునకు ప్రవేశ పెట్టబడిన బడ్జెటును చూస్తే, అది ప్రజల మేలును దృష్టిలో పెట్టుకొని తయారు చేసిన బడ్జెటు కాదని తెలుస్తుంది. హైదరాబాదులో వుండే పెద్ద పెద్ద జమీందార్లయొక్క జాగీర్దార్లయొక్క ప్రయోజనాలను దృష్టిలో వుంచుకొని వారి ప్రయోజనాలను కాపాడటానికి కంకణం కట్టుకొని వారికి మేలుచేసే దృక్పథంతో వారి ప్రయోజనాలను కాపాడే దృక్పథంతో అటువంటి మెదడుతో ఆలోచించి తయారు చేసిన బడ్జెటు అని చెబుతున్నాను. ఈ బడ్జెట్టు జాగీర్దారీ, జమీందారీ బడ్జెటని ఒక మాటలో చెబుతున్నాను. ఇది ప్రజల మేలును ప్రజల యొక్క ఆర్థికపరిస్థితి దృష్టిలో వుంచుకొని చేసినది కాదు. ఈ బడ్జెటు ప్రజలను దృష్టిలో వుంచుకొని తయారుచేసిందా అని ఆలోచిస్తే యీ ప్రభుత్వములోని బూర్గులవారు రంగారెడ్డిగారు ఎవరికి ప్రాతినిధ్యం వహిస్తున్నారో చెప్పనక్కరలేదు. జమీందార్లకు జాగీర్దార్లకు ప్రాతినిధ్యం వహించి వారిని కాపాడటానికి కంకణం కట్టుకొన్న బూర్గుల ప్రభుత్వము తయారు చేసిన యీ బడ్జెటును అంగీకరించడానికి మేము సిద్ధంగా లేము. రజాకార్లు ప్రభుత్వం స్థానంలో యీ ప్రభుత్వం వచ్చింది. ఆ రజాకార్ల ప్రభుత్వం యీ ప్రభుత్వానికి, వీరు అధికారానికి వచ్చినప్పుడు ౨౦ కోట్ల రిజర్వు ఫండును అప్పగించారు. ఈ ప్రభుత్వం గత ౬, ౭ సంవత్సరాలనుంచి పరిపాలన చేస్తూ వారిచ్చిన రిజర్వు ఫండునంతా హరింపజేసి ఇప్పటికి ౬౪ కోట్లు అప్పులున్నాయని చెబుతున్నారు. ఇంకా ఈ ప్రభుత్వం ఒక సంవత్సరం ఉండవచ్చు; లేదా రెండు సంవత్సరాలు ఉండవచ్చు. ఈ ప్రభుత్వం నిలబడటానికి డెప్యూటీ మంత్రులనే కాకుండా ఇంకా ఎక్కువ పార్లమెంటరీ సెక్రెటరీలను కూడా నియమించుకోవచ్చు. ఏమైనా కొద్ది రోజులలోనే యీ ప్రభుత్వం గద్దెనుంచి దిగక తప్పదు. ఈ ప్రభుత్వం గద్దెనుండి దిగినప్పుడు అప్పుడువచ్చే నూతన ప్రభుత్వానికి ౨౦ కోట్లు అప్పు అప్పగిస్తుందని చెబుతున్నాను. వీరి స్థానంలో వచ్చే క్రొత్త ప్రభుత్వానికి ౨౦ కోట్ల రూపాయలు అప్పు అప్పగిస్తే ఆ ప్రభుత్వము యీ డబ్బును గురించి మీ దగ్గర నుండి సమాధానం [illegible] చెబుతున్నాను. మమ్మల్ని అడిగేవారెవరని అనుకొంటున్నారు. కాబట్టి వీరు

ఈ బడ్జెటును తిరిగి బాగా ఆలోచించి, ఈ బడ్జెటులో ప్రధానమైన మార్పులు చేసి, ప్రతిపక్ష పక్షాలు సూచించిన సూచనలను దృష్టిలో వుంచుకొని ప్రజల మేలుకొరకు తిరిగి నూతనంగా బడ్జెటును తయారు చేస్తేనే యీ ప్రభుత్వానికి పుట్టగతులుంటాయి. మీరు ఇంకా ఎక్కువ రోజులు అధికారంలో ఉండే వాక్కు లేదు "మేం గాంధిగారి వారసులము మేం రామరాజ్యం ఏలుతున్నాం"—అని ఎంత అనుకొన్నా మీరు త్వరలోనే ప్రభుత్వ గద్దెనుండి దిగక తప్పదు. ఇప్పుడు [illegible] ఎక్కువ ఖర్చు చేయుచున్నారు. జాగిర్దార్లకు [illegible] నష్టపరిహారం [illegible] చేస్తున్నారు. [illegible] ప్రతిపక్ష [illegible] కారంతో, [illegible] తిరిగి నూతనంగా బడ్జెటును తయారుచేసి అందరి అంగీకారముతో బడ్జెటును [illegible] పెడితేనే మీకు పుట్టగతులుంటాయి;—మా పార్టీ [illegible] టానికి పిలుపు [illegible] కట్–మోషన్స్ ప్రవేశపెట్టే సందర్భంలో తెలియజేస్తాను. [illegible] కాబట్టి [illegible] ముగిస్తున్నాను. [illegible] తయారు చేసి అందరి ఆమోదమును అందరి అంగీకారమును పొందులాగని ఆశిస్తూ ముగిస్తున్నాను.

Shri V. B. Raju (Secunderabad-General) : Mr. Speaker, Sir, the hon. Members from the opposite have expressed certain grave apprehensions about the very solvency of the State as it obtains. I have been trying to see whether they would propose before it is very late any concrete and tangible proposals which might be considered by the Government, but I could not be enlightened in that direction. As has already been stated by one of the hon. Members on this side, it would be better if the House lays down certain conventions in dealing with certain specific matters in this House. The two important matters for discussion in this House in the last fortnight were: (1) the Rajpramukh's address, *i.e.* the Government's policy statement and (2) the presentation of the Budget, which is a financial statement. It will be very profitable to the Members of this House if we confine our political views and policy matters for discussion on the Rajpramukh's address and deal with matters relating to economies, finance and administration at the time of discussion on Budget. Otherwise, we will be irritating and taxing the patience of the hon. Members who sit here and happen to hear the same old story. Therefore, I very respectfully and humbly submit that the stature of this House must be raised even from the intellectual point of view.

Coming to the technical side of the Budget it can be divided into three parts : (1)the Consolidated Fund, (2) the Contingency Fund,and (3) the Public Account.The vote of this House will be demanded on the expenditure which will

be charged to or which will be met from the Consolidated Fund. We will not be asked to say anything on the Public Account. But it is very necessary for us to take all these three into account, so that we can have a very correct picture of the finances of the State–not only of the finances directly concerned with the State, but also finances concerning other sphere.

A close analysis of the Budget will reveal that in these three years about 13,24,00,000 have been taken out from our cash balances. We can say that this has been due to fall in collection of revenuesor due to increase in other expenditure. Whatever it may be, our balances have been expended to the extent of Rs. 13 crores and odd. If we turn the pages of the Memorandum we find that about Rs. 14 crores of cash balances were handed over (or brought forward), *i.e.* the opening balance in 1952-53 was about Rs. 14 crores. But we are informed that there will be a closing balance of Rs. 225 lakhs at the end of this year. From 14 crores to 225 lakhs. That is the downward trend of the graph of the cash balance. But I would like to know from Government whether this is true. In my calculation I found that this cash balance will be reduced to an effective cash balance of–1.21. I may be questioned 'how'. The hon. Finance Minister said, Rs.150 lakhs, would be necessary to keep as a deposit in the Reserve Bank towards facilities for small coins. I have not found that item in any of these accounts affecting our cash balance.

In the speech of the hon. Finance Minister it is clearly said that a crore and fifty lakhs have to be arranged to be deposited in the Reserve Bank of India. If I am mistaken, I may be corrected later on. If it is true that it has not been shown here, it may be taken it will affect our cash balances. As it has been already admitted out of this a crore and 97 lakhs were held up in London. I am therefore not pessimistic or I am not discouraged in the matter of the solvency of the State but I am a bit worried about the cash balances. What we should be most concerned with is about the ways and means position.

One of the hon. Members from the Opposition has complained about the deficit character of the budget. I have to congratulate the hon. Minister for Finance for having closed the revenue account with only 1 crore 6 lakhs deficit. All the while, I was expecting the Hyderabad State Budget should have at least a deficit of 3 to 4

crores. There should be nothing surprising in our budgets everywhere as they have been linked up to the Five-Year Plan. When once we accept the Five-Year Plan and when once when we have committed that we expend about 50 crores of rupees—that is what I take to be the size of our Five-Year Plan; it is not 40 crores–our budget must be so framed to meet the plan. So there won't be any surprises in any budget excepting the taxation proposals and I complain why the hon. Finance Minister did not take to more taxation. This is a charge against the Government. The Members are not going to be satisfied with the orthodox type of a surplus budget: what the Members demand is whether the expenditure year to year is in conformity with the proposals of the plan; and we have not had any statement which can give us a picture of the Five-Year Plan as it has been implemented in these three years—what the expenditure in these past 3 years has been, what the proposals were and what the gap is. In my opinion, it might be missing by a margin of about 7 to 8 crores of rupees easily. I would like to put a straight question whether those 7 to 8 crores of rupees are going to be expended in the year 1955-56. Even though we might find money the administrative machinery will not be able to expend so much money. Therefore, it is better that the Government would inform the House where we stand in respect of the Plan.

Certain States, particularly in the South, have been showing great deficits in their budgets. For instance, Andhra has shown 2 crores 99 lakhs deficit, in the revenue account; Mysore has shown 3 crores 10 lakhs deficit; and U.P. has shown 3.91 crores deficit. West Bengal has shown 12.43 crores deficit. So we should not be surprised or carried away if there is any deficit. So I must conclude from this that if there has not been more deficit we have been hesitating to spend more; and even in the matter of taxation I do not think we have reached the peak as many hon. Members complain. I ask them to examine the budget receipts. The revenues from the Hyderabad State as collected by the State Government are only 23 crores. In 1952 it is 23 crores and in the year 1954-55 also it is 23 crores. If we have seen any increase in the figure it is because of Central Grants. The Central grants have been in the year 1952-53, for which we have got actuals, is 3.81 crores–a few lakhs this side or that; and the Central grants in 1954-55 as expected

would be 4.98 crores. So if there has been any increase in the receipts compared to 1952-53 it is because of central assistance but not of any greater realisations from our people. So the sum total of the revenue collections either through taxes or commercial income in whatever shape it is, is only 23 crores. So the complaint that we have been taxing heavily and that we have reached a saturation point may not be correct. If that is the case, can we carry out the estimated expenditure with this income? Already, one hon. Member from the Opposition–I think the hon. Leader of the Opposition—has complained about the non-realisation from the agricultural income-tax. It is a very pertinent remark and I am sure the Government would take note and reduce the limit still lower. Instead of Rs. 10,000 they should make it Rs. 5,000. They should see that proper collections are made.

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ (چنا کونڈ ور) ۔ مجھے ایک چیز کہنا ھے۔ فینانشل کمیشن کو جو میمورنڈم پیش کیا گیاتھا اسمیں خود حکومت حیدرآباد نے مان لیا ھے کہ ساچو ریشن پوائنٹ (Saturation point) پھونچ گیا ھے میں سمجھتا ھوں کہ شائد آپ اسوقت منسٹر نہیں تھے۔

Shri V. B. Raju : There are other ways of taxation. What I mean is that the capacity to pay tax is not a static matter. As prosperity grows–we should admit that it is growing gradually though not very rapidly-the capacityto pay tax also grows. We have to find new avenues. I have not said that we have to tax the cultivator, just now just thatis to say, any further assessment of the land revenue. Wherever there is surplus wherever there is capacity to pay, we have to tax; otherwise, we cannot depend upon mere borrowing. If we analyse the budget we find that the amount towards debt charges and other liabilities is taking a major slice. Therefore, let us be not very sentimental when we speak about finances. There is neither party nor policy nor sentiment when we speak about rupees, annas and pies. When we want money, we must find money. I do appreciate when it is said that the Nizam should be approached. But do not take it that the Nizam has not beenapproached. He had been sounded in all possible manners. Do not think that the Congress party is so dumb or is so hard-hearted as not to respond to the remarks and appeals of the Opposition. We too, in our own way, have been bringing pressure on the Government and the

result is the reduction of 25 lakhs of rupees in the Sarf-e-khas compensation. As a matter of fact, we refused to vote; it might not have come to the notice of the opposition as it is a party matter. I do appreciate that suggestion but mere appreciation is no good. The Rajpramukh or the Nizam must feel the necessity; and he must be made to feel it. We have to find a way, a method and let us try. But apart from that, I would say that we have got to find new ways of taxation. Hon. Members might have noted that some of the other States have taken to levy a surcharge on land revenue, enhancement in the water rate, etc. In Hyderabad, we are trying to talk too much with sentiment. We speak that people need not pay taxes further with the idea that more votes will be cast for us, etc. Votes are not going to be cast on these points or on a consideration of these matters. People cast votes to those or to that party or to that Government when things are done to their requirements. That is why we should see to whichever party we may belong, that we fulfil the commitments that are made in the Five-Year Plan and we keep up to the targets.

In the current year's accounts, I have found one item, that is about 5 crores of rupees as being lent to the State Bank. That affects the cash balances. We have borrowed from outside (bazaar) at 4 per cent and I do not know what interest we get from the State Bank. That is a thing that might have missed the notice of the Government. They have not placed it before the House in the current year's accounts. About this 5 crores of rupees which have been lent from our cash balances to the State Bank, I want to ask why it was necessary to lend and at what rate it was lent? This must be made known to the House. If those 5 crores of rupees are with us, we may not experience any troubles. So this point the Government have to clarify.

Then about the proportion between the nation-building items and other adminstrative items. In 1954-55 if we take the road transport accounts and the electricity department accounts as being the accounts for development departments, the proportion is 50 to 50. It is not bad. But if we take away those two items the proportion is 45 to 55. I have been trying to know whether the Government has been trying to endeavour to reduce the percentage of expenditure on the administrative departments. I have not been convinced of

the seriousness about it because in the new items of expenditure out of the provided amount of 80 lakhs 40 thousands 53 lakhs go for nation-building departments and 27 lakhs are allotted to the other administrative departments. So, this must be taken note of that while we reduce the expenditure in one administrative department we are compelled to add to the other administraitve departments. In the process of working in these three years, every year there has been a savings made in the nation-building departments, while there is more expenditure in the non-nation-building departments. I do not know whether it has been the habit of the Finance Department to show little amounts while taking sanction on the administrative departments and showing greater amounts on the nation-building departments and then come to the House with supplementary demands and ultimately showing savings in the nationbuilding departments and more expenditure in the non-nation-building departments. I have seen in these three years and for the benefit of the hon. Members of the House I may tell that savings have been shown in 1952-53 as under: Irrigation 15 lakhs, education 13 lakhs and agriculture 15 lakhs, and civil works 43 lakhs. When we complain there is not much work being done in the departments which contribute to the nation-building activities we find here that savings are made and the complaint is made in the end that they have not been able to expend. There must be something wrong somewhere. I am informed that sanctions are made very late in the months of January and February and the concerned departments are not able to spend the amount. When there is so much demand for more primary schools or there is so much demand for extra teachers, I do not know how there should be a saving in the education department. Similar is the case with the agriculture department or any other nation-building department. As a matter of fact, they should spend more than what is already provided in the budget, because we are already behind. This should be taken note of.

One common feature I have found in the States of Madras and Mysore is this-: They have levied additional sales tax on the mill made cloth—0-2-0 in a rupee and 0-1-3 in a rupee respectiveby It is very healthy approach. It conforms tothe policy of encouraging rural industries. In my opinion, if there should be any good relations or if there should be any balancing between the large scale industries and the small scale industries cottage industries and their products should be encouraged. The products in the large scale industries should be

subject to heavy excise duties and export duties should be reduced on them so that the manufacture of our large scale industries can find export market and all taxation particularly excise duties shall not be levied on hand-loom cloth and other cottage products and the local consumer should consume the latter. In my opinion, this would be a correct policy and if I recall the Japanese adopted the same approach before the war While Japanese goods sold cheaper in other countries they sold in their home country at a higer rate. So the large scale manufacturer has to find outside market and home market should be reserved completely to the small scale industries.

That can be achieved by levying a heavy excise duty on the manufactured products coming from large scale industries. If Mysore and Madras have done this, I think it is in the right direction. Our State Government also would have considered about this. We passed an enactment for betterment levy. We do not find any in come from the recoveries. Even the present sales tax realisations, so surprising it is, have not reached even the two-crore target. On one side there has been pressure from the people of Hyderabad and on the other from the Government of India to abolish export customs. We hear from the Government that they have been able to impress upon the Government of India the need to allow us to continue this for one more year. 1 crore and 35 lakhs from export customs, 65 lakhs of surcharge, thus 2 crores of rupees have to be made up. In what way are we going to make it up? It is only through realisation of sales tax. If sales tax realisations have not reached that mark, our deficits in future will be much more. Therefore I hope the Finance Minister will find ways and means to see that realisation of sales tax is enhanced. Is this laxity in realization due to the increase in the rate of taxation or is it due to the reason that the Department has not been able to build up an organisation, particularly in district areas? What are the difficulties?

There are certain things done in 1953, which should be appreciated. One thing we should appreciate or we should thank nature (for its kindness) which has been responsible for lifting controls on food stuffs. But lifting of controls has its repercussions also. As has been remarked by one of the hon. Members from Opposition, the producer-cultivator may be put to some difficulty in paying back the taccavi loans if the prices go down. But control does not mean pegging prices at the floor level. It is only the ceiling prices that are controlled. So it will not be possible for us to keep the floor

prices of any commodity and compel the consumer to purchase. But it happend that the system of controls resulted in hoarding and restriction on movement; thereby the commodity had a price. That thing is not now available. So there are apprehensions that the prices may still go down. Before the controls were removed, there were apprehensions that the prices may go up, but now the apprehension is that it may go down. If the prices start coming down, particularly agricultural produce, there will be a terrible crisis in the rural sector. Our industries will also suffer, because the cultivator will not be able to purchase the industrially manufactured goods. In this context I would like to answer the remark made about deficit financing or deficit budgetting. This year's deficit of a crore or two cannot be called deficit financing. This subject is for the Centre to look to and the State's deficit has somehow or other to be covered up, either by taxation or by trying to draw upon the balance of reserves or by central assistance. We do not have control over currency, *i.e.*, the power to issue further notes. As I just said, the prices of commodities are showing a downward trend. There is no fear that there would be inflation and the prices would shoot high and the purchasing power will come down. The prices in June 1953 reached a peak level and they have been gradually coming down since. Therefore any deficit in our budget is not going to affect much. We need not worry about our deficit budget.

Certain good things have happened, last year, as I said. One such is the lifting of controls. The next is the constitution of the Land Commission which is going to work. Then the National Extension Services have been started. In future our economic development will be related to four sectors: one, certain items under the first five-year-plan, and subsequently with the second five year plan; second, community development; third, the National Extension Services and fourth, the local development works. I am glad that 1953 has been the year for starting these National Extension Services. We are going to have a Land Improvement Board also which may do some good work, particularly in Marathwada where bunding is necessary. Industrial Laboratories have been opened and in this connection I want to say that it is a white elephant on us. Of course, industrial research is necessary, but any research that will be made will not be confined to Hyderabad's frontiers alone and as such the Government of India should bear the expenditure. Otherwise, the State's funds would not be able to cope with its requirements.

Another happy incident that has taken place is the Nizam's voluntary reduction of 25 lakhs of rupees. I do not know why this has not been mentioned in his address. I also find in the loan and debt account, that some interest is going to be paid to the loans of the Nizam. I do not know what the constitutional position is; whether this House has anything to say on this point of borrowing and the determination of interest on the loans. I do not find any mention of this in the Constitution. That is one of the most important things that does not come before us, *i.e.*, the amount or quantum of loan the Government desires to borrow, the terms on which it likes to borrow and the terms on which it wants to repay. This is not a matter that comes before us. But anyhow we are indebted to the Nizam. We have borrowed from him more than 18 crores of rupees—it may have exceeded even 20 crores and if he begins to charge interest and demand interest, then it will be a heavy liability on us. I am afraid, when I compare this budget with last year's, on one item—particularly the miscellaneous item—I find $2\frac{3}{4}$% being entered there and on about 4 crores and 40 lakhs of rupees some 12 to 13 lakhs of interest is to be paid. Then, I find that no benefit has come out by the reduction of 25 lakhs of rupees. The Nizam may do it from the front door and take 11 to 12 lakhs of rupees from behind. Anyhow this is a very knotty affair particularly for us to square up with the Nizam. The hon. Members may say 'Let us borrow', but I am not very anxious to borrow for the reason that the re-payment of the loan and the interest charges we have to pay will take away all the current receipts. So, some effort has to be made of compounding the Nizam's loans. We have been only catching the tail, *i.e.*, 50% Sarf-e-khas compensation. But the main burden is the huge loan that he has kept on our shoulders to carry and I am afraid and I am not sure that we can pay back in a reasonable period. Therefore, some effort will have to be made in sitting with the Rajpramukh and then coming to certain terms and in this regard I submit before the House that abut $4\frac{1}{2}$ crores of rupees have been given as a loan just after police action for running the administration. That is the information we have. Because the treasury was emptied by the Government before Police Action. It was not given for any beneficial or development work. The Rajpramukh can sympathize with the condition of the State and sit with the Government to see that the loan amount is reduced by an appreciable extent. Otherwise, the tax-payer in the State will not be able to better his condition.

To improve our finances, we have got to sell the property in the city itself, *i.e.*, the City Improvement Board's buildings. I do not know why the Government is hesitating to sell these buildings. That money can be rolled up. Even the sale of the buildings at Delhi and the sale of property at Bombay have taken a lot of time. If we can dispose all such properties which are not very useful to us, we can improve our ways and means and balance our position. The money that is held up at London (1.97 crores) has not been settled and it has also taken a long time. Of course, I know it is not within our purview or capacity to set it right but anyhow some sort of an effort will have to be made in this direction.

An Industrial Finance Corporation has been set-up this year. It is a very good thing. It is a happy beginning. The small scale industries can look forward to this Corporation for funds and the industrial development of the State will make some rapid strides. But I would like to say one thing, about the Chairman of the Corporation. In my opinion, the Chairman of such a Corporation should not be an industrialist. I would always plead that a legislator should not be a vakil. I do not want to cast an aspersion on the lawyers' profession. Similarly an industrialist should not be at the helm of a Corporation, particularly a Corporation which lends money. The industrialist himself any have certain interests in the industry. Such a thing has happened at Dlehi also and I wish the Government will keep this in view atleast when a change is necessary sometimes after.

We have lost nearly 25 to 30 lakhs of rupees this year for not having acted expeditiously. The first is levying full assessment on Inam lands. The second is the abolition of Mansabs to the extent that we could. The state's finances have lost 28 to 30 lakhs of rupees under these two items. The Government does things according to admitted policies. The Congress party also has laid down this policy as any other party has done. Particularly in Hyderabad we have these 4 or 5 items before us like the abolition of Jagirs and Crown lands and paying only the minimum compensation, then the abolition of Inams and abolition of Mansabs and also the Watandari, which is an administrative reform. There is no difference of opinion on these things. The Congress party is also anxious that these relics or past evils must be eradicated at the earliest so that the economic and social development could go ahead rapidly. But what happened is that by not

doing things in time, the grace of it is lost and the persons sitting on the left get the credit. We are losers both ways. We have the same views as the members of the other side. We quarrel with our leaders and voice our feellings in the party, whereas the members on the other side take the advantage of saying things from this platform and the Congress party is deprived of the credit that should go to it. This may be taken note of by the leaders of the Congress party and the things that needs to be done may be done in time and with grace.

Mr. Deputy Speaker: How much more time does the hon. Member require ?

Shri V.B. Raju: Without taking any more time, I request the Government to pay attention and throw more light on the following matters: Firstly, the Five-year Plan and its working, *i.e.* the activities carried out the plan in the three years should be made available. Second the nature of the community development schemes and the targets that have been achieved. Third, the arrears that Government have to realise from certain departments like Forests and Abkari. A statement of loans that have been given to various institutions should be given. I would like a committee of experts to be set up, as the Centre has done (though the work is entrusted to an individual), with a view to see how the expenditure under the Five-year Plan has secured returns ; whether the unit cost has exceeded the standard minimum or whether there is any extravagance. There is no use in spending the money, unless the targets are realised and for that purpose a committee should be set up.

I would say that the Government has done its best in not taxing the people and on this account, the Opposition has no complaint. But the Government will be doing a mistake, if it will not tax now. It will be missing the bus because there is a downward trend of prices.

The House then adjourned for recess till Thirty Five minutes Past Five of the Clock.

The House re-assembled after recess at Thirty-Five minutes past Five of the Clock.

[Mr. Deputy Speaker in the Chair]

شری سید اختر حسین (جنگاؤں) جناب اسپیکر صاحب - آج ہم جمہوری زندگی کے تیسرے سال میں داخل ہوئے ہیں - جو نیا بجٹ ہمارے سامنے آیا ہے اسکے بارے میں یہاں اپوزیشن کی جانب سے خاص طور پر یہ سمجھا جاتا ہے کہ حکومت اور حکمران طبقہ کو کچھ ایسے مشورے دئے جائیں جن سے وہ کمزوریاں اور خامیاں دور ہوسکیں جو اس وقت موجود ہیں - لیکن موازنہ پر گفتگو کرنے سے پہلے میں یہ ضروری سمجھتا ہوں کہ جس دیش میں ہم رہتے بستے ہیں وہاں کے خارجی حالات کس قسم کے ہیں - کس قسم کا نیا سماج پیدا ہورہا ہے اور وہ کونسے طبقات ہیں جنکی کشمکش بڑھ رہی ہے اسکے بارے میں کچھ عرض کروں - جبتک ان سوالات پر نظر نہ ڈالی جائے ظاہر ہے کہ ہم موازنہ کو صحیح طور پر سمجھ سکتے ہیں اور نہ اصولی طور پر کوئی صحیح رہنمائی کرسکتے ہیں - کسی حکومت کا موازنہ صرف اعداد و شمار کا مجموعہ نہیں ہوا کرتا بلکہ وہ عکس ہوتا ہے آئینہ دار ہوتا ہے اوس سماج کا اوس سوسائیٹی کا اور اوس طرز زندگی کا جس سے کہ وہاں کا حکمران طبقہ آگے بڑھتا ہے یا اسے پسپا ہونا پڑتا ہے - میں آج دیش کی حالت کو پیش نظر رکھتے ہوئے اور خاص طور پر حیدرآباد کے تعلق سے عرض کرونگا کہ ہم یہ کہنے اور یہ محسوس کرنے پر مجبور ہیں کہ پچھلے دو ڈھائی سال کے دوران میں جو توقعات اور جو امیدیں اس حکومت سے وابستہ تھیں اور عوام نے جو توقعات وابستہ کر رکھی تھیں اور جسطرح لوگ سوچ رہے تھے کہ نئی زندگی کی جانب وہ آگے بڑھ سکیں گے افسوس کہ حکمران طبقے کی جانب سے اس میں نہ صرف رکاوٹیں ڈالی گئیں بلکہ باوجود اون کوششوں کے جو عوامی جدوجہد کے ذریعہ جمہوری طاقتوں کو آگے بڑھانے کے لئے کی گئیں کچلنے کی مسلسل کوشش کی جاتی رہی - چونکہ ان کوششوں کے باوجود وہ تمنائیں پوری نہ ہوسکیں - اسلئے ہمکو جائیزہ لینا ہوگا کہ وہ کونسے اسباب تھے وہ کونسی بنیادی باتیں تھیں جنکی وجہ سے یہ رکاوٹیں پیش آئیں - ہم دیکھتے ہیں کہ ساری دنیا اور خاص طور پر ایشیا اور ایشیا کے وہ دیش جہاں سامراجی اثرات ہیں یا (Colonial or semi-colonial countries) ہیں ان میں ایک ابھرتی ہوئی قوت آگے بڑھ رہی ہے - ہم دیکھتے ہیں کہ پچھلے چند سال میں ایشیا کے بڑے بڑے دیشوں میں وہاں کے عوام نے اپنی جدوجہد کے راستہ کو کامیابی کے ساتھ طے کیا ہے اور یقین کیا جاسکتا ہے کہ انکا اپنی منزل پر پہنچنا مشکل نہیں ہے - ۱۵ - اگسٹ سنہ ۱۹۴۷ع کو انگریز ہندوستان سے چلے گئے اور ہمیں آزادی مل گئی - لیکن کیا فرق ہے اوس آزادی میں جو ہمیں حاصل ہوئی اور اوس آزادی میں جو ہمارے پڑوسی ملک چین کو حاصل ہوئی - اسی فرق کو سمجھنے کے بعد ہم کسی نتیجہ پر پہنچ سکتے ہیں - میں اشارتاً مختصر الفاظ میں عرض کرونگا کہ جب تک سیاسی اقتدار عوام کے حقیقی نمائندوں کے ہاتھ میں نہیں آتا اون طبقوں کے ہاتھ میں نہیں آتا جو محنت کش عوام سے تعلق رکھتے ہیں - جو کسان اور مزدور

ھیں جنھیں سماج کی ریڑھ کی ھڈی کہا جائے تو بجا ھے ۔ درمیانی طبقے کے وہ لوگ جو محنت کش ھیں جب تک انکے ھاتھوں میں اقتدار نہ آئے ان کے مسائل کو بھی جمہوری طور پر حل نہیں کیا جاسکتا ۔ مکسڈ اکانمی (Mixed economy) مخلوط معیشت کی جو باتیں کہی جاتی ھیں انکے صرف یہی معنی ھیں کہ انگریز تو یہاں سے چلے گئے لیکن انکا انداز فکر انکا انداز معیشت اور انکا سامراجی طریقہ ورثے کے طور پر باقی رھا ۔ ھمارے نیتاؤں نے انہیں راستوں کو اختیار کیا اور انہیں راستوں پر مضبوطی کے ساتھ قائم ھیں ۔ جن گورے آقاؤں کے خلاف ھم نے بڑی طویل جدوجہد کی تھی آج ان ھی کے راستوں کو ان ھی طریقوں کو کانگریسی نیتا باقی رکھنا چاھتے ھیں ۔ ھمیں غور کرنا چاھئے کہ آخر ھماری معیشت میں کیوں انحطاط پیدا ھو رھا ھے ۔ دن بدن ھمارے کچلے ھوئے طبقات کا معیار زندگی کیوں گرتا جا رھا ھے اور کیوں لوٹ کھسوٹ کرنے والے طبقات پرانی سامراجی طاقتوں کو اپنے ساتھ ملا کر لوٹ کھسوٹ میں برابر آگے بڑھ رہے ھیں تو ھمکو لازماً اس نتیجے پر پہنچنا پڑتا ھے کہ جب تک ھم اس بنیادی سبب کو دور نہیں کرینگے اپنی منزل مقصود تک نہیں پہنچ سکیں گے اوس منزل تک نہیں پہنچ سکیں گے جو جدو جہد کے زمانے میں ھمارے پیش نظر تھی اور آج بھی ھمارے سامنے ھے ۔

اس مختصر سی تمہید کے بعد میں اس موازنہ کی جانب آتا ھوں جو ھمارے سامنے پیش کیا گیا ھے اور جس کے اعداد و شمار اور خاص مدات کے بارے میں کل سے آج تک مختلف تقریریں ھوئی ھیں ۔ اس موازنہ میں آمدنی اور خرچ کی جو رقمیں بتلائی گئی ھیں ان پر نظر ڈالنے سے پتہ چلتا ھے کہ گذشتہ سال اور پیوستہ سال کے مقابلہ میں اس سال کوئی بڑا فرق پیدا نہیں ھوا ھے ۔ ھاں تھوڑا بہت فرق جو نظر آتا ھے وہ پانچ سالہ منصوبہ کے تحت ھے ۔ لیکن پانچ سالہ منصوبہ ھمارے ملک میں کس طرح چل رھا ھے میں اس جانب ایوان کی توجہ مبذول کراؤں گا ۔ ھمیں یہ بھی دیکھنا پڑیگا کہ اس کا اگلا راستہ کیا ھے ۔ اور یہ کہ فائیو ایر پلان کے جو اھم مدات ھیں ان کا تعلق کس نظام سے اور کس طبقہ سے ھے ۔ میں یہ کہوں تو بیجا نہوگا کہ یہ پانچ سالہ منصوبہ ایسی حقیقت ھے جس کو سر کے بل کھڑا کردیا گیا ھے ۔ کسی جمہوری منصوبہ بند معیشت کے لئے یہ چیز ضروری ھے کہ لوگوں کی ضروریات اور ملک کے وسائل کے لحاظ سے منصوبہ بندی کی جائے ۔ لیکن جس طرح کی منصوبہ بندی ھمارے سامنے آئی ھے وہ ھمارے سماج کے ایک ھی پہلو کو لیتی ھے ۔ اور اس میں بہت سی بدعنوانیاں ھیں اس کی ورکنگ میں کئی خرابیاں اور نقائص ھیں ۔ اور تین سال گذرنے کے باوجود ھمارے سامنے اس کا کوئی واضح نقشہ نہیں آیا ھے ۔ اور اس سے عوام کو کیا فائدہ ھوا نظر نہیں آتا ۔ مرکزی حکومت کے فینانس منسٹر نے اپنی بجٹ اسپیچ میں کہا کہ ھماری پر کیپا پٹیا (Per capita) انکم پچھلے سال سے بڑھی ھے ۔ لیکن پر کیپا پیٹا انکم نکالنے کے طریقہ کا بھی جائزہ لینا پڑیگا ۔ اس لئے کہ ایک طرف ھمارے ملک میں وہ امیر طبقہ ھے ۔ وہ بڑے بڑے راجہ مہاراجہ ھیں ۔

وہ جاگیردار ہیں جن کے لاکھوں اور کروڑوں روپیوں کی آمدنی ہے اور دوسری طرف وہ غریب کسان اور مزدور ہیں جن کو دو وقت روٹی نہیں ملتی ۔ ان دونوں طبقات کی آمدنیوں کو ملا کر اوسط نکالا جانا ایک منطقی مغالطہ سے زیادہ اہمیت نہیں رکھتا ۔ مثال کے طور پر راج پرمکھ خزانہ سے سالانہ ایک کروڑ روپیہ حاصل کرتے ہیں ۔ اور بڑے بڑے جاگیردار عہدہ دار اور وزراء لاکھوں کی تعداد میں سالانہ روپیہ حاصل کرتے ہیں ۔ ان کے مقابلہ میں بہت بڑی تعداد ان کلرکوں اور چپراسیوں کی ہے جو دفتروں میں کام کرتے ہیں اور کم معاوضہ پاتے ہیں ۔ ان دونوں کو ملا کر اگر اوسط نکالا جاتا ہے تو اس طرح صحیح صورت حال کیوں کر معلوم ہوسکتی ہے کہا جاتا ہے کہ حیدرآباد کا اوسط پر کیپیٹا انکم ۱۹۸ یا ۲۰۰ آتی ہے ۔ لیکن میں پوچھتا ہوں کتنے لوگوں کو اتنی آمدنی میسر ہوتی ہے ۔ کتنے لوگ اس طرح اپنی نیشنل انکم سے فائدہ حاصل کرتے ہیں ۔ جب کبھی نیشنل انکم کا سوال آتا ہے ہمارے قومی کاموں کو ترقی دینے کا مسئلہ حکومت کے ارباب مقتدر کے سامنے رکھا جاتا ہے تو سب سے بڑا عذر جو ہمارے سامنے کیا جاتا ہے وہ یہ ہے کہ ہمارے پاس روپیہ کی کمی ہے ۔ میں اس مختصر وقت میں جو مجھے حاصل ہے زیر بحث بجٹ کے اس حصہ سے زیادہ تر بحث کروں گا جس کا تعلق اس امر سے ہے کہ ہمارے پاس روپیہ کی کمی کیوں ہے ۔ اور یہ سوال کہاں تک درست ہے ۔ اور اس کمی کو کس طرح دور کیا جاسکتا ہے ۔ اوس جانب کے ایک آنریبل ممبر نے یہ فرمایا کہ متبادل ذریعہ بتلائے جانے چاہئیں ۔ اسی صورت میں گورنمنٹ ان سے فائدہ اٹھاسکتی ہے اور اپوزیشن کا تعاون حاصل کرسکتی ہے ۔ اسی لئے میں صاف صاف لفظوں میں چند ایسے پہلوؤں کی جانب اشارہ کروں گا جن پر اگر واقعی سنجیدگی اور خلوص نیت کے ساتھ غور کیا جائے اور کوشش کی جائے تو نہ صرف ہماری قومی آمدنی میں اضافہ ہوسکتا ہے اور بجٹ کا خسارہ دور ہوسکتا ہے بلکہ ہم ان کاموں کی طرف بھی آگے بڑھ سکتے ہیں جو ہمارے تعمیری کام ہیں اور جنہیں اولیت حاصل ہے ۔ میں ان تفصیلات میں جانا نہیں چاہتا کہ بجٹ کا کتنا حصہ تعمیری کاموں پر صرف ہونا چاہیے ۔ لیکن میں یہ ضرور اشارہ کروں گا کہ آنریبل ممبر فرام سکندرآباد نے ابھی ابھی اپنی تقریر میں فرمایا کہ ہمارے پاس کیاش بیالنسس (Cash balances) کی اس وقت ضرور کمی ہے ۔ لیکن یہ کوئی تشویشناک بات نہیں ہے ۔ اور یہ کہ ہم بحیثیت مجموعی آگے بڑھ رہے ہیں ۔ ہمارا معیار زندگی بڑھ رہا ہے ۔ لیکن اس کے ساتھ ساتھ انہوں نے یہ بھی کہا کہ ہمارے بجٹ کو ایک خصوصیت پچھلے دو سال سے حاصل ہے وہ یہ ہے کہ ہم تعمیر کے کاموں پر جتنا روپیہ منظور کرتے ہیں ۔ سال کے ختم ہونے پر پتہ چلتا ہے کہ اتنا روپیہ خرچ نہیں ہوا ہے اور انتظامی امور اور سیکورٹی سرویسس کے لئے جو روپیہ منظور کرتے ہیں وہ سال کے آخر پر نہ صرف ختم ہو چکتا ہے بلکہ اس میں مزید اضافہ کا مطالبہ بھی پیش ہو جاتا ہے ۔ یہ چیز اس بات کا پتہ دیتی ہے کہ ہم جس طریقہ سے سوچتے ہیں کہ ہمارا معیار زندگی بڑھ رہا ہے ہماری آمدنی کے وسائل بڑھ رہے ہیں وہ صحیح

نہیں ہے ۔ بلکہ اس ڈھانچے میں جو ہمارے سامنے ہے اس کی جو حقیقت ہے وہ اس طریقہ سے سب کے سامنے عیاں ہو جاتا ہے کہ ہماری آمدنی اور خرچ کا اصل رخ کس طرف ہے اور پھر ہمیں یہ بھی پتہ چل جاتا ہے کہ قومی تعمیر کے کاموں سے جو آمدنی ہونی چاہیئے وہ کیوں نہیں ہو رہی ہے ۔ اسلئے کہ اس مد پر پورا روپیہ صرف بھی نہیں ہو رہا ہے اور دوسری جانب جسطرح سے منصوبہ بندی ہونی چاہئے اس میں بہت کچھ کمزوری اور خامی ہے ۔ خسارہ کا بجٹ یقیناً قابل مبارکباد اور قابل خیر مقدم ہوتا ہے بشرطیکہ ہم یہ معلوم کرسکیں کہ ہمیں جو خسارہ نظر آرہا ہے اس کی وجہ رقومات کا قومی تعمیر کے کاموں پر خرچ ہے ۔ لیکن جیسا کہ میں نے ابھی کہا قومی تعمیر کے کاموں پر خرچ کا جتنا ہم اندازہ کرتے ہیں اتنا بھی ہم خرچ نہیں کرتے ۔ ایسی صورت میں خسارہ قابل تشویش ہو جاتا ہے ۔ پھرآخر یہ خسارہ کیوں ہوتا ہے ۔ ہمیں اسکے متعلق غور کرنا ضروری ہے ۔ اگر یہ کہا جائے کہ ہمارا معیار زندگی بڑھ رہا ہے اور ہماری خوشحالی میں اضافہ ہورہا ہے اور اس بات کو مان لیا جائے تو یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ جن مدات میں خسارہ نظر آرہا ہے اسکی کیا وجہ ہے ۔ کیا لوگوں کی قوت خرید اتنی کم نہیں ہوئی ہے کہ وہ اپنی ضروریات اور مطالبات کے بموجب روپیہ صرف نہیں کررہے ہیں اور قومی آمدنی کو بڑھانے میں حصہ نہیں لے رہے ہیں ؟ کیا لوگوں کے پاس روپیہ کی اتنی کمی ہے کہ وہ ایسے محاصل جو ان پر عائد کئے جاتے ہیں ادا نہیں کرسکرہے ہیں ؟ جن مدات میں خسارہ بڑھ رہا ہے انہیں دیکھنے سے تو یہی پتہ چلتا ہے کہ لوگوں کا معیار زندگی گھٹ رہا ہے ۔ پنج سالہ منصوبہ کے تحت کہا جاتا ہے کہ پیدا وار بڑھ رہی ہے ۔ لیکن جب ہم اس کا تجزیہ کرتے ہیں کہ بڑھتی ہوئی پیدا وار کا ہمارے ملک کے لوگوں کی آمدنی کے ساتھ کیا تناسب ہے تو ہم دیکھتے ہیں کہ پچھلے چند سالوں کے مقابلہ میں یقیناً صنعت اور زراعت کے بعض گوشوں میں ترقی ہوئی ہے لیکن اس پیدا وار کے بڑھنے کا بوجھ کن طبقات پر پڑ رہا ہے اس کو بھی دیکھنا ہوگا ۔ اور اسکے ساتھ ہمیں یہ بھی غور کرنا ہوگا کہ آمدنی بڑھانے کے کیا نئے وسائل ہوسکتے ہیں ۔ اورکس طریقہ سے ہم اپنی آمدنی کے وسائل کو مستحکم کرسکتے ہیں ۔ میں اس موقع پر بجٹ کے ایک پہلو پر خاص طور سے متوجہ کرونگا جسکا تعلق ہماری صنعتی زندگی سے ہے ۔ پنج سالہ منصوبہ میں زیادہ تر زور زراعت اور پراجکٹس پر دیا گیا ہے ۔ اور جیسا کہ میں نے پہلے عرض کیا یہی یہ وہ بات ہے جسکے بارے میں میں یہ سمجھا ہوں کہ حقیقت کو سر کے بل کھڑا کردیا گیا ہے ۔ یقیناً ہمارا ملک ایک زرعی ملک ہے ۔ اور ہمارے زرعی وسائل بنیادی چیزیں ہیں ۔ جب تک کسان کو زمین نہ ملے اس کے قرضوں کا بوجھ ہلکا نہو اس وقت تک دیش کی ترقی کا راستہ نہیں کھلتا اس وقت تک پیدا وار میں اضافہ نہیں ہوسکتا ۔ اس وقت تک ہمارے وسائل نہیں بڑھ سکتے ۔ لیکن اس کے ساتھ ہی ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ ہماری زمین پر میان پاور (Man power) کا بوجھ زیادہ ہے ۔ ہم یہ بھی سمجھتے

ھیں کہ کسان سے زیادہ آمدنی کا حصہ ھم کو حاصل نہیں ھوسکتا ۔ اور اسکو ریلیف دیا جانا چاھئیے ۔ جس کے لئے ھمیں اس پر سے محاصل کے بوجھ کو کم کرنا ھوگا ۔ اس لئے ھمیں اپنی صنعتوں کی جانب دیکھنا پڑتا ھے ۔ جب تک دونوں مل کر ساتھ ساتھ آگے نہ بڑھیں ھمارا یہ پانچ سالہ منصوبہ کامیاب نہیں ھوسکتا ۔ اسی پہلو کو ھم نے سب سے زیادہ نظر انداز کردیا ھے ۔ حیدرآباد ھی کو لیجئیے ۔ حیدرآباد میں جو قدرتی وسائل ھیں جو میان پاور حاصل ھے وہ یقیناً ایسی دولت ھے جس سے بہت کچھ فائدہ اٹھایا جاسکتا ھے ۔ اس سے ھم اپنی آمدنی کے وسائل کو بڑھاسکتے ھیں ۔ میں مختصر الفاظ میں چند خاص خاص صنعتوں کی جانب اشارہ کرونگا جو آج حیدرآباد میں قائم ھیں یا جو قائم ھوسکتی ھیں ۔ اور یہ ثابت کرنے کی کوشش کرونگا کہ ھماری حکومت کی صنعتی پالیسی ترقی پسند پالیسی بن سکتی ھے ۔ اگر ھماری حکومت یہ سوچے کہ پبلک سکٹر (Sector) کو ترقی دینا ھے تو ایسی صورت میں ھماری معیشت آگے بڑھ سکتی ھے ۔ اس کے لئے ھمیں اس امر کو پیش نظر رکھنا ھوگا کہ ھمارے پاس لوگوں کی کیا کیا ضروریات ھیں اور انکے کیا کیا مطالبات ھیں اس لحاظ سے ھمیں اپنی صنعتی پالیسی کو ترقی پسند خطوط پر بڑھانا ھوگا ۔ اور آج دیش میں جو صنعتیں موجود ھیں انہیں ترقی دینے کے لئے اور انہیں باقی رکھنے کے لئے کوشش کرنی ھوگی ۔ حیدرآباد میں پچھلی جنگ کے دوران میں کچھ صنعتیں قائم ھوئی تھیں ۔ لیکن پچھلے چند سال کے اندر ھمیں یہ دیکھکر افسوس ھوتا ھے کہ بہت سی صنعتیں نہ صرف بند ھوگئی ھیں اور بہت سی صنعتیں ایسی ھیں جنکی حالت دن بدن بدتر ھوتی جارھی ھیں ۔ آخر اسکی کیا وجہ ھے ۔ اس بارے میں میں یہ بتانا چاھتا ھوں کہ خود کانگریس کی مقرر کردہ پلاننگ کمیٹی نے صنعتوں کے متعلق جو مختلف سفارشات کئے تھے ۔ آج کانگریس نے برسر اقتدار آنے کے بعد ان سفارشات کو گردوغبار کے ڈھیر میں ڈالدیا ۔ اگر ان سفارشات کو سامنے رکھا جاتا جو لوگوں کے اپنے مطالبات کے لحاظ سے مرتب کی گئی تھیں تو یقیناً کافی کامیابی حاصل ھوتی ۔ اس میں ایک سفارش یہ کی گئی تھی کہ مینیجنگ ایجنسیز کا جو طریقہ رائج ھے وہ صنعتوں کے لئے مضر ھے اس کو ختم کرنا چاھئیے ۔ لیکن آئی ۔ ٹی ۔ ایف کی جانب سے ھماری صنعتوں میں جو روپیہ لگا ھوا ھے وہ ساری صنعتیں مینیجنگ ایجنسیز کے ذریعہ چلتی ھیں ۔ مینیجنگ ایجنٹس اپنے منافعہ کے لئے اپنی دولت بڑھانے کے لئے صنعتوں کی ترقی کی جانب اتنا زیادہ دھیان نہیں دے سکتے جس طرح کہ انہیں دینا چاھئیے ۔ ھمارا تجربہ بھی یہی بتلاتا ھے کہ حیدرآباد میں جتنی صنعتیں مینیجنگ ایجنٹس کے ذریعہ چلتی ھیں ان کا دیوالیہ نکلتا جا رھا ھے یا وہ اوور کیپٹالائیز (Over capitalize) ھوتی جارھی ھیں ۔ ان میں کرپشن (Corruption) بڑھتا جا رھا ھے ۔ اس لئے سب سے پہلی بات یہ ھے کہ مینیجنگ ایجنسیز کے سسٹم کو ختم کیا جانا چاھئیے ۔ اور جو منافعہ بخش صنعتیں ھیں انہیں حکومت کو خود اپنے ھاتھ میں لیکر چلانا چاھئیے ۔ ھم دیکھتے ھیں کہ حکومت نے سرپور اور سرسلک انڈسٹریز کو برلا کے حوالہ کردیا محض اس عذر کے

بناً پر کہ اس کو چلانے کے لئے چند لاکھ روپیوں کی ضرورت ہے ۔ اور حکومت کے پاس ان صنعتوں میں لگانے کے لئے اتنا روپیہ نہیں ہے ۔ از بسٹاس اور آلوین اس قسم کی صنعتیں ہیں جن کو ترقی اور منافع کے راستے پر چلایا جاسکتا ہے اور مینیجنگ ایجنسیز کے طریقے کو ختم کرکے ان کی خرابیاں دور کی جاسکتی ہیں ۔ وہ نہ صرف نفع بخش بن سکتی ہیں بلکہ ان کی وجہ سے ہماری قومی آمدنی میں کافی اضافہ ہوسکتا ہے ۔ آلوین کے بارے میں آنریبل فینانس منسٹر جو صنعت و حرفت کے منسٹر بھی ہیں ان سے مجھے یہ کہنا ہے کہ اس صنعت میں ریفریجریٹرس سکشن (Refrigerators Sections) بھی موجود ہے اس کے لئے مشینری آکر پڑی ہوئی ہے ۔ اگر اس سکشن کو چلایا جائے اور استعمال کیا جائے تو ماہرین کی یہ رائے ہے کہ یہ صنعت ہندوستان میں سب سے بڑی صنعت بن سکتی ہے۔ اور سب سے زیادہ نفع بخش صنعت بن سکتی ہے ۔ لیکن مینیجنگ ایجنٹس نے اس پر کوئی توجہ نہیں دی ہے ۔ گورنمنٹ کو چاہئے کہ اس کو روبہ عمل لائے ۔ اسی طرح سے اسبطاس کی صنعت ہے جو ہندوستان میں صرف دومقامات پر پائی جاتی ہے ۔ ایک کارخانہ بمبئی میں ہے اور ایک حیدرآباد میں ۔ بمبئی کے کارخانہ میں انگریزوں کا سرمایہ ہے اور اسکا مال یہاں کے مال سے بہتر ہوتا ہے اسکی وجہ یہ ہے کہ وہاں اچھے ماہرین موجود ہیں اور جنوبی افریقہ سے جو رامیٹیریل منگایا جاتا ہے وہ سستا پڑتا ہے ۔ اس وجہ سے وہ کامپیٹیشن میں بھی ہم سے آگے ہیں ۔ اسکے برخلاف ہمارے پاس کینڈا سے رامیٹیریل منگایا گیا جوگراں بھی تھا اور وہ اس قسم کا تھا کہ وہ استعمال نہیں کیا جاسکتا تھا ۔ آنریبل وزیر صنعت اسکو جانتے ہونگے اور اس سے پہلے جو لیبر منسٹر صاحب تھے وہ بھی جانتے ہیں کہ اس مال کی نسبت یہ تصفیہ ہوا کہ وہ استعمال نہیں کیا جا سکتا ۔ بہت دنوں کے بعد ایک اٹالین اکسپرٹ نے یہ رائے دی کہ دوسرے طریقہ سے اسکو استعمال کیا جاسکتا ہے لیکن اسپر عمل نہیں کیا گیا اس قسم کا ہماری صنعتوں میں جو مس مینجمنٹ اور کرپشن ہے اسکو ختم کرکے بہت بڑا فائدہ اٹھایا جاسکتا ہے ۔

اسی طریقہ سے یہاں اور دوسری صنعتیں ہیں ۔ اس میں سب سے بڑی صنعتیں سونے اور لوہے کی ہیں ۔ ہٹی گولڈ مائنس کے بارے میں میں ایوان کو یہ بتلانا چاہتا ہوں کہ اس میں پورا روپیہ حکومت کا لگا ہوا ہے لیکن وہاں کی مینجنگ ایجنٹس انگریزوں کے ہاتھ میں ہے اور اسکا مینجر بھی انگریز ہے کولار گولڈ فیلڈس سے بھی تعلق ہے ۔ اسکی وجہ سے یہ ہورہا ہے کہ ایک تو انتظامات میں بہت زیادہ روپیہ خرچ ہو جاتا ہے اور پھر ایسی خبر بھی ملی ہے کہ اگرچہ یہاں سونے کا پروپورشن (Proportion) زیادہ ہے لیکن یہاں سے اسمگلنگ (Smuggling) ہوتی ہے۔ اسکی جانب حکومت نے کوئی توجہ نہیں کی ۔ اسکو اپنی نگرانی میں لیا جائے اور اچھے طریقہ سے کام کیا جائے تو یہ ہمارے بہت بڑے فائدہ کی صنعت بن سکتی ہے ۔

اسی طرح کوئلہ جو سنگارینی کالریز میں ہوتا ہے اسکے بارے میں عام طور پر سمجھا گیا ہے اور اکسپرئس نے یہ رائے دی ہے کہ یہاں کا کوئلہ بہ نسبت دوسرے مقامات کے بہتر ہوتا ہے لیکن یہاں اس صنعت کو کسطرح ترقی دیجاسکتی ہے اسکے بارے میں توجہ نہیں کی گئی ہے ۔ مثال کے طور پر یہ چند صنعتیں ہیں جو ہمارے ملک میں موجود ہیں لیکن مینجنگ ایجنسی سسٹم کی وجہ سے اور اسکی وجہ سے جو کرپشن ہے جیسا کہ آلوین وغیرہ میں ہے ترقی نہیں کرسکیں ۔ جب حکومت کو اس جانب توجہ دلائی جاتی ہے تو حکومت کے متعلقہ عہدہ دار اور منسٹر صاحب ان چیزوں کی گہرائی میں جا کر تحقیقات کرنے کی بجائے یہ جواب دیتے ہیں کہ ہمارے پاس روپیہ نہیں روپے کی کمی کی وجہ سے ہم انکا انتظام نہیں سنبھال سکتے ۔ انکو نہیں چلاسکتے ۔ اس وجہ سے صنعتیں بند ہوتی جا رہی ہیں ۔ مزدور بیکار ہوتے جا رہے ہیں معاشی بحران بڑھتا جارہا ہے ۔ لیکن اس سلسلہ میں کسی منظم اسکیم کو روبعمل لانے کا نام نہیں لیا جاتا ۔

ان صنعتوں سے ہٹ کر حیدرآباد میں جو بڑے بڑے معدنی وسائل ہیں ان کو پیش نظر رکھیں تو اس ریاست میں ایسی صنعتیں قائم ہوسکتی ہیں جو نہ صرف منافع بخش بن سکتی ہیں بلکہ ان سے حیدرآباد میں رہنے بسنے والے ایک کروڑ ۸۰ لاکھ لوگوں کی مختلف ضروریات کی تکمیل ہوسکتی ہے ۔ ہماری ریاست میں آئیل سیڈس اتنی بڑی مقدار میں پیدا ہوتے ہیں کہ اگر تیل کی صنعتیں یہاں قائم کی جائیں تو وہ نفع بخش بن سکتی ہیں ۔ اسی طرح سے کپاس بھی بہت بڑی مقدار میں پیدا ہوتی ہے ۔ لیکن یہ دونوں چیزیں باہر چلی جاتی ہیں اور ان سے ہم اس طرح سے فائدہ نہیں اٹھا رہے ہیں جس طرح کہ ہم کو اٹھانا چاہیئے ۔

اس کے علاوہ ایسی چھوٹی چھوٹی صنعتیں ریاست حیدرآباد میں قائم ہوسکتی ہیں جو ایک طرف ہماری ضروریات کو پورا کرسکتی ہیں ۔ دوسری طرف بیروزگاری کو ختم کرسکتی ہیں اور تیسری طرف قومی دولت میں ان سے اضافہ ہوسکتا ہے ۔ مثال کے طور پر یہاں لیدر کی صنعت قائم ہوسکتی ہے جو دباغت کرکے باہر بیھجا جاتا ہے اور جس سے ہماری قومی آمدنی کا کئی لاکھ روپیہ باہر چلا جاتا ہے ۔ اگر لیدر کی صنعت کو یہاں قائم کرکے یہ فائدہ اٹھا یاجائے تو یہ بات بالکل ممکن ہے ۔ حیدرآباد میں تقریباً ۲۰ لاکھ روپے سالانہ چمڑے کی اشیاء کی کھپت ہے جو باہر سے آتی ہیں اگر لیدر کی صنعت یہاں قائم ہو جائے تو ہماری قومی آمدنی کو بڑھانے کا باعث بن سکتی ہے ۔

اس کے علاوہ ہماری قومی آمدنی کو بڑھانے کے اور بہت سے طریقے ہوسکتے ہیں اور یہ جو رونا رہتا ہے کہ ہمارے پاس خسارے کا بجٹ ہے ۔ ہم قومی کاموں پر زیادہ روپیہ صرف نہیں کرسکتے یہ دقت اور مشکل ختم ہوسکتی ہے ۔

ریاست میں ایک روڈ ٹرانسپورٹ ڈپارٹمنٹ قائم ہے - یہ ایک منافع دینے والا ڈپارٹمنٹ ہے - لیکن اس جانب حکومت نے پچھلے تین سال میں کوئی توجہ نہیں کی - لوگوں کی تکلیف اور ان کے مطالبات کو اگر نظر انداز بھی کردیا جائے اور صرف معاشی نقطہ نظر سے قومی آمدنی کو بڑھانے کے نقطہ نظر سے بھی دیکھا جائے تو بھی یہ ضروری تھا کہ اس محکمہ کی جانب زیادہ سے زیادہ توجہ کی جاتی اور زیادہ سے زیادہ نئے راستوں پر نئی بسیں چلا کر آمدنی حاصل کی جاتی -

اسی طرح سے جب ہمارا فینانشیل انٹگریشن سنٹر سے ہوا اس وقت حیدرآباد سے جتنا روپیہ گیا ہے اور اس کے جواب میں سنٹر نے جو کچھ روپیہ دیا ہے وہ بہت مایوس کن ہے - جب سنٹر کی طرف سے بھاری صنعتیں قائم کرنیکی اسکیمیں آتی ہیں تو ان کے لئے دوسری ریاستوں کی جانب سے پر زور مطالبہ ہوتا ہے اور اکثر ان کے مطالبات کو تسلیم کرتے ہوئے یہ صنعتیں ان ریاستوں میں قائم بھی کی گئی ہیں یعنی یہ ریاستیں اپنے مطالبات کو منوانے میں کامیاب ثابت ہوتی ہیں لیکن ہمارے پاس سے اب تک کبھی بھی شدت کے ساتھ یہ مطالبہ نہیں گیا کہ یہاں بھی بھاری صنعتیں قائم کی جائیں - حالانکہ ہمارے پاس اس کی گنجائش موجود ہے - آندھرا کی سرحد پر ہم کو لوہا ملتا ہے - کوئلہ تو ہمارے پاس ہے ہی - ٹرانسپورٹ کے قاضی پیٹھ جنکشن پر اور اس علاقہ میں پن بجلی کوئلہ اور لوہا یہ تمام وسائل موجود ہیں - ہمیں یہ چیزیں میسر ہیں - اس لحاظ سے یہاں بھاری صنعتیں زیادہ سے زیادہ قائم ہوسکتی ہیں - اگر سنٹر کو توجہ دلا کر بھاری صنعتیں ہمارے پاس قائم کی جائیں تو یقیناً ترقی کرسکتے ہیں - اس کے ساتھ ساتھ مقامی سرمایہ داروں کو جس میں بڑے سرمایہ داروں سے لیکر خود راج پرمکھ تک شامل ہیں اس پر مائل کیا جائے کہ وہ باہر روپیہ لگانے کی بجائے خود یہاں کی صنعتوں میں لگائیں تو یقیناً اس سے بہت بڑا فائدہ ہوسکتا ہے

صنعتوں کے اس سوال پر میں زیادہ زور دیرہا ہوں کیونکہ جیسا کہ میں نے پہلے کہا جب تک ہمارے پاس صنعتیں قائم نہوں ہماری ترقی رکی رہیگی منجمد رہیگی اور اس وقت تک ہمارے قومی آمدنی کے وسائل بھی جنکی ہم تلاش میں رہتے ہیں حاصل نہیں کرسکتے - ایک طرف ہماری صنعتی ترقی اور دوسری طرف زمین کے مسئلہ کا حل یہی دو معاشی پہلو ہماری سماج کے ایسے ہیں جو نہ صرف ہماری معیشت کو بڑھا کر قومی دولت کو بڑھا سکتے ہیں بلکہ بیروزگاری کے مسئلہ کو بھی دور کرسکتے ہیں اور ملک کو خوشحال بنا سکتے ہیں -

زمین کے مسئلہ پر دوسرے ساتھیوں نے بہت کچھ کہا ہے اور اس مسئلہ پر یہاں بہت بحثیں ہوئی ہیں اور ایک قانون بھی پاس ہوا ہے لیکن میرا یہ کہنا ہے کہ یہ اطمینان بخش قانون نہیں ہے اور نہ اس سے اطمینان بخش طریقہ پر زمین کا مسئلہ حل ہوسکتا ہے - اس

قانون سے کسان کو زمین نہیں مل رہی ہے جو اناج کا پیدا کرنے والا ہے جو ہمارا اندانا ہے ۔ اور جب تک اس کی قوت خرید اس کی اپنی زمین پر زیادہ اناج پیدا کرنے کی وجہ سے نہیں بڑھتی وہ ہماری صنعتی زندگی کا ایک جز نہیں بن سکتا ۔ ہماری مجموعی ترقی اور خوشحالی میں شامل نہیں ہوسکتا ۔ جب تک ہماری زرعی ترقی صنعتی ترقی کے ساتھ نہ سلجھائے اس کے ساتھ نہ جڑ جائے اس سے ایک طرف کسان کی خوشحالی نہ بڑھے اور دوسری طرف مزدور اور درمیانی طبقہ کو کام نہ ملے ہمارے یہاں ایک خوشحال سوسائیٹی اور سماج پیدا نہیں ہوتے اور نہ اس وقت تک ظاہر ہے کہ ہم اس منزل پر پہنچ سکتے ہیں جو ٹھیک اس زمانہ میں جبکہ قومی تحریک چل رہی تھی اس مسئلہ کو حل کرنے کے لئے اور ملک کو خوشحال بنانے کے لئے عوام کے سامنے رکھ رہے تھے ۔ ورنہ اس قسم کی باتوں سے ہماری قومی آمدنی بڑھی ہے نظام کو ایک کروڑ روپیہ ملتا ہے .. بڑے بڑے برلاؤں اور ٹاٹاؤں کو اتنی زیادہ دولت اور منافع ہوتا ہے کہ اگر اسکو ملا کر یہ کہا جائے کہ فی کس آمدنی ۲ سو ہے ۔ ۳ سو ہے یا ۴ ہزار ہے تو یہ صحیح نقشہ نہیں ہے اس تصور کو بدلنے کی ضرورت ہے ۔ ہم کس قسم کا سماج قائم کرنا چاہتے ہیں اور کونسا طرز زندگی اختیار کرنا چاہتے ہیں اس کو دیکھنے کی ضرورت ہے ۔ ایک ایسا طرز زندگی جو ایک بیدار اور باشعور انسان کا مطالبہ ہے میں سمجھتا ہوں کہ اس کو سامنے رکھتے ہوئے آگے بڑھنے کی ضرورت ہے ۔ آیا ہم اس طرز زندگی کو باقی رکھنا چاہتے ہیں جو سامراج نے ہمیں ورثہ میں دی ہے اور جیسے ہم آج بھی باہر کے سرمایہ دارانہ نظام میں دیکھ رہے ہیں یا اسے بدلنا چاہتے ہیں ۔ ایک طرف اس سوال کو حل کرنے اور دوسری طرف اس سے پیدا ہونے والے جو مسائل ہیں ان کو صحیح پرسپکٹیو (Perspective) کے ساتھ غور کرنیکی ضرورت ہے ۔ لیکن کلاش (Clash) اور تصادم اس جگہ پیدا ہوتا ہے کہ کانگریس کے حکمران ۔ کانگریس کے نیتا جو گدیوں پر بیٹھے ہوئے ہیں ان سے جب یہ مطالبات کئے جاتے ہیں اور ان کو یاد دلایا جاتا ہے کہ ۶۰ سالہ قومی تحریک کے زمانہ کی چلائی ہوئی جد وجہد پر نظر ڈالیں اور پھر سوچیں کہ آزادی کی ان لڑائیوں کا یہ مقصد نہ تھا کہ ایک سامراج چلا جائے تو ایک دوسرا سرمایہ دارانہ نظام اس کی جگہ لے لے اور اس پر اس سامراج کی چھاپ بدستور قائم رہے ۔ انہیں یاد دلایا جاتا ہے کہ آپ نے خود اپنے پلیٹ فارم سے جو کہا تھا اور جو قرار داد دیں پاس کی تھیں اگر ان کو مشعل راہ بنایا جائے تو ایک خوشحال سماج کو قائم کرنے کے سلسلہ میں ہم آگے بڑھ سکتے ہیں ۔ اگر آپ ہمارے ساتھ ہیں تو ہمارا بھی دست تعاون آپ کے ساتھ ہے ۔ اس طرف سے جب یہ کہا جاتا ہے تو کہا جاتا ہے کہ حالات بدل گئے ہیں اور حالات کے ساتھ ساتھ تصورات بھی بدلتے ہیں اور معیشت بھی بدلتی ہے ۔

بہرحال مجھے یہ کہنا ہے کہ اس طریقہ کے عذرات اور اپنے آپ کو ڈیفنڈ (Defend) کرنے کے جو طریقہ ہیں ان سے کانگریس کے نیتاؤں اور حکمرانوں کو کسی کا تعاون بھی حاصل نہیں ہوسکتا ۔ عوام کا جو غصہ حکومت کے خلاف بڑھ رہا ہے ۔

اس کا اس طرح مقابلہ کر کے اس کو ختم نہیں کیا جاسکتا ۔ عوام کا غصہ جو بیروزگاری اور بھوک اور تنگدستی بڑھنے کی وجہ سے پیدا ہورہا ہے اس کو دور کرنا ہے تو دوسرے طریقے اختیار کرنے ہونگے اور جب تک ایک خوشحال سوسائیٹی قائم نہ ہو عوام مطمئن نہیں ہوسکتے اور اس وقت تک یہ انقلابی سیلاب یقیناً بڑھتا رہیگا ۔ اگر کانگریس عوام کا اعتماد حاصل کرنا چاہتی ہے تو اس کو صاف صاف میدان میں آنا چاہیئے ۔ لگی لپٹی سے کام نہیں چلے گا ۔ پانچ سالہ پلان بنانے سے یا بڑی بڑی اسکیمات بنانے اور انہیں شاندار نام دے دینے سے مسائل حل نہیں ہوتے ۔ بلکہ سوچنا چاہئے کہ ہمارے چھوٹے چھوٹے مطالبات کیا ہیں ۔ سوسائیٹی کا ہر فرد زندہ رہنے کا حق رکھتا ہے اور سماج میں اپنا صحیح مقام حاصل کرنا چاہتا ہے پہلے اس کو سوچنا چاہیئے ۔ ایک ایسا پلان بنالینے سے جس کا محض نام شاندار ہو لیکن اس کے راستے اتنے محدود ہوں کہ جس سے عام انسان کی زندگی پر کوئی خاص اچھا اثر نہیں پڑتا اور نہ اس سے اسے فائدہ ہوسکتا ہے ۔ اور پھر ان اعتراضات کے جواب میں یہ کہنا کہ پہلے پانچ سال تو بہت دقتوں کے ہونگے اس لئے کہ ان میں انوسٹمنٹ ہوگا ۔ روپیہ لگے گا اور روپیہ لگانے کے لئے لوگوں سے محصول اور قرضہ لینا پڑیگا اس کے بعد دوسرا پانچ سالہ پلان بنے گا اس میں تھوڑی سی سہولتیں حاصل ہوں گی اور پھر تیسرا پانچ سالہ پلان بنے گا تو کہیں پندرہ سال کے بعد ایک خوشحال سماج کی ابتداء کرسکینگے ۔ ایک ولفیر اسٹیٹ کو جنم دے سکینگے جیسا کہ آنریبل چیف منسٹر صاحب نے اپنی ایک تقریر میں اورنگ زیب کا حوالہ دیتے ہوئے فرمایا کہ انہوں نے اپنے بیٹے کو ایک خط میں یہ نصیحت کی کہ ۔

آہستہ خرام بلکہ مخرام

زیر قدمت ہزار جان است

تو یہ آہستہ خرامی ہو یا مخرامی ہو اس سے اب کام نہیں چلے گا ۔ لوگوں کے مصائب اور مشکلیں ان کی قوت برداشت سے باہر ہوگئی ہیں ۔ لوگ فوری اپنے مسائل کا کچھ نہ کچھ حل چاہتے ہیں اور فوری حل نکالا بھی جاسکتا ہے ۔ انہیں مسائل کو حل کرنے کے لئے ہم نے اپنے خیالات رکھے ہیں کہ کانگریس کا حکمران طبقہ اور ان کے نیتاوں کو معلوم ہو کہ ہم کیا چاہتے ہیں ۔ کس طور پر ان مسائل کو آپ حل کرسکتے ہیں ۔ کس طرح چین میں یہ مسائل حل کئے گئے ہیں میں روس کی مثال نہیں دونگا ۔ چین ہمارا ایک پڑوسی اور زرعی ملک ہے وہاں کے حالات ہندوستان کے حالات سے ملتے جلتے ہیں وہاں پچھلے تین سالوں کے اندر ان مسائل کو اس طرح حل کرلیا گیا کہ وہاں کی پیداوار اتنی زیادہ بڑھ گئی ہے کہ آج وہ دوسرے ملکوں کو اکسپورٹ کر رہا ہے ۔ وہاں بیروزگاری نہیں ہے ۔ وہاں کا بجٹ نہ صرف متوازن ہے بلکہ اوس کا ٦٠ فیصد سے زیادہ پبلک سکٹر اور قومی تعمیر کے کاموں پر صرف ہورہا ہے ۔ وہاں کے کسانوں پر محصول کم کردئے گئے ہیں اور یہ ایسی

حقیقتیں ہیں کہ جن سے انکار نہیں کیا جاسکتا ۔ جنہیں جھٹلایا نہیں جاسکتا ۔ چین سے ہمارے دوستانہ تعلقات ہیں ۔ ہندوستان اور چین کے کلچرل تعلقات دن بدن زیادہ مضبوط ہوتے جارہے ہیں ۔ یہاں سے وہاں اور وہاں سے یہاں لوگ پچھلے دوتین برسوں میں آتے جاتے رہے ہیں ۔ وہاں کے حالات کا سب پارٹیوں نے مطالعہ کیا ہے ۔ اور وہ سب ایک زبان اور ایک آواز ہوکر کہتے ہیں کہ چین میں بلاشبہ ایسا نظام قائم ہوچکا ہے جسے ایک مستحکم سماج کا آئنہ دار کہا جاسکتا ہے یعنے صحیح معنوں میں اوس کو عوامی سماج کہا جاسکتا ہے ۔ جس میں اکسپلائٹیشن کا سوال باقی نہیں رہا ۔ لوٹنے والا طبقہ ختم ہو رہا ہے ۔ لٹنے والا طبقہ آگے بڑھ رہا ہے ہرشخص تعلیم حاصل کر رہا ہے ۔ ابتدائی تعلیم سے لیکر یونیورسٹی کی تعلیم تک کا سب کو موقع دیا جارہا ہے ۔ اور پوری تعلیم مفت ہے وہاں کا بجٹ اس قدر مستحکم ہو رہا ہے کہ آج وہاں یہ خطرہ باقی نہیں رہا کہ ان کا بجٹ دیوالیہ ہوسکتا ہے یا ان کی حکومت دیوالیہ ہو جائیگی ۔ لیکن یہاں ایسا خطرہ ہمارے سامنے آرہا ہے ۔ وہاں زمین اور صنعتوں کا مسلہ خیر و خوبی کے ساتھ حل کردیا گیا ہے ۔ یہ متفقہ طور پر سب کہینگے ۔ اس میں کسی پارٹی یا گروپ کا سوال نہیں ہے میرے پاس وقت نہیں ورنہ میں اون کانگریس کے لوگوں کے کوٹیشنس پڑھتا جو وہاں جا کر آئے ہیں لیکن کیا وجہ ہے کہ آج ہمارا دیش ویسی ترقی نہیں کر رہا ہے ۔ ہمارے حالات چین کے حالات سے ملتے جلتے ہیں بلکہ وہاں کے پہلے کے حالات سے بہتر ہیں کیونکہ چین تو مسلسل جدوجہد اور لڑائیوں کے دور سے گزرتا رہا ہے ۔ اوس کو مسلسل سامراج کے خلاف لڑنا پڑا ہے وہاں مسلسل ہنگامے چلتے رہے ہیں ۔ جب اس دور سے نکل کر بھی چین ترقی کرسکتا ہے تو کیا ہمارے عوام محنت نہیں کرسکتے کیا ہمارے عوام کو اپنے ملک سے محبت نہیں ہے ۔ کیا ہمارے کسان ۔ ہمارے مزدور ہمارا محنت کش طبقہ اور درمیانی طبقہ اپنی اور اپنے ملک کی خوشحالی نہیں چاہتا یقیناً چاہتا ہے ۔ لیکن فرق اتناہی ہے کہ جو بر سراقتدار طبقہ ہے وہ ایک دوسرے نقطہ نظر سے سوچ رہا ہے ۔ یہاں حکومت ایک مکسڈ اکانمی لانا چاہتی ہے ۔ ایک صف میں برلا کو کھڑا کیا جاتا ہے اور بظاہر اسی کے ساتھ کسان کو بھی کھڑا کیا جاتا ہے گویا " ایک ہی صف میں کھڑے ہوگئے محمود و ایاز " کرنا چاہتے ہیں لیکن جب صف سے نکلتے ہیں تو محمود محمود رہتا ہے اور ایاز ایاز — آج ہماری حکومت کی جانب سے بڑے بڑے جاگیرداروں ۔ راج پرمکھوں اور رجواڑوں اور سرمایہ داروں کی سرپرستی ہورہی ہے ۔ اور بڑے زور و شور سے ہورہی ہے ۔ ایک طرف تو اون کے حقوق کا تحفظ کیا جاتا ہے اور دوسری طرف کہا جاتا ہے کہ کسانوں کے فائدہ کے لئے ہم قانون بنارہے ہیں ۔ قومی صنعتی ترقی کے لئے روپیہ صرف کررہے ہیں بیروزگاری کا مسئلہ دور کرنے کے لئے پانچ سالہ منصوبہ ہے اور دوسرے مختلف کام کررہے ہیں ۔ لیکن جو نتائج ہمارے سامنے آرہے ہیں وہ مایوس کن ہیں ۔ کیونکہ بیروزگاری دن بدن

بڑھ رہی ہے - گرانی بڑھ رہی ہے - کہیں سے چند اعداد و شار لیکر یہ بتانا کہ حیدرآباد میں پچھلے چند مہینوں میں پیداوار اچھی ہوگئی ہے اور اسکی وجہ سے قیمتیں گررہی ہیں یہ دھوکہ اور خود فریبی ہے - جس میں ہمارے عوام اور جنتا آنے والی نہیں - پیدا وار اگر کچھ اچھی ہوگئی ہے تو وہ بارش کی وجہ سے - بارش اگر اچھی طرح نہیں ہوتی ہے تو پیدا وار خراب ہوتی ہے - لیکن دیکھنا یہ ہیکہ ہمارے زمین کو سونا اگلنے والی زمین بنانے کے لئے ہم نے کیا کیا - اس کا جواب نفی میں ہے - ہماری آمدنی کے وسائل کو کیا اس طرح استعمال کیا گیا کہ ہمارے دیش کا مالیہ مضبوط ہوسکے - اس کا جواب بھی نفی میں ملتا ہے - مجھے پانچ سالہ منصوبہ میں اس کا جواب نہیں ملتا - میں نے اس کو پڑھا ہے - اوسکا دیباچہ بھی پڑھا ہے - اس پر پچھلے تین سال سے عمل ہورہا ہے پانچ سال میں سے تین سال گزر چکے ہیں - حیدرآباد میں پندرہ سولہ کروڑ روپیہ خرچ ہوچکا ہے - لیکن وہ کس طرح خرچ ہوا ہے کیا اس کا رٹرن ہم کو ملیگا - اگر پندرہ بیس سال کے بعد ہم کو اس کا رٹرن ملنے والا ہے تو میں خاص طور پر کانگریس پارٹی سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس عرصہ میں یہ دنیا بدل جائیگی - انقلابی راستہ جس کی طرف عوام بڑھ رہے ہیں وہ اون مفادات کو اپنے راستہ سے ہٹادیگا - اون لوگوں کو ہٹادیگا جولیت و لعل میں پڑے ہوئے ہیں جو پس و پیش کی باتیں کررہے ہیں - جو کہتے ہیں کہ ہتیلی پر ہم سرسوں نہیں جاسکتے - آہستہ آہستہ چلنا چاہتے ہیں - میں کہونگا کہ آپ اس رفتار سے اوس مقصد تک نہیں پہنچ سکتے جو عوام کے سامنے ہے - انقلاب کے نام سے ڈرنے والوں کو میں یہ جتادینا چاہتا ہوں اون کو وارننگ دینا چاہتا ہوں کہ وہ دنیا کے حالات پر نظر ڈالیں اپنے اردگرد کے حالات پر نظر ڈالیں اپنے دیش کے حالات پر نظر ڈالیں - جنوبی ہند میں کیا ہورہا ہے ٹراونکور کوچین - آندھرا اور حیدر آباد میں کیا ہورہا ہے - دو سال قبل اگرچیکہ کانگریس ووٹ لیکر یہاں آئی تو ہے لیکن اپنے پروگرام - اپنی پالیسی اور اپنے کارناموں کو لیکر آج اگر وہ لوگوں کے سامنے جائے اور پوچھے کہ آپ کانگریس کے متعلق کیا رائے رکھتے ہیں - کیا تاثرات ہیں آپ کے کتنے آدمی کانگریس سے خوش ہیں تو اس کا جواب مایوس کن ملے گا - اسلئے میں کانگریس پارٹی - کانگریس کے حکمرانوں اور خاص طور پر حکومت کے منسٹروں سے جو ان امور کو سر انجام دینے والے ہیں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اب بھی آپکو موقع ہے کہ اگر وہ اپنی حب الوطنی کا اظہار کرنا چاہتے ہیں تو اس طریقہ سے کرسکتے ہیں کہ عوام کے مطالبات کو پورا کرنے کے لئے آگے بڑھیں اور اون جماعتوں سے ہاتھ ملائیں جو اب تک بھی اپنے راستہ پر چل رہی ہیں جنھوں نے اب تک موقع پرستی کا راستہ اختیار نہیں کیا بلکہ ایمانداری کے ساتھ عوام کی خدمت کر رہے ہیں کانگریس اون سے تعاون کر کے اوس منزل پر پہنچ سکتی ہے اور سماج میں خوش حالی پیدا کرسکتی ہے اب بھی موقع ہے - لیکن اس دو عملی اور یہ دو رخی کو جاری نہیں

رهنا چاهئے ۔ کہا جاتا ہے کہ هم زندگی کے هرشعبه میں ترقی کررہے هیں ۔ هم عوام کی خدمت کر رهے هیں لیکن عملی طور پر جو کچھ سامنے آرها هے اوس سے معلوم هوتا هے که کسی شعبه میں بھی ترقی نہیں هو رهی هے ۔ صنعتیں دن بدن بند هوتی جارهی هیں ۔ زرعی حالت خراب هوتی جارهی هے ۔ بیروزگاری بڑھ رهی هے بھوک اور افلاس بڑھ رها هے ۔ پرکیپیٹا آمدنی کم هوتی جارهی هے ۔ دیشمکھ صاحب نے جو حساب پیش کیا هے وه ایک بڑا دهوکه هے اگر صرف یه دیکھا جائے که کسانوں ۔ مزدوروں اور غریب طبقه کی پرکیپیٹا آمدنی دس سال پہلے کیا تھی اور آج اون کی آمدنی کا اوسط کیا هے تو معلوم هوگا که انکی پرکیپیٹا آمدنی کم هوتی جارهی هے .. آپ ادهر اودهر کے اعداد و شمار اور برلاؤں اور ٹاٹاؤں کی آمدنی کو اس میں شمار کر کے کہتے هیں که آمدنی بڑھ رهی هے ۔ سو کروڑ روپیه سالانه برطانوی سامراج هر سال سود اور منافع کی شکل میں ملک سے باهر لیجارها هے خود ریزرو بنک آف انڈیا کی رپورٹ کے اعداد و شمار دیکھیں تو اس کا پته چلے گا که آج بھی کتنا روپیه سالانه منافع او، سود کی شکل میں باهر جاتا هے اس کے علاوه ایک دوسرا خطرناک دشمن همارے کارخانوں میں مدرسوں میں دفتروں اور بازاروں میں کھیتوں میں ۔ گھس رها هے ۔ اور وه هے امریکی سامراج ۔ جو اپنے گنده لٹریچر اور پرانے نا پاک منصوبوں کے ذریعه پاکستان کو هڑپ کرنے کے بعد هندوستان کی جانب بڑھ رها هے ۔ اور اوس پر دباؤ ڈال رها هے که هندوستان بھی اس کے حلقے میں آجائے اس خطرے کا مقابله کرنے کیلئے عوام کی طاقت اور عوام کا اعتماد حاصل کرنا ضروری هے ۔ لیکن اس کے لئے سب سے ضروری هے که عوام کو ریلیف دیا جائے ۔ اون کی خوشحالی کے لئے پلان بنانا هوگا ۔ آپ جس طرح کے پلان بنا رهے هیں ویسے پچاس پلان بنانے سے بھی کام نہیں چلے گا ۔ بڑے بڑے پلان بنانے کے لئے کافی دولت صرف هو گی لیکن فوری طور پر کسانوں ۔ مزدوروں درمیانی طبقه کے لوگوں ۔ کلرکوں اور دوسرے محنت کش لوگوں کو جو اور پیشوں میں مصروف هیں ریلیف دینا چاهیئے ۔ اور هم یه ریلیف دے سکتے هیں بشرطیکه هندوستان کی دولت اور اس کے قومی وسائل و ذرائع صحیح طور پر استعمال کئے جائیں ۔ اس صورت میں هی هم عوام کا اعتماد حاصل کرسکتے هیں ۔ وه اعتماد وه طاقت ایسی هوسکتی هے ۔ که اگر خدانخواسته ملک پر حمله کا خطره هو (جیسا که دنیا کے حالات بتا رهے هیں بھیانک مستقبل همارے سامنے آرها هے) تو اس کی روک تھام کے لئے وه کام آسکتا هے ۔ اس کے لئے کاغذی منصوبوں کو ایک طرف رکھ کر عملی منصوبوں کو سامنے لایا جانا ضروری هے ۔ جس کا هندوستان کی جمله لفٹسٹ جماعتیں مطالبه کر رهی هیں اور جو دیش کے ایک بڑے سکشن کی نمائندگی کرنے والی هیں ۔ میں مانتا هوں که کانگریس کی جانب سے بھی یه دعوی کیا جاسکتا هے که هم بھی عوام کے نمائندے هیں ۔ لیکن یہی حال رها اور یہی پالیسیاں رهیں تو آئینده دو تین سالوں میں یہی عوام کے چنے هوئے لوگ عوام کے نمائندے عوام کا اعتماد قطعی حاصل نہیں کرسکیں گے ۔ یه دیکھنا هوگا که اگلے الکشن کے

وقت آن کا یہ دعوی کہاں تک صحیح ثابت ہوسکتا ہے ۔ اس وقت الکشن کے لئے کیا آپ کو دوسرے ذرائع تو استعمال کرنا نہیں پڑینگے ۔ آج ہندوستان کے انقلابی قوتیں نئے سماج کے علمبردار کے روپ میں سامنے آرہے ہیں ۔ ایک نیا انقلابی انسان پیدا ہوچکا ہے ۔ اب ہمیں مسائل پر ٹھنڈے دل سے غور کرنا چاہیئے اس کے بعد ہی ہم اور آپ مل جل کر ایسی فضاء پیدا کرسکتے ہیں ۔ ایسا اتحاد اور ایسی یکجہتی پیدا کرسکتے ہیں کہ اگر باہر کی قوتیں ہماری آزادی کو غصب کرنا چاہیں تو اس کا مقابلہ کیا جاسکے ۔ لفٹسٹ پارٹیوں کی جانب سے اور خاص طور پر ہماری پارٹی کی جانب سے برابر یہ اعلان کیا جاتا رہا ہے کہ اگر ایسی صورت حال پیش آئے تو سب پارٹیوں کا مکمل اتحاد کانگریس پارٹی حاصل کرسکتی ہے ۔ لیکن یہ حالات پیدا نہ ہوئے تو کیا ہو گا میں ان اندیشوں کا اظہار اس وقت نہیں کروں گا ۔ کیونکہ اس وقت بجٹ پر ڈسکشن ہورہا ہے ۔

بجٹ کے موضوع پر آتے ہوئے میں یہ عرض کروں گا کہ ہمارے سامنے جو فوری مسائل ہیں یہ بجٹ ان کی طرف توجہ نہیں دیتا ۔ اس لئے یہ بجٹ ایک ناکام بجٹ ہے ۔ میں اگر یہ کہوں تو بیجا نہ سمجھا جائے کہ یہ بجٹ ایک بیمار ادمی کی طرح ہے جو قریب مرگ ہے ۔ اس کے چہرے پر زردی چھائی ہوئی ہے ۔ اس کی صحت کی اگر چیکہ توقع نظر نہیں آرہی ہے ۔ لیکن مشترکہ کوشش سے اگر اس کا علاج کیا جائے تو اس کو صحت یابی ہوسکتی ہے ۔ اس کی صحت یابی کے لئے جو ٹانکس دینا چاہیئے ان کا اس میں ذکر نہیں ہے ۔ اگر ذکر بھی آتا ہے تو سرسری طور پر نظر آتا ہے ۔ میں آنریبل فینانس منسٹر ۔ دوسرے ارباب مقتدر اور کانگریس پارٹی سے آخر میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ہمارے ان سوالات کو حل کرنے کے لئے بجٹ کا ڈھانچہ اس طرح سے بنانے کی کوشش کی جانی چاہیئے جس طرح کے عوام کے تقاضے اور ان کے مطالبات ہیں ۔ بجٹ اسپیچ میں آنریبل فینانس منسٹر صاحب نے جن اندیشوں کا اظہار کیا یا جن توقعات کا اظہار کیا اون کو ایک طرف رکھتے ہوئے حقیقی حالات آبجکٹیو تجاویز کی جانب اشارہ کروں گا اور چند چھوٹی چھوٹی باتوں کی جانب توجہ دلاتے ہوئے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں ۔ بجٹ اسپیچ میں بیروزگاری کا ذکر کیا گیا ہے ۔ بیروزگاری بھیانک طریقہ پر بڑھ رہی ہے ۔ امپلائمنٹ اکسچینج کے اعداد و شمار دیکھنے کی ضرورت نہیں کیونکہ وہاں کتنے لوگ جاکر کارڈ حاصل کرتے ہیں کہنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ سرسری اندازے کے مطابق یہ کہا جاسکتا ہے کہ حیدرآباد ریاست میں تقریباً ڈھائی لاکھ آدمی ایسے ہیں جو بالکل بیروزگار ہیں یا ان کی ایک بڑی تعداد بیروزگار ہے ۔ اور اس میں مسلسل اضافہ ہوتا جا رہا ہے ۔ پچھلے چند مہینوں میں دس ہزار آدمی بیروزگار ہوگئے ہیں ۔ پرانی مل اور رسد میں تخفیف کی وجہ سے جو لوگ بیکار یا بیروزگار ہوگئے ہیں اگر ان کے خاندان والوں کو بھی ملالیا جائے تو یہ تعداد بڑھ جاتی ہے ۔ ایک طرف تو بیروزگاری بڑھتی جارہی ہے اور دوسری طرف دوسرے پہلو بھی ہیں یعنی ہمارا تعلیمی پہلو ۔ ہمارا ثقافتی پہلو اور معاشی پہلو ۔ ان سے بھی غفلت اور بے پروائی برتی جارہی ہے ۔ جس کا نتیجہ یہ ہے کہ ہمارے عوام ذہنی اور

معاشی بحران میں مبتلا ہوگئے ہیں۔ اگر کسی سلسلہ میں درخواستیں دیجاتی ہیں نمائندگیاں کی جاتی ہیں تو کوئی توجہ نہیں دی جاتی ہے۔ اس کے لئے عوام کو جاکر منسٹروں کے مکانوں کی دیواروں سے سرٹکرانا پڑتا ہے۔ اور چھوٹی چھوٹی باتیں منوانے کے لئے ان کی خوشامدیں کرنی پڑتی ہیں پھر بھی کوئی نتیجہ نہیں نکلتا میں اس سلسلہ میں ایک مثال دوں گا۔ مجھے معلوم نہیں کہ متعلقہ منسٹر موجود ہیں یا نہیں۔ حیدرآباد کے اندر سی۔ آئی۔ بی کے مکانات کا مسئلہ پچھلے سات آٹھ مہینوں سے حکومت کے سامنے آرہا ہے۔ ان کے کرایوں میں اضافہ کیا گیا ہے اس کے لئے ریپریزنٹیشن ہوا تو منسٹر صاحب نے کہا کہ ہمدردانہ غور کیا جائیگا۔ لیکن آج تک کوئی ہمدردانہ غور نہیں ہوا۔ ہر ہمدردانہ غور بھول بھلیاں میں پڑکر ختم ہوجاتا ہے۔ سی آئی۔ بی کے مکانوں میں رہنے والے پانچ ہزار لوگوں کا یہ مسئلہ ہے۔ میں مثال کے طور پر یہ چیز پیش کررہا ہوں ورنہ ایسے ہزاروں مسائل ہیں جن کو اب تک حل نہیں کیا جاسکتا۔ حال ہی میں ان مکانات کے رہنے والے لوگوں سے کہدیا گیا ہے کہ آٹھ دن کے اندر مکانات خالی کردئے جائیں۔ متعلقہ منسٹر یہ بتائیں کہ کیا اس کے معنی یہ نہیں کہ ان مکانات میں رہنے والے ان کو چھوڑ کر چلے جائیں۔

جس طرح زمین سے کسانوں کو بیدخل کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے اوسی طرح مکانوں سے ان غریبوں کا تخلیہ کرانے کی سعی کی جا رہی ہے اور اس طرح انکو سر چھپانے کا جو آسرا ہے اوسکو ختم کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔ اون سے تین مہینے کے پیشگی کرائے کا مطالبہ اوس بڑھائی ہوئی شرح کرایہ کے لحاظ سے کیا جا رہا ہے جو دو سو فیصد تک بڑھائی گئی ہے اور انکو یہ دھمکی دیجا رہی ہے کہ اگر اسکی تکمیل نہ کی جائے تو ان مکانوں میں نہیں رہ سکتے مکانات چھوڑنا پڑیگا۔ ایک چھوٹا سا مسئلہ جو چند ہزار لوگوں سے متعلق ہے اطمینان بخش طریقہ پر حل نہیں کیا جا رہا ہے اور وہ غریب سخت پریشان ہیں۔ جب کوئی ریپریزنٹیشن کیا جاتا ہے جب کوئی نمائندگی کی جاتی ہے یا ارباب اقتدار سے رجوع ہوتے ہیں تو اون سے ہمدردانہ غور کا وعدہ تو کیا جاتا ہے اسی طرح کا وعدہ تین چار مہینے پہلے بھی کیا گیا تھا لیکن ابتک ایفا نہیں کیا گیا جسکی وجہ سے ہم یہ سمجھنے پر اپنے آپ کو مجبور پاتے ہیں کہ اسطرح کے ہمدردانہ غور کے وعدے محض ٹال مٹول کی خاطر کئے جاتے ہیں۔ اگر حکومت کی اس ٹال مٹول کی پالیسی کے بارے میں مختلف گوشوں سے کچھ آوازیں بلند ہوتی ہیں یا یہ باتیں حکومت کے علم میں لائی جاتی ہیں اور اس طرف توجہ کرنے کے لئے کہا جاتا ہے تب بھی حکومت ان امور پر غور کرنے کے لئے تیار نہیں معلوم ہوتی۔ اسکے ساتھ ساتھ بہت سے شہری مسائل ہیں دیہاتی مسائل ہیں کسانوں کے مسائل ہیں اور صنعتی مسائل ہیں جن سے لاپروائی برتی جا رہی ہے۔ ان سارے مسائل کا ایسا بوجھ ہے جسکو ہٹانے کے لئے محنت کش عوام اور درمیانی طبقے سے تعلق رکھنے والے افراد ہر حکومت کے دور میں دو ڈھائی سال سے مسلسل کوشش کررہے ہیں لیکن ابتک وہ منزل تک نہیں پہنچ سکے۔ منزل تک پہنچنا تو ایک طرف

وہاں نشان منزل بھی نہ پاسکے - جب کوئی راستہ اس طرف سے بتایا جاتا ہے تو یہی جواب ملتا ہے کہ روپیہ نہیں ہے - اس بارے میں ایک فارسی مقولہ میں عرض کرونگا (چیف منسٹر صاحب تشریف نہیں رکھتے ہیں وہ فارسی سے شغف رکھتے ہیں اور فلسفی بھی ہیں) مشہور ہے کہ '' تا تریاق از عراق آوردہ شود - مارگزیدہ مردہ شود،، یعنے سانپ کے کاٹے کا علاج کے لئے عراق سے جبتک تریاق لایا جائیگا سانپ کا کاٹا ہوا شخص مر بھی جائیگا - یہاں کا محنت کش طبقہ کسان مزدور اور درمیانی طبقہ کا یہی حال ہے آج وہ مرنے کے قریب ہے پچھلے سال جب ملک میں مہنگائی زیادہ بڑھی اور کچھ علاقوں میں قلت کے آثار رونما ہوئے تو کئی لوگ فاقہ کشی سے مر گئے اور آج جو زندہ ہیں وہ بھی کسی طرح زندہ نہیں کہے جاسکتے بلکہ زندہ درگور بن گئے ہیں یہ حالات ہیں یہ مسائل ہیں ایسے چھوٹے چھوٹے مسائل ہیں کہ انکا حل کرنا ضرور ہے - جب ان امور کے متعلق کہا جاتا ہے تو حکومت کے ارباب اقتدار اس سے چشم پوشی کرتے ہیں - آج حالات ایسے ہیں کہ انسان اپنے چھوٹے موٹے معمولی گھریلو بجٹ کو متوازن کرنا چاہے تو نہیں کرسکتا - خود حکومت جو وسیع ذرائع آمدنی رکھتی ہے اپنے ملک کے بجٹ کو بیالنس نہ کرسکی تو اس سے اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ لاکھوں کروڑوں انسانوں کے گھریلو بجٹ کا کیا حال ہوگا وہ کسطرح چل رہے ہوں گے - کسان اور مزدور طبقے کو لیجئے - درمیانی طبقہ کو لیجئے - کلرکس وغیرہ اور عام بیوپاریوں کو لیجئے - انکی آمدنیوں کے تناسب کا حکومت کے ذرائع آمدنی سے کیا تناسب ہے اسکا اندازہ کیجئے اور پھر غور کیجئے کہ ان کی آمدنیوں کا تناسب کتنا کم ہے - جو تنخواہ افسروں کو ملتی ہے اور جو منافع سرمایہ داروں کو حاصل ہو رہے ہیں اوس لحاظ سے چھوٹے طبقات کی آمدنی کا تناسب کیا ہے اور اسکے ساتھ ساتھ اسپر بھی غور کیجئے کہ گرانی کا تناسب کیا ہے - زمانہ گذشتہ سے حال کا تطابق کیجئے تو آپکو اندازہ ہوگا کہ گرانی کس درجہ زیادہ ہوگئی ہے - پھر اندازہ کیجئے کہ انکی زندگیاں کسطرح گزرتی ہونگی - کسی بھی گھر میں جائیے اور دیکھئے کہ انکی زندگی کس انداز سے گزر رہی ہے - انکے کنبہ کے لوگ مختلف کام کرتے ہیں اسکے باوجود کس تنگ حالی عسرت و مصیبت سے انکی گزر بسر ہوتی ہے - حیدرآباد کے بجٹ کا یہ ہے وہ معاشی اور صنعتی پہلو جس پر میں نے اپنے خیالات کا اظہار کیا ہے - اپنی جانب سے اور اپنی پارٹی کی جانب سے یقیناً بڑی خوشی کے ساتھ نہایت فراخدلی کے ساتھ مشورے دینے اور دست تعاون بڑھانے کے لئے ہم تیار ہیں لیکن اس ہاتھ سے کانگریس کے ہاتھ ملنے میں اور ملکر آگے بڑھنے میں جو دقتیں ہیں وہ بنیادی دقتیں ہیں - نظریات کا بنیادی فرق ہے - اس فرق کا موجودہ جو انداز ہے اس سے نہیں مٹایا جاسکتا جب تک کانگریس کم از کم کچھ لین دین کی پالیسی پر کاربند نہوں یہ مسائل حل نہیں ہوسکتے - جن حالات سے ہم گزر رہے ہیں وہ اسلئے باقی ہیں کہ ابھی تک سرمایہ دارانہ و جاگیردارانہ مفادات باقی ہیں - مفادات حاصلہ کو باقی رکھنے کا تصور کار فرما ہے - مقصود یہ ہے کہ انکو فائدہ پہنچے - ان باتوں کے خلاف آواز اٹھائی جاتی ہے تو ایک آنریبل ممبر فرماتے ہیں کہ آپکے پیٹ میں

کیوں درد ہو رہا ہے ۔ لیکن میں کہونگا کہ یہ وہ حالات ہیں جنہیں دیکھکر پیٹ میں نہیں بلکہ دل میں درد ہوتا ہے ۔ جو حقیقت شناس لوگ ہیں جو ایماندار لوگ ہیں ان کا ان حالات کو دیکھکر تڑپ اٹھنا ایک فطری امر ہے ۔ انکے دل میں دردکا ہونا لازمی ہے ۔ ہم دیکھتے ہیں کہ ایک طرف تو وہ ساہوکار اور زمیندار ہیں جو عیش و آرام کی زندگی بغیر کسی محنت کے تن آسانی کے ساتھ گزار رہے ہیں اور دوسری طرف لاکھوں کروڑوں محنت کش عوام ہیں درمیانی طبقے کے لوگ ہیں جو باوجود شبانہ روز کی محنت کے پیٹ بھر روزی نہیں پاسکتے اور دوسرے مفاد برست طبقات برابر لوٹ کھسوٹ کی پالیسی پر کار بند ہیں ۔ یہ وہ حالات ہیں جنہیں دیکھکر دل میں درد ہونا لازمی ہے ۔ میری حکومت سے اور کانگریس پارٹی میں جو ایماندار اور سچائی پسند لوگ ہیں ان سے درد مندانہ اپیل ہے کہ ہماری صنعتی ترقی زرعی خوش حالی اور آمدنی کی فراوانی کے جو مسائل ہیں ان پر سنجیدگی کے ساتھ غور کیا جائے اور یہ سوچا جائے کہ ان مقاصد کو کسطرح سے حاصل کیا جاسکتا ہے ۔ اور کون کونسی اسکیم بنائی جاسکتی ہیں جنکو روبعمل لاکر ہم منزل مقصود تک پہنچ سکیں اور پبلک سکٹر کو آگے بڑھانے کے لئے ہم کچھ کام کرسکیں ۔ اگر ایسے حالات پیدا ہوجائیں اور ہمارے مالیہ کا بیشتر حصہ عوام کی بہبودی و ترقی پر صرف کیا جائے تو ہم کہہ سکتے ہیں کہ بجٹ خسارے کا ہوتو کوئی ہرج نہیں ہے ۔ اگر محنت کش عوام پر بار ڈالے بغیر ٹیکسس عائد کئے جاتے ہوں تو کئے جائیں ۔ اور پانچ کروڑ خسارے کا بجٹ بھی بنتا ہوتو بننے دیجئیے یقیناً ہم اسکا خیر مقدم کرینگے ۔ لیکن ہم اپنی منزل مقصود تک پوری طرح نہ بھی پہنچ سکیں تو کم ازکم ہمیں یہ سمجھنے کی تو گنجائش ہوگی کہ ہم منزل کے قریب قریب پہنچ گئے ہیں ۔ ان الفاظ کے ساتھ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں ۔

شری سری ہری ۔ مسٹر اسپیکر سر ۔ اس بجٹ کے بارے میں جو مباحث کل سے ہو رہے ہیں ان میں اپوزیشن کی جانب سے اس بجٹ کو کئی نام دئے گئے ہیں ۔ بعض لوگوں نے کہا کہ جاگیر داری بجٹ ہے ۔ بعضوں نے کہا کہ یہ نظام شاہی بجٹ ہے اور بعضوں نے کہا کہ یہ سامراجی بجٹ ہے اور کسی نے کہا کہ یہ دیوالیہ بجٹ ہے ۔ اسطرح بجٹ کو کئی نام دئے گئے ہیں لیکن میں صرف اتنا کہونگا کہ یہ سنہ ۱۹۵۴ - ۱۹۵۵ع حیدرآباد اسٹیٹ کا بجٹ ہے ۔ یہ بجٹ دیوالیہ بجٹ نہیں ہے ۔ میں سمجھتا ہوں کہ اسکے سمجھنے میں کچھ تسامح ہوا ہے ۔ بتایا گیا ہے کہ ۶۳ کروڑ کا قرضہ ہے ۔ سوا دو کروڑ

سلک رہ جائیگی ۔ شاید ان ہندسوں کو دیکھکر مایوس ہوگئے ہیں لیکن یہ مایوسی کچھ ٹھیک نہیں ۔ مایوسی کی کوئی وجہ نہیں ہے ۔ اگر کسی کو یہ معلوم ہوتا کہ حکومت کو وصول شدنی رقومات کتنی ہیں تو اسکا اندازہ ہوتا کہ حکومت کی مالیت کتنی ہے ایسی صورت میں دیوالیہ بجٹ کہنے کی ضرورت پیش نہ آتی ۔ اسکے ساتھ ساتھ سامراجی بجٹ بھی کہا گیا ہے ۔ سامراجی بجٹ کے سلسلہ میں یہ دلیل پیش کی گئی

ہے کہ کانگریس نے سنہ ۱۹۴۷ع میں انگریزوں کے ہاتھ سے حکومت حاصل کی لیکن جس زمانے میں جس طرز پر انگریزوں کی حکومت میں کام چلا کرتا تھا اوسی نمونے پر آج بھی کام چل رہا ہے .. وراثت میں وہ ساری چیزیں ملی ہیں .. سامراجی بجٹ کہنے کے یہ وجوہات بتائے گئے ہیں - میں بتاؤنگا کہ واقعی طور پر حکومت کانگریس کے ہاتھ میں آنے کے بعد کونسی کونسی تبدیلیاں کی گئیں - خاص کر حیدرآباد اسٹیٹ کے متعلق اگر ہم غور کریں تو معلوم ہوگا کہ یہ ایک مطلق العنان حکومت تھی وہ ختم ہوچکی ہے - اسکے بعد سب سے بڑا جو کام کیا گیا وہ یہ ہے کہ حیدرآباد اسٹیٹ کے چالیس فیصد رقبے پر جاگیر داروں کا قبضہ تھا وہ برخاست کردیا گیا - یعنی جاگیری عوام پر جو زیادتیاں ہوتی تھیں وہ ختم ہوگئیں اور جاگیری ایریاز پر جو ڈبل - ٹربل (Double-Trible) دھارے عائد کئے جاتے تھے وہ بند ہوگئے ہیں اس طرح جاگیر داری کو ختم کرتے ہی لینڈ ٹیننسی (Land tenancy) کا قانون پاس کیا گیا اسکی وجہ سے زمینداری بھی ختم ہوگئی - اس بجٹ کو پولیس بجٹ کا نام بھی دیا گیا ہے - اس بجٹ میں پولیس کے نام سے اخراجات شامل ہونے کی وجہ سے شاید اسکو پولس بجٹ کا نام دیا گیا ہے - لیکن اس پرشاید غور نہیں کیا گیا کہ پہلے پولس کے نام سے جو اخراجات بجٹ میں شامل تھے اوسکی بہ نسبت اس سال کمی ہوگئی ہے - سنہ ۵۲ - ۱۹۵۳ع میں ایکچوول ۳ کروڑ ۷۹ لاکھ ۹۰ ہزار یعنی تقریباً چار کروڑ روپیہ پولیس کی مد کے لئے رکھا گیا تھا اور اب سنہ ۱۹۵۴ - ۵۵ع کے لئے تین کروڑ ۴۲ لاکھ ۴۵ هزار روپیہ رکھا گیا ہے - اس طرح گویا تقریباً ۷۰ لاکھ کی کمی ہوگئی ہے - اور یہ تو رقم بھی جو رکھی گئی ہے وہ پچھلی ہسٹری (History) کے لحاظ سے اگر دیکھا جائے تو ناواجبی نہیں ہے - حیدرآباد اسٹیٹ کے لئے پولیس کی ضرورت ہے - پچھلے واقعات اپنے سامنے رکھیں تو معلوم ہوگا کہ واقعی طور پر حیدرآباد میں پولیس کی ضرورت ہے - حیدرآباد کی آبادی کے لحاظ سے اگر ہم پولیس کے اخراجات کو تقسیم کریں تو فی کس ڈیڑھ روپیہ خرچہ آتا ہے - پولیس کا کام ساری آبادی کی جان مال عزت اور جائداد کی حفاظت کرنا ہے - ان تمام چیزوں کی ذمہ داری پولیس پر ہے اور اسی سے عوام کو طمانیت ہوتی ہے - اسلئے میں کہونگا کہ پولیس پر جو فی کس ڈیڑھ روپیہ خرچہ کیا جا رہا ہے وہ زیادہ نہیں ہے - مثال کے طور پر ہم دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ اگر ہم جائداد کی حفاظت کے لئے اور مکان کی حفاظت کے لئے کسی کو ملازم رکھیں تو اوس ملازم کی تنخواہ کا مالک مکان پر جو خرچہ عائد ہوتا ہے وہ اسکو برداشت کرنا ہی پڑتا ہے ورنہ جائداد کی حفاظت نہیں ہوسکتی اس لحاظ سے دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ اتنے بڑے اسٹیٹ اور اتنے بڑے پاپولیشن کی حفاظت و نگرانی کے لئے پولیس کا ہونا ضروری ہے اور یقیناً ضروری ہے - جو رقم رکھی گئی ہے وہ زیادہ نہیں ہے - صفحہ (۸۳) اگر ہم دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ سال گذشتہ اور سال پیوستہ کے مقابلہ میں تعمیری کاموں پر زیادہ رقمیں رکھی گئی ہیں مثلاً ایجوکیشن ڈپارٹمنٹ پر زیادہ خرچہ ہو رہا ہے - مڈیکل ڈپارٹمنٹ کے لئے زیادہ رقم رکھی گئی ہے - پبلک ہلتھ

اگریکلچر ویٹرنری ۔ سیول ورکس۔ وغیرہ ان مدات بر زیادہ رقومات خرچ کئے جارہے ھیں اگر ان زائد اخراجات کوناجائز تصور کریں یا غیر ضروری تصورکریں تو ھم اس کو صحیح نہیں سمجھینگے ۔وجہ یہ ھے کہ یہی محکمے ھیں جو ملک میں رھنے والوں کے معیار زندگی کو بڑھاتے ھیں ۔ ان محکمہ جات کے ذریعہ ھم عوام کے معیار زندگی کو بڑھاسکتے ھیں ۔میں سمجھتا ھوں کہ آنربل ممبرس نے کیپیٹل اکسپنڈیچر (Capital expenditure) پر نظر نہیں ڈالی ھے ۔ اگر اسکو دیکھیں تو پتہ چلیگا کہ ۵۴ - ۵۵ میں کیاپیٹل اکسپنڈیچر کے نام سے حیدرآباد اسٹیٹ میں ۸ کروڑ ۸۴ لاکھ ۵۶ هزار روپے کا خرچ پایا جاتا ھے ۔کیاپیٹل اکسپنڈیچر کے معنی یہی ھیں کہ یہی جائداد ھمارے ملک میں رھنے والی ھے ۔ اور اس جائداد سے حکومت کو ھمیشہ استفادہ کا حق رھیگا ۔ اس سلسلے میں میں یہ کہونگا کہ سال گزشتہ انعام برخاست کرنے کے بارے میں بل پیش نہیں ھوا ممکن ھے کہ وہ بل سال حال پیش ھوکر اسمبلی سے منظور ھو جائے ۔ اس کی وجہ سے حکومت کو ۱۴ لاکھ روپئے کا فائدہ ھوگا ۔ اسی طریقہ سے منصبداری کو بھی برخاست کرنے کا بل پیش ھوکر منظور ھو جائے تو اس سے بھی کافی فائدہ ھوگا ۔

اس موقع پر اکثر ارکان نے پالیسی کے بارے میں کہا ۔ پالیسی کے بارے میں میں یہ عرض کروں گا کہ جو حکومت ڈیموکریسی کے اصول پر بنتی ھےجو ڈیموکریسی کے اصول کی بناء پر الکشن لڑکر بر سر اقتدار آتی ھے اسی الکشن میں ھر ایک پارٹی اپنا مینی فیسٹو (Manifesto) پیش کرکے یہ بتلا دیتی ھے کہ اس جماعت کی پالیسی کیا رھیگی ۔ میں یہ کہوں گا کہ کانگریس نے الکشن میں حصہ لیتے ھوئے عوام کو اپنے مینیفیسٹوکے ذریعہ یہ بتلا دیا کہ کانگریس کی پالیسی کیا رھیگی ۔ بہت ممکن ھےاس پالیسی کو عمل میں لانے میں کچھ دیری واقع ھورھی ھو۔ لیکن اس دیری کا نا جائز فائدہ اٹھاتے ھوئے اس پالیسی کے نتیجوں کا کریڈٹ(Credit) دوسری پارٹیاں نہیں حاصل کرسکتیں۔ مجھے یہ بھی کہنا ھے کہ آنریبل ممبرس نے بجٹ اور راج پرمکھ کےاڈریس کےموقع پر تقریریں کیں۔ لیکن بجٹ پر وھی تقریریں دھرائی گئیں جو راج پرمکھ کے اڈریس کے موقع پر کیگئی تھیں۔ حالانکہ دونوں تقریریں الگ الگ نوعیت کی ھونی چاھئیں۔ بجٹ کےموقع پر ملک کےاکنامک (Ecomamic) فینانس اور اڈمنسٹریشن کے بارے میں بحث ھونی چاھئیے ۔ اور راج پرمکھ کے اڈریس کے موقع پر حکومت کی پالیسی کےبارے میں تقریر ھونی چاھئیے ۔ لیکن بدقسمتی یہ ھے کہ ھمارےھاؤس میں اب بھی وھی تقریریں سننے میں آئیں جو پہلے ھوچکی ھیں۔

میں آنریبل فینانس منسٹر سے دریافت کرنا چاھتاھوں کہ حیدرآباد کے محکمہ جات مال آبکاری اور جنگلات میں واقعی طور پر کس قدر بقایا جات ھیں۔ اگر یہ معلوم ھوتو صحیح

خسارہ کا اندازہ ہوسکتا ہے - اور دیہ الیہ بجٹ کا ٹا ٹیل دینے کی جو کوشش کی جارہی تھی وہ ٹائیٹل بھی نہیں دیا جاسکتا تھا - ساتھ ہی ساتھ میرا سجیشن یہ ہے کہ بڑے بڑے پراجکٹس پر کروڑوں روپیہ خرچ ہوتا ہے لیکن جب ہم اس خرچہ سے آمدنی کو دیکھتے ہیں تو کروڑوں رپیوں کے مقابلہ میں آمدنی لاکھوں میں ہوتی ہے - اس سے فائدہ معلوم نہیں ہوتا - میں آنریبل فینانس منسٹر سے استدعا کروں گا کہ اس بارے میں خاص طور پر توجہ دیکر فیگرس معلوم کرائیں -

کروڑ گیری برخاست کرنے کے سلسلے میں گذشتہ سال آنریبل فینانس منسٹر نے اطمینان دلایا تھا کہ اپریل ۵۴ ع سے کسٹمس ڈیوٹی ختم ہو جائیگی - لیکن سالحال کے بجٹ سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ اس سال بھی کروڑگیری رکھی جارہی ہے - میں اس سلسلے میں یہ سجیشن دوں گا کہ سیلس ٹیکس کی وصولی بھی صحیح طریقہ پر نہیں ہو رہی ہے - حسابات صحیح طور پر پیش نہیں کئیے جاتے - جسکی وجہ سے سیلس ٹیکس جس طرح وصول ہونا چاہیئے نہیں ہورہا ہے - اس طرح سیلس ٹیکس پر پوری طرح توجہ دی جاکر کسٹمس کے برخاست کرنے سے ہونے والی کمی کی بھر پائی کرلی جاسکتی ہے - کروڑ گیری کے برخاست ہونے کی تجویز سے عوام کو بھی کافی پریشانیوں کا سامنا کرنا پڑرہا ہے کیونکر وہاں کے لوگ یا تو سابقہ عادت کے لحاظ سے یا اس خیال سے کہ اب تو یہ محکمہ بندھی ہونےوالا ہے جتنا نفع کماسکتے ہیں اسی عرصہ میں کماپیں اس نیت سے بیحد بد عنوانیاں کررہے ہیں -

بجٹ دیکھنے سے یہ بھی نہیں معلوم ہوتا کہ الکٹرسٹی پر اصل خرچ کتنا ہورہا ہے اور آمدنی کیا ہے - اس کی تفصیلات نہیں ہیں - وہ بھی بجٹ میں ہونے چاہئیں -

ان سب حالات کے پیش نظر میں آنریبل فینانس منسٹر کو مبارکباد دیتا ہوں کہ انہوں نے حالات کا جائزہ لیکر صحیح طور پر متوازنہ پیش کیا - اور اپنڈکس (سی) میں جو نیوایٹمس بتلائے گئے ہیں وہ بھی کافی تشفی بخش ہیں گذشتہ تین سال میں جو تجربہ حاصل ہوا اس کے لحاظ سے سب چیزیں اس میں شامل کی گئی ہیں -

آخر میں میں فینانس منسٹر کو مبارک باد دیتے ہوئے یہ عرض کروں گا کہ کم از کم آئندہ سال کے بجٹ میں کروڑ گیری کو نہ رکھیں -

श्री. रूखमाजी घोंडीबा पाटील :—मिस्टर स्पीकर सर, जो बजट जागीरदारी, मक्तेदारी, मनसबदारी, रूसुमदारी और अुसके साथ साथ जमीनदारी आदि को कुछ न कुछ धक्का देकर आगे बढ़ कर ऑनरेबल फायनान्स मिनिस्टर साहब ने हाअुस के सामने पेश किया है अुसके लिये मैं अिस बजट को पुरोगामी बजट कहता हूं, और साथ साथ आनरेबल फायनान्स मिनिस्टर साहब को धन्य-वाद देता हूं। अभी अभी अेक ऑनरेबल मेंबर ने कहा कि अगले साल तक करोडगिरी को खतम कर दिया जाय लेकिन अुसकी मांग से मैं पूरी तरह सहमत नहीं हूं। मैं नहीं चाहता कि अगले साल तक हमको अिसके लिये रूकना चाहिये। जहां तक हो सके करोडगिरी को हमें आज ही

खतम करना चाहिये यह मेरी मांग है। करोडगिरी के बारे मे जो कहा गया है वह कोओी नओी बात नही है। जिस वक्त हम सरंजामशाही के खिलाफ आंदोलन करते थे, स्वराज्य की मांग करते थे अुस वक्त से हमारी यह मांग रही है। देहात के लोग स्वराज्य के माने नही समझते थे लेकिन करोडगिरी खतम करने के नारे लगाकर ही हमने लोगों मे जोश पैदा किया और स्वराज्य प्राप्त करने के लिये अुनको अेक जगह लाकर लडने को हिम्मत अुन मे पैदा की है। आज हमारे हैदराबाद स्टेट के १६ जिलों के देहातियों की मांग है कि करोडगिरी को खतम कर देना चाहिये, यह सिर्फ हम लोगों की मांग नहीं है बल्कि गरीब मजदूर और काश्तकारों की भी यह मांग है। अिस लिये मै अिस साल कस्टम के लिये कोओी प्रोवीजन रखना बिल्कुल नामुनासिब समझता हूं। स्वराज्य के आंदोलन मे हमने करोडगिरी के नाम पर हजारों लोगों को अेकठ्ठा किया है। जब रजाकार सताते थे तो अपनी मां बहनों की रक्षा के लिये अुनके पास अुस वक्त कोओी हतियार नही रहते थे। अुस वक्त अुन्होंने पत्थर और गोफन से रजाकारों की गोलियों का मुकाबला किया था। टाकली गांव मे रजाकारों ने धुम मचाओी थी। अुसका मुकाबला करने के लिये हजारों की तादाद में गरीब किसान और मजदूर जमा हो गये थे। अुस वक्त हरिभाअु जगताप नामी अेक किसान रजाकारों का गोफन से मुकाबला करते हुअे गोली का शिकार हूआ था। अुसी वक्त अेक काश्तकार अिसी तरह से बेलपुरी गांव में भी रजाकारों के मुकाबले में मारा गया था। मुझे अब याद आता है और दुःख भी होता है कि जब अुसकी लाश पंचनामे के लिये लाओी गओी तो अेक रजाकार ने लाश को लाथ मारी। अुस वक्त हम कहते थे कि हमारी सरकार स्थापित होगी तो सब से पहले हम करोडगिरी को खतम करेंगे। अुस वक्त कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष की तरफ से भी हमको सर्क्यूलर भेजे जाते थे कि अिसी नारे को लेकर लोगों में जागृति पैदा करो। मुझे तारीख वगैरा बराबर याद नही लेकिन शायद अुस वक्त हमारे आज के मिनिस्टर फॉर होम यहां की कांग्रेस के अध्यक्ष थे। अिसी तरह लोनी गांव में भी अेक काश्तकार मारा गया था। हमारे तालुकेके अंदर रजाकारों ने कओी बार अिस आंदोलन को करनेवालों के खिलाफ गोलियां चलाओीं और अुसमें अपने मां, बहनों, बाल-बच्चों की परवाह न करते हुअे लोगोंने कुर्बानियां कीं। मै यह कहूंगा कि अगर अिसी साल हम करोडगिरी को बंद नहीं कर सकते तो अिस हाअुस में कोओी ताकत नहीं है।

[SHRIMATI MASUMA BEGUM (CHAIRMAN) IN THE CHAIR]

पुलिस अेक्शन के बाद करोडगिरी को खतम करने के बारे में आग्रह किया था, लेकिन अुस वक्त बताया गया कि अेक साल अनुभव होने के बाद हम अिसके बारे में कुछ करेंगे। दूसरे महत्व-पूर्ण सवालों को पहले हमें हल करना होगा। बाद में वेलोडी साहब की मिनिस्ट्री आओी। अुसमे हमारे यहां के चार लोग थे। अुनसे भी हमने दरख्वास्त की, तो हमें बताया गया कि जब हमारी पूरी मिनिस्ट्री हो जायगी, लोगों की मिनिस्ट्री आ जायगी तब हम करोडगिरी को निकाल देंगे। कओी साल बीत गये और बाद में यह भी आश्वासन दिया गया कि १९५४ के आखिर तक हम करोडगिरी को खतम कर देंगे, लेकिन मैंने अभी सुना है कि सेंट्रल गवर्नमेंट से अिजाजत लेकर अेक साल के लिअे अिसको और जारी रखा जानेवाला है। मैं अिसके बिल्कुल खिलाफ हूं। हम करोडगिरी को बंद नही कर रहे हैं, अिसका बहुत बुरा असर देहात के लोगों पर हो रहा है। मैं टाकली गांव मे गया था जहां के काश्तकारों ने करोडगिरी बंद करने के आंदोलन में अपना खून बहाया था..

شری جے وینکٹیشم (حضوراباد - محفوظ) - پوائنٹ آف آرڈر - آنریبل ممبرجو بات
کرر ہے ھیں انکے الفاظ کلیر نہیں نکل رہے ھیں - انکو دانت نہ ھونے کی وجہ سےشائد . .

श्री रूखमाजी धोंडीबा पाटील :—यह मेरी गलती नहीं है। दांत लगानेवाले और तोडनेवाले की गलती है। मैं अर्ज कर रहा था कि जब मैं अुस गांव में गया तो सौ दो सौ लोग मेरा भाषण सुनने के लिये जमा हुअे। मैंने अुनसे कहा कि अब हमारी सरकार आअी है, शांति प्रस्थापित हो गअी है, आयंदा साल करोडगिरी भी बंद हो जायगी। लोगोंने मुझ से कहा कि आप अपनी जबान बंद करो और यहां से चले जाओ। आजादी के बाद लोगों की अिस तरह की बात सुनकर मेरा दिल ठंढा हो गया है। मुझे शर्म के मारे सर झुकाकर अुस गांव से निकल जाना पडा। लोगों ने कहा कि अपनी मां-बहनों की अिज्जत संभालने के लिये हमने अपना खून बहाया है और अब आप नाकेदारी सम्हालने के लिये और अुनका साथ देने के लिये कहते हैं। १९५४ साल शुरू हो गया है, मैं सरकारसे पूछुंगा कि आप करोडगिरी कब बंद करनेवाले हैं ? अिस तरह से जिंदा रहकर भी मुर्दे की तरह अिस हाअूसमें बैठना हमारे लिये शोभा नहीं देता। मैं यह कहूंगा कि करोडगिरी खतम होने से जो आमदनी कम होगी वह सेल्स टॅक्स से हम पूरी करवा सकते हैं, लेकिन आज सेल्स टॅक्स डिपार्टमेंट के आफीसर बदनीयती से काम करते हैं। सेल्स टॅक्स से जो करोडों रुपया वसूल होना चाहिये वह आज नहीं हो रहा है। हमारे राज्य के कारोबार सेल्स टॅक्स की आमदनी पर निर्भर हैं। अिसी डिपार्टमेंट के भरोसे पर हम अपने पूरे मसायल तय करनेवाले हैं। आबकारी खाता भी हमको बंद करना होगा, अुसकी भी मांग बहुत जोर की है। फिर अितना रुपया हम कहां से लायेंगे ? हम और हमारे मिनिस्टर अिस सेल्स टॅक्स की तरफ अच्छी तरह से नहीं देख रहे हैं। दूसरे डिपार्टमेंन्टस में भी करप्शन बढ रहा है, लेकिन खामोश बैठकर हम अिन बातों को अब चलने नहीं देंगे। हमारे पूरे हाअुस के लोग अगर अिसकी तरफ ख्याल देंगे तो मुझे विश्वास है, यह बात अब नहीं हो सकती। हर मेंबर का यह फर्ज कि वह सेल्स टॅक्स की तरफ अच्छी तरह से ख्याल दें। करोडगिरी टॅक्स मेहनत करनेवाले काश्तकार और मजदूर देते हैं। सेल्स टॅक्स अच्छी तरह से वसूल किया जाय तो वह पूरी जनता पर आयद होता है। अिसलिये असी सीधीसादी और मामूली मांग को पूरा करने के लिये मैं फायनान्स मिनिस्टर साहब और पूरे कॅबीनेट से अिस्तुदुआ करूंगा कि अिसीसाल में करोडगिरीको खतम करनेकी आप कोशिश करें। अगर नहीं होगा तो जो अिस तरह का बजट बडे बडे अफसरों के अिशारे पर बनाया गया है अुसको हमें आखिर आपके कहने पर पास तो करना ही पडेगा लेकिन वह हमारी पूरी गलती होगी। मैंने पूरी सरहद के आनरेबल मेंबरों से अेक दरख्वास्त पर दस्तखत लेकर वह दरखास्त हुकमत के पास पेश की है। अुसके बारे में ज्यादा बहस करना मैं हाअुस में मुनासिब नहीं समझता, लेकिन मैं अर्ज करूंगा कि कस्टम का मसला हमारी अिज्जत कम करनेवाला मसला हो गया है। अिस पाप्यूलर गवर्नमेंट ने अितने बडे बडे काम किये हैं तो क्या वह अिस मामूली काम को नहीं कर सकती ? जागीरदार, जमीनदार, रूसुमदार, अिनामदार और साथ साथ निजाम साहब के हक को कम करने की ताकत रखनेवाली गवर्नमेंट अगर अिस मामूली कस्टम को खतम करने के बारे में नहीं सोच सकती तो बडे ताज्जुब की बात है। बंबअी और दूसरे प्रांतों में यह करोडगिरी नहीं है। लेकिन हमारे यहां अेक काश्तकार को अपने माल पर ४० या ५० रुपये कस्टम के लिये देने पडते हैं। लोग कहते हैं कि यह मगलाअी है। अब अिस मोगलाअी की काली लकीर,अिस काले सांप की दुम

को हमने काट दिया है लेकिन सिर्फ अिसीमे काम नहीं चलेगा। अुसके बचे हुअे अगले हिस्से को भी निकालने की जरूरत है। फायनान्स मिनिस्टर से मैं कहूंगा कि अब तक यह पोर्टफोलियो आप की तरफ नहीं था, वह अब आपके पास आया है। मुझे आनंद है, आप तजरूबेकार और गरीबों से हमदर्दी रखनेवाले हैं। मैं आपको बहुत बार मुबारकबाद देता हूं, लेकिन मैं प्रार्थना करूंगा कि हमारी अिस मांग को आप मंजूर करें। यह आवाज मेरी नहीं है, यह अुन लोगों की आवाज है जिन्होंने अिसके लिये कुर्बानियां की हैं। गरीब किसान और मजदूर साल भर में अपने बच्चों को और मां-बहनों को कपडा नहीं पहना सकता लेकिन ५०-५० रुपये करोडगिरी के लिये देता है। भारत आज स्वतंत्र हो गया है अैसी हालत में अिस काले सांप को रखने की जरूरत नहीं है। सेल्स टैक्स के आफिसर डिग्रियां हासिल करके हुकूमत की बडी बडी तनख्वाहें लेते हैं, लेकिन अुनको तजुर्बा नहीं है। व्यापारी अुनको फंसाते हैं, वे डायरेक्टर बने हैं लेकिन अुनको जानना चाहिये कि व्यापारी सरकार को किस तरह से डुबाने की कोशिश करते हैं। कोअी व्यापारी लाख रुपये का माल लेता है तो आधे से ज्यादा रकम दूसरों के नाम पर रख देता है और अिस तरह से सेल्स टैक्स डालता है। मैंने हाअुस का काफी समय लिया है, स्पीकर साहब मुझे अिसके लिये माफ करें, लेकिन यह बहुत अहम मांग है। अगर हम कोशिश करें तो अगले साल सेल्स टैक्स से आज जो सिर्फ २ करोड की आमदनी होती है वह ६ करोड तक हो सकेगी अिसके बारे में मुझे संदेह नहीं है। आज सेल्स टैक्स डिपार्टमेंट अपने कारनामों से हुकूमत की अिज्जत को घटा रहा है। अिस डिपार्टमेंट के लोगों को अच्छी तरह से हिदायत दी जाय। अुनसे कहा जाय कि अगर आपसे आयंदा गलती होगी तो आपको बराबर चालान किया जायगा। सैल्स टैक्स की आमदनी बढ जाय तो हम बंबअी प्रांत से भी आगे बढ सकते हैं। बंबअी और मद्रास में जितनी आमदनी हो सकती है तो हमारे यहां क्यों नहीं हो सकती ; लेकिन हम सब को अिसमें हुकूमतकी मदद करनी चाहिये। अिसमें कम्युनिस्ट या यू.पी.पी. पार्टी अिस तरह से पार्टीबाजी का सवाल नहीं है। मैं बंबअी प्रांत के नजदिक का रहनेवाला हूं। वहां के काश्तकारों ने काफी पैसा कमाया लेकिन हमारे काश्तकारों को फायदा नहीं मिल सका। मैं बार बार हुकूमत से प्रार्थना करूंगा कि वह किसी हालत में अिस करोडगिरी को बंद करे। अगर हम हुकूमत चलाने के लायक कहलाते हैं तो अिस मांग की तरफ ध्यान देना होगा। मैं हाअुस से और मिनिस्टर साहब से आखर में अिल्तजा करूंगा कि अिस बजट में जो आयटम अिस सिलसिले में रखा गया है अुसको निकालने की पूरी तरह कोशिश की जाय। और करोडगिरी को खतम करने के बारे में सोचें। अितना कहकर मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

شری جے - آنند راؤ (سرسلہ - عام) میڈم چیرمن - آنریبل ممبرس نے بجٹ پر خیالات کا اظہار کیا ہے - اوس طرف سے یہ کہا گیا کہ گزشتہ کی طرح اب بھی اپوزیشن پارٹی کی طرف سے اسکو پولیس بجٹ کہا جا رہا ہے - یا جاگیر دارانہ بجٹ کہا جا رہا ہے یا زمیندارانہ بجٹ کہا جا رہا ہے - لیکن میں بھی پھر اون ہی باتوں کو (کہنے پر مجبور ہوں جو کہ آنریبل ممبرس آف دی اپوزیشن نے کہی ہیں - میرا خیال ہے کہ بجٹ کا جو نیچر (Nature) ہے وہ سیمی فیوڈل ٹائپ (Semi feudal type) کا نیچر ہے - یہ میں اس وجہ سے کہتا ہوں کہ ہمارے ریوینیو کے جو ویسی (Sources) اور ذرائع ہیں وہ وہی ہیں جو پہلے تھے یعنی اگریکلچر

کسائز ۔ جنگلات وغیرہ ۔ اون ھی سے ھماری آمدنی کا زیادہ حصہ حاصل کیا جاتا ھے اور اس کو جسطرح خرچ کیا جاتا ھے وہ تو صاف ظاھر ھے ۔ اس کو دھرانے کی ضرورت نہیں ۔ یہ خرچہ یا تو منصبداروں ۔ جاگیرداروں اور نظام کو معاوضہ دینے پر خرچ کیا جاتا ھے یا اڈمنسٹریشن پر خرچ کیا جاتا ۔ پراڈکٹیو نیچریا نیشن کنسٹرکشن کے مدات پر یہ رقم خرچ نہیں کی جاتی ۔ در اصل دیکھا جائے تو آمدنی کے جو ذرائع ھیں یعنی اگریکلچر وغیرہ (جن کا میں نے ذکر کیا ھے) وہ انسگنیفیکینٹ نیچر (Insignificant nature) کے ھونا چاھئے اور اصل آمدنی تو انڈسٹریز کے ذریعہ ھونی چاھئے ۔ اس قسم کے جو سورسس رھنے چاھئیں وہ یہاں نہیں ھیں ۔ اس قسم کے سورسس کیپٹلسٹ کنٹریز (Capitalist countries) مثلا انگلینڈ ۔ امریکہ ۔ کینیڈا وغیرہ میں ھیں ۔ یہاں صرف زراعت پر ھی بھروسہ کیا جائے تو آمدنی کم ھوگی ۔ ایک آنریبل ممبر نے ابھی ابھی کہا تھا کہ کانگریس نے تمام وہ باتیں جو اوس نے اپنے مینی فسٹو (Manifesto) میں لکھی ھیں اون پر عمل کر رھی ھے ۔ میں کہونگا کہ آپ کے مینیفسٹو میں یہ نہیں تھا کہ جاگیر داروں کو معاوضہ کے نام پر رقم دیجائیگی ۔ اگر نہ دینے کے متعلق کوئی کہیں تو کانسٹی ٹیوشن کی آڑ لیجائیگی اور کہا جائیگا کہ کسی پراپرٹی کو بلا معاوضہ نہیں لیا جاسکتا ۔ ھم نظام کو صرف خاص کا معاوضہ دینگے کیونکہ سنٹرل گورنمنٹ اور نظام سے معاھدات ھیں ۔ اس قسم کی باتیں اس میں نہیں تھیں پولیس کے سلسلہ میں یہ کہا گیا ھے کہ پہلے کچھ ایسے نا خوشگوار حالات تھے اوسکے پیش نظر ھم آئندہ احتیاط کرنا چاھتے ھیں اس لئے پولیس کے مد میں خرچ کیا جا رھا ھے ۔ واقعہ ایسا نہیں ھے ۔ کمیونسٹ پارٹی نے صاف صاف اپنی پالیسی کا اعلان کردیا ۔ الکشن کے سلسلہ میں اوس نے سنجیدگی سے اپنا لائحہ عمل عوام کے سامنے رکھا ۔ وہ اس قسم کے اکٹیویٹیز (Activities) نہیں کررھی ھے ۔ بلکہ جمہوری طریقہ سے آگے بڑھ رھی ھے اور جمہوریت کو فروغ دینا چاھتی ھے ۔ لیکن چونکہ خود آپ کو اپنے پر بھروسہ نہیں اس لئے آپ کہتے ھیں کہ کمیونسٹ پارٹی یا سوشلسٹ پارٹی اس قسم کے اکٹیویٹیز کر رھی ھے ۔ عوام کے مسائل کو حل کرنے کی ھمت آپ میں نہیں ھے ۔ آپ یہ جانتے ھیں کہ عوامی قوتیں آج ابھر رھی ھیں ۔ بیروزگاری اور انڈسٹریز بند ھونے کی وجہ سے ھڑتالیں ھو رھی ھیں دیہاتوں میں جو لیبررس ان امپلائڈ ھوگئے ھیں وہ سٹی میں آرھے ھیں ۔ وہ لوگ بیروزگاری سے پریشان ھوکر اپنے جائز مطالبات کے لئے آپ سے لڑنا چاھتے ھیں ۔ اون کو دبانے کے لئے پولیس کی ضرورت ھے ۔ اسی فکر سے آپ پولیس پر کافی روپیہ خرچ کر رھے ھیں ۔ کہتے ھیں کہ عوام میں ایسی چیزیں نہیں لیکن دوسری پارٹیاں اون کو بھٹکا کر ریویلیوشنری ایکشنس کروانا چاھتے ھیں ۔ لیکن اس سے یہ معلوم ھوتا ھے کہ آپ کو عوام سے خطرہ ھے اور آپ اون کے مسائل حل نہیں کرسکتے ۔ یہ صاف بات ھے ۔ ان امپلائمنٹ کی جو بھیانک صورت پورے ھندوستان اور حیدرآباد میں آپ دیکھتے ھیں اوس کا مقابلہ کرنے کے لئے آپ نے ایسے طریقہ اختیار نہیں کئے کہ ایک

دو سال میں اوس کا انسداد ہوسکے ۔ ایک طرف تو اسکلڈ ان امپلائمنٹ ہے اور دوسری طرف غیر فنی لوگ یعنی لیبررس وغیرہ کو امپلائمنٹ نہیں مل رہا ہے حکومت کا یہ کہنا کہ روزگار حاصل کرنے کے لئے اتنے لوگوں نے درخواستیں دی ہیں اور اتنے لوگوں کو ہم نے روزگار دیا یہ صحیح نہیں ہے ۔ ہزاروں لوگ ایسے ہیں جنہوں نے آپ کے پاس درخواستیں نہیں دی ہیں ۔ واقعات ہمارے سامنے صاف ظاہر ہیں ۔ عوام کی پرچیزنگ کیپا سیٹی بڑھانے کے لئے ہم لازمی طور پر دیش کو انڈسٹریلائز (Ii dustrialise) کرنا چاہئے ۔ انڈسٹریز بڑھانا چاہئے تاکہ بیروزگاری کا مسئلہ حل ہوسکے ۔ اگر انڈسٹریز کو ترقی دیجائیگی تو ایجوکیٹیڈ اور غیر تعلیم یافتہ بیروزگاروں دونوں کی ایک حدتک اس میں کھپت ہوسکتی ہے اور ہماری قومی دولت میں اضافہ ہوسکتا ہے ۔ ممکن ہے ٹریژری بنچس کے آنریبل ممبرس یہ کہیں کہ بجٹ سے لینڈ کا مسئلہ حل نہیں ہوگا ۔ بلکہ اس کے لئے تو ہم نے قانون لایا ہے ۔ لیکن میں کہونگا کہ آپ کے اوس قانون سے بھی مسئلہ حل نہیں ہوسکتا ۔ ہزاروں لاکھوں ایکر زمین لوگوں نے آپس میں تقسیم کرلی ہے ۔ بہت سے لوگوں نے اپنی زمینات کو بیچ کر ہزاروں روپیہ اپنے پاس رکھ لئے ہیں ۔ یہ چیز آپ بھی جانتے ہیں ہم بھی جانتے ہیں۔ امید نہیں کی جاسکتی کہ لینڈ اکویزیشن سے دوسرے لوگوں کو زمین ملیگی ۔ یہ البتہ ہوسکتا ہے کہ جن لوگوں نے زمینات بیچی ہیں اونکو اپنا روپیہ انڈسٹریز میں لگانے کے لئے ترغیب دیجائے ۔ اس سے قومی دولت میں تھوڑا بہت اضافہ ہوسکتا ہے ۔ اور ان امپلائمنٹ بھی دور ہوسکتا ہے ۔ اس سے قوت خرید بھی بڑھیگی ۔ ہمارے پلاننگ کے تحت پرائویٹ کپٹل کو بھی انڈسٹریز میں لگانے کی ترغیب دیجانی چاہئے زمینداروں نے اپنی اراضیات بیچ کر ہزاروں روپیہ پیدا کرلئے ہیں ۔ جاگیر دار وغیرہ کے پاس بھی دوسرے طریقوں سے جمع کیا ہوا روپیہ ہے ۔ اس کو انڈسٹریز میں لگانے کی ترغیب دینا چاہئے ۔ ہماری پارٹی نے یہ صاف صاف کہدیا ہے پرائویٹ کپٹل کو ایک دم ضبط کرکے نیشنلائزیشن کے لئے پلان نہیں بنایا جاسکتا ہم کو رفتہ رفتہ اور تدریجی طور پر آگے بڑھنا چاہئے ۔ پرائویٹ سکٹر کو مدد دیتے ہوئے جسطرح کہ چائینا میں ہوا آگے بڑھنا چاہئے ۔ اس وقت جو انڈسٹریز ہیں وہ بدیشی لوگوں کے ہاتھ میں ہیں ہٹی گولڈ مائنس اور سنگارینی کالیریز کا مینیجمنٹ انگریزوں کے ہاتھ میں ہے ۔ سرسلک کے متعلق آپ کی جانب سے یہ کہا گیا کہ ہم نے برلا کو اس لئے دیا ہے کہ وہ اچھی طرح چل سکے ۔ ممکن ہے پٹیل یا پنڈت جی کی سفارش لائے ہونگے حالانکہ مقامی لوگ اوس کو لینے کے لئے تیار تھے ۔ اون سے اس کے متعلق تصفیہ نہیں کیا گیا ۔ اون کو اس سے استفادہ کا موقع نہیں دیا گیا۔ بلکہ برلا صاحب کو جو ہندوستان کے ایک بہت بڑے کیپٹلسٹ ہیں اون کو موقع دیا گیا ہے ۔ اسی طرح چار مینار فیکٹری آئی ۔ یل ۔ ٹی ۔ ڈی کے سپرد کی گئی ہے ۔ اس وقت کوئی انڈسٹری ایسی نہیں ، جو یہاں کے پبلک انٹرپرائزس کے تحت ہو ۔ چند انڈسٹریز ایسی بھی ہیں جن میں ہاف

مینیجمنٹ ہمارا اور ہاف مینیجمنٹ دوسرے لوگوں کا ہے یا اون کے سپرویژن میں ہے۔ میری معلومات کی حدتک میں کہہ سکتا ہوں کہ بہت کم انڈسٹریز ایسی ہیں جو پرائیویٹ سکٹر سے تعلق رکھتی ہیں ۔ اگر یہی صورت حال رہے تو انڈسٹرلائزیشن ہوسکتا ہے اور نہ ملک آگے بڑھ سکتا ہے ۔

میں خاص طور پر بیسک ایجوکیشن (Basic Eduaction) کی جو گورنمنٹ پالسی ہےاس پر تبصرہ کرنا چاھتاھوں ۔ عوام کو یہ طریقہ بتایا گیا ہے ہم اسٹوڈنٹس (Students) کو ہاف ٹائم (Half time) پڑھائینگےاور ہاف ٹائم مختلف پیشوں مثلا بڑھئی. درزی لوھار ۔ کمہار جولائی وغیرہ کی تعلیم دیں گے ۔ گویا کم سن بچوں کو جن کی عمریں ۱۰ - ۱۱ سال کی ہیں اس کی تعلیم دلانا مقصود ہے میں پوچھنا چاھتاھوں کہ کیا اس نمونہ پر تعلیم دیجائے تو کوئی صنعتی ترقی ملک میں ہوسکتی ہے ۔ اس طرح کی ترغیب دیکر آپ کس قسم کا سماج تیار کرنا چاھتے ہیں ۔ کیا اس کے بعدسلف سفیشیٹ (Self-sufficient) ہوسکیں گے اگر آپ کاخیال یہ ہے کہ وہ سلف سفیشنٹ ہوں گے جیسا کہ کہا جارہا ہے تو میں کہوں گا کہ یہ ساری باتیں کہنے اور سننے کی ہیں ۔ عام فہم آدمی کو تو یہ باتیں اچھی معلوم ہوں گی لیکن اس کے نتائج برے نکلیں گے ۔ یہ کوئی سائینٹیفک (Scientific) طریقہ نہیں ہے کہ محض لیبر کی تعداد کو بڑھایا جائے ۔ ایسے بچے جو نکلیں گے وہ چائلڈ لیبر میں آئیں گے جن کی جسمانی حالت بھی اچھی نہ ہوگی اوروہ کسی فن میں بھی تیار نہ ہوسکیں گے ۔ اور اگر کوئی اپنے خاندانی پیشے سیکھنا چاہےتووہ خود اپنے گھر میں سیکھ سکتا ہے ۔ لیکن آپ ٹریننگ دیں گے تو ا ن کی صحت دن بدن گرتی جائیگی ۔ جن پیشوں کی ترغیب دیجا رہی ہےآخر وہ کونسے پیشے ہیں ۔ اس کے کیا اثرات ہوں گے اس پر غور کرنا ضروری ہے ۔ سلف اکانمی (Self economy) پالیسی جو پہلے زمانے میں تھی کیا آج ہم دستی مشاغل سے آج کی ضروریات کی تکمیل اسی طرح کرسکتے ہیں ۔ آج جبکہ ساری دنیا ایک ملک کے مانند ہےایک گھر کے مانند ہے ۔ حمل و نقل کے ذرائع بڑھ گئے ہیں ۔ آمد و رفت کی سہولتیں بڑھ گئی ہیں ایسی صورت میں ایسے زمانے میں کیا ان باتوں سے کوئی فائدہ ہوسکتا ہے ۔ اس سے محض یہ ہوگا کہ کامپی ٹیشن (Competition) میں ہم ایک اور اضافہ کرسکتے ہیں ۔ لوگوں کو ہم بیاک ورڈ (Backward) یعنی رجعت پسندی کی طرف لے جارہے ہیں ۔

آپ نے اپنے اصولوں کو گاندھین تھیری (Gandhian Theory) وغیرہ وغیرہ کتنے پیارے پیارے نام دئے ہیں لیکن اس کا خیال نہیں کیا جاتا کہ اگرہم ان اصولوں پر آج ان حالات میں عمل کریں تو ہماری حالت اور بدتر ہو جائیگی ۔ اس لئے میں عرض کروں گا کہ مجھے ایجوکیشن کی اس پالیسی سے بالکل اختلاف ہے جو آئندہ تمام اضلاع میں پھیلائی جانے والی ہے ۔ مجھے اس میں بھی شبہ ہے کہ یہ سرسبزھوگی ۔

میں سمجھتا ہوں کہ یہ اسکیم سر سبز نہیں ہوسکتی - بجائے اس کے کہ میکانا ئز طریقہ
پر اپنی افیشینسی کو بڑھائیں ہم پیچھے کی طرف جارہے ہیں - اس سے ہماری خوش
حالی نہیں بڑھ سکتی - دوسری چیز یہ ہے کہ وہاں شفٹ سسٹم (Shift system)
نافذ کیا جارہا ہے یعنی دو شفٹ میں تعلیم دیجائیگی - صبح میں ایک بیاچ (Batch)
اور دوپہر میں دوسرا بیاچ . اس طرح گورنمنٹ کا ارادہ ہے کہ کم از کم خرچ میں
زیادہ سے زیادہ لوگ تعلیم حاصل کرسکیں اور ساتھ ساتھ پیشہ ورانہ تربیت بھی ہوجائے
لیکن کیا اس طرح عمل کیا جائے تو ٹیچرس پر بہت زیادہ بار نہیں ہوگا - ایک بیاچ کو
صبح سے شام تک پڑھا نے اور ایک بیاچ کو صبح میں اور دوسرے بیاچ کو شام میں
اس طرح دو بیاچس کو صبح سے شام تک پڑھانے میں بہت بڑا فرق ہے یہ کوئی سیکل
نہیں ہے کہ صبح سے شام تک میں سوار رہا اور شام میں زید کو دیدیا یہ مشنری
(Machinary) نہیں ہے ٹیچر کا دماغ ہے - اتنا زائد بار کیا وہ برداشت
کرسکیے گا - میں سمجھتا ہوں کہ یہ اس کی قوت برداشت سے باہر ہے - انسان کے ساتھ
مشین کا سا سلوک کرنا کچھ ٹھیک بات نہیں ہے - میرا پرپوزل یہ ہے کہ اگر آپ کو
تعلیم دینا ہے تو ٹکنیکل ایجوکیشن دیجئیے جیسے اگریکلچر - ویٹرنری - مڈیکل وغیرہ
ایسے لڑکوں کو اس میں شریک کیجئیے جو دسویں کلاس تک پڑھے ہوں - ان کو
ان سبجکٹس (Subjects) میں تعلیم دلا کر ڈپلوما (Diploma)
دیا جاسکتا ہے - انٹر (Inter) کے بعد کسی کورس (Course)
کو لینے کے بجائے میٹرک کے بعد ان کو ان مضامین کی تعلیم کے لئیے داخلہ ملنا
چاہیئے - ایم - بی - بی ایس بننے کے لئیے ۲۴ - ۲۵ سال تک انتظار نہیں کیا جاسکتا
ملک کے حالات کے لحاظ سے یہ کہا جاسکتا ہے کہ میٹرک کے بعد تین سال کا کورس رکھکر
بی - اے کی ڈگری دیدی جائے تاکہ ہم کم وقت میں زیادہ سے زیادہ ٹکنیشنس
(Technicians) پیدا کرسکیں اور اپنے ضروریات زندگی کو پورا کرسکیں
ایسی صورت میں ٹکنیکل ایجوکیشن کو فروغ دینے میں دنیا کے ساتھ ہم بھی آگے
بڑھ سکیں گے - ورنہ زمانہ تو آگے بڑھ جائیگا اور ہم گاندھین فلاسفی
(Gandhian Philosophy) کو لیکر چلیں تو اس سے نقصان ہوگا - اور
بیاک ورڈ ہو جائیں گے -

The bell was rung.

میں سمجھتا ہوں کہ میں نے زیادہ وقت نہیں لیا ہے - پانچ منٹ میں ختم کردونگا -

اسکے بعد میں لوکل باڈیز کے تعلق سے گورنمنٹ کی جو پالیسی ہے اس پر تبصرہ
کرونگا - میونسپالیٹیز (Municipalities) میں ٹاؤن کمیٹیوں کے
نامینیشنس (Nominations) کے بارے میں احتجاج کیا گیا اور ریپریزنٹیشن
(Representation) کئیے گئیے تو یہ تیقن دیا گیا کہ اسپر ہمدردانہ غور
کیا جائیگا - دیشپانڈے صاحب - راجہ رام صاحب اور دوسرے آنریبل ممبرس جنہوں

سابقہ منسٹر صاحب سے ملے تھے تو انہوں نے چیف منسٹر صاحب سے مشورہ کے بعد یہ وشواس دلایا تھا اور یہ وعدہ کیا تھا کہ آئندہ جب نامنیشنس ہونگے تو اتنی احتیاط برتی جائیگی کہ جو پارٹی میجاریٹی (Majority) میں ہے اسکو میناریٹی (Minority) میں لانے کی کوشش نہ کی جائیگی - اور دوسری بات یہ بتائی گئی تھی کہ نامنیشنس میں جو گورنمنٹ آفیسرس ہیں وہ غیر جانب دار رہینگے - اس کا وشواس دلایا گیا تھا - لیکن آج جب واقعات کو سامنے رکھا جاتا ہے کہ کسطرح وشواس دلا کر اوس سے پھر گئے ہیں اور جب اسطرف توجہ دلائی جاتی ہے تو اسپر کوئی توجہ نہیں کی جاتی ۔ ہم آج دیکھ رہے ہیں کہ نامنیشن میں ایسے لوگوں کو لیا جا رہا ہے جو کانگریس کے پٹھو ہیں اسکا نتیجہ یہ ہے کہ حال حال میں ویملواڑہ میں جو الکشنس ہوئے وہاں پی - ڈی - ایف نے ٥ نشستیں حاصل کیں - اور دو نشستیں کانگریس کو ملیں اسکے باوجود ایک آدمی کو کسی طرح بھٹکا کر اپنے میں ملالیا گیا - جہاں کہیں کانگریس نے نامنیشن کیا وہ پورے گورنمنٹ کے نمائندہ تھے اور ان لوگوں نے اپنی وفاداری کا ثبوت دیا - اسی طرح بھونگیر وغیرہ کی مثالیں گذشتہ سیشن میں دیگئی ہیں - میں اس مسئلہ کو اسلئے دہرا رہا ہوں کہ وشواس دلانے کے بعد بھی یہ سلوک کیا گیا ہے - کورٹلہ تعلقہ جگتیال میں ایسے لوگوں کو نامنیشن میں لیا گیا ہے جو زمینات بیچکر کورٹلہ آئے ہیں اور مستاجر آبکاری ہیں جگتیال کے یہ صاحب کانگریس پریسیڈنٹ کے عزیز ہیں اسلئے انکو نامنیٹ (Nominate) کرایا گیا ہے - نہ صرف یہ بلکہ انکے گماشتے کو بھی نامنیٹ کیا گیا ہے - حالانکہ مقامی اعتبار سے انکو کوئی تعلق نہیں ہے - بڑے مستاجر کو نمائندگی دیگئی تو انکے گماشتے کو بھی نمائندگی دیگئی - کیا اس گاؤں میں کوئی پبلک نمائندگی کرنے والے اوس گاؤں کے آدمی نہیں تھے - اس سے معلوم ہوتا ہے کہ وہاں کے کانگریس آرگنائیزرس نے جسطرح کا مشورہ دیا اسپر عمل کیا گیا - تعاون عمل کا یقین دلانے کے باوجود اسطرح کا عمل کیا گیا ہے - وڑپلی میں نامنیشن ہوا - وہاں یہ کیا گیا کہ ایک پولیس سب انسپکٹر کو نامنیشن میں لیا گیا - کیا یہی پبلک کی نمائندگی ہے - وشواس دلانے کے باوجود میونسپالیٹیز میں پولیس سب انسپکٹر کو نمائندگی دیگئی ہے - کیا یہ طریقہ صحیح ہوسکتا ہے -

मिनिस्टर फार फायनान्स, कस्टम्स, स्टाटिसटिकस, कामर्स अँड अिंडिसट्रीज. (श्री. वि. के. कोरटकर) :—जिस शक्स के बारे में आप बता रहे हैं वह अभी कामपर रुजू है क्या ? या अुसने पेनशन ले लिया है ?

شری جے آنند راؤ - میں تو اسکا امتیاز نہ کرسکا کہ وہ برسر خدمت ہیں یا کیا -

چیف منسٹر (شری بی - رام کشن راؤ) وہ ریٹائیر (Retire) ہونگے -

شری جے - آنند راؤ - جی نہیں - میں پوچھتا ہوں ایسی صورت میں جمہوریت کو کسطرح فروغ ہوسکتا ہے - پبلک کے نمائندوں کو لینے کی جو پالیسی حکومت کی

ہونی چاہئے وہ نہیں ہے - ایسی صورت میں اپوزیشن کا تعاون کسطرح حاصل کیا جاسکتا ہے - میں حکومت سے کہونگا کہ وہ اس بارے میں توجہ دے - کیونکہ تیقن دئے جانے کے باوجود یہ چیزیں نہیں ہورہی ہیں - کیبینٹ کے ڈسیشن کی برابر تعمیل نہیں ہورہی ہے - اس جانب توجہ دینا ضروری ہے - اتنا کہتے ہوئے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں -

***شری جی - سر ی راملو** (منتھنی) میڈم چیرمن - آج ایوان کے سامنے ۵۵-۱۹۵۴ ع کا بجٹ پیش ہے- اس پر تقریر کرتے ہوئے ابھی ابھی اس جانب کے ایک آنریبل ممبر نے یہ اعتراض کیا کہ بجٹ پر جو تقریریں ہورہی ہیں وہ وہی پرانی رٹ ہے بہتر ہوتا اس کا ایک ریکارڈ تیار کرلیا جاکر وقتاً فوقتاً بجایا جاتا - میڈیم اسپیکر سر - اس سلسلے میں میں یہ عرض کردینا چاہتا ہوں کہ ہمارے سامنے راج پرمکھ کا اڈریس آیا - اس کے بعد سپلمینٹری ڈیمانڈس آئے - اس کے بعد بجٹ اسپیچ ہوئی - اس کے بعد یہ بجٹ ہمارے سامنے آیا - ان چاروں میں بھی ہمیں وہی باتیں نظر آئیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ کانگریس کس رخ چل رہی ہے- ان چاروں میں بھی تقریباً وہی چیزیں ہیں- اس لئے اس پر بحث کے دوران میں وہی باتوں کا ذکر کرنا کوئی تعجب کی بات نہیں کیونکہ کوئی شخص کتنی بھی معلومات رکھنے والا ہو اس کو اس دائرہ میں آنا پڑتا ہے - اس سلسلے میں میں پنڈت جواہر لال نہرو کا کوٹیشن کوٹ کرتا ہوں - انہوں نے ریسرچ لیبوریٹری (Research Laboratory) کا افتتاح کرتے ہوئے فرمایا کہ میں بمبئی سے آرہا ہوں - اور آتے ہوئے تین چار میٹنگس میں مجھے سائنس اور سائنس کے کے کاموں پر بھی اظہار خیال کرنا پڑا - تو یہ کوئی اچنبہ کی بات نہیں اگر وہی معلومات اور سنٹنسس کا یہاں اعادہ کروں - یہ اپالوجی(Apology) پیش کرتے ہوئے انہوں نے تقریریں کی - یہاں چیف منسٹر ہوں یا کوئی اور جب اسمبلی میں کوئی مسئلہ اسی رنگ میں آتا ہے تو ان ہی باتوں کا اعادہ کرنا پڑتا ہے - اس کا یہ مطلب نہیں کہ پورے کے پورے پیراگرافس (Paragraphs) دھرائے جائیں- میرا یہ منشأ نہیں ہے - میں یہ رزرویشن رکھ رہا ہوں - آنریبل ممبرس کے اعتراض کا یہ جواب دیتے ہوئے میں آگے بڑھتا ہوں -

مجھے اس بجٹ کو سراہنے میں کوئی شک نہیں ہے - میں آنریبل فینانس منسٹر کی بہت عزت کرتا ہوں -وہ تیاگی ہیں- دیش کے لئے انہوں نے بہت کام کیا ہے -وہ عوام کے کشٹ کو دور کرنے کے خیالات رکھتے ہیں- مجھے آنریبل فینانس منسٹر کو دھنیا واد دینے میں کوئی ھچکچاھٹ محسوس نہیں ہوتی - مگر اس بجٹ کے تعلق سے ان کا تیاگ ان کا کشٹ کہاں تک بجٹ پر اثر کرسکتا ہے میں اس کو سمجھ نہ سکا - شخصی طور پر میں ہرروز ان کے گھر جاکر بھینٹ کرسکتا ہوں - لیکن بجٹ کو وہ کہاں تک بدل سکے ہیں مجھے یہ پوچھنا ہے- ابھی ابھی اس جانب سے ایک عمر رسیدہ آنریبل ممبر نے بڑے جذبہ کے ساتھ تقریر کی اور انہوں نے ہم سے زیادہ کانگریس پر کیچڑ اچھالا انہوں نے کانگریس سے متعلق ہم سے زیادہ کہا - یہ حقیقت ہے کہ کسم سے جتنا کچھ

کشٹ ہو رہا ہے۔ ایسا نہونا چاہئیے تھا۔ آخر میں انہوں نے دھنیاواد دیا۔ اس جانب کے آنریبل ممبرس میں یہی بات ہے کہ کبھی گرم ہو جاتے ہیں اور کبھی نرم ہوجاتے ہیں اس کے برخلاف ہم صرف حقیقت کو جانتے ہیں اور حقیقت ہی کو کہنا چاہتے ہیں۔ اسی پر چلنا چاہتے ہیں۔ اس میں سائیڈ ٹراک کرنے کی ضرورت ہم محسوس نہیں کرتے۔ جو کچھ ہے صاف سیدھا بولتے ہیں۔ یہاں ۱۰ کی میجارٹی سے آپ جو حکومت کر رہے ہیں جس کی وجہ سے اپوزیشن کی بات کو ایک آنہ بھی نہیں مانتے خیر یہی آپ کی ڈیموکریسی ہے۔ لیکن جب ٹراونکور یا آندھرا میں کچھ کشٹ سامنے آتا ہے تو اس وقت آپ اپوزیشن سے ملنا چاہتے ہیں۔ اس وقت اپوزیشن کا خیال آتا ہے۔ اس وقت ملکر کام کرنے کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔ کیا ہی اچھا ہوتا اگر یہی ملکر کام کرنے کا جذبہ اس وقت بھی آپ میں رہتا جب کہ آپ میجارٹی میں ہوں۔ کیا ہی اچھا ہوتا اگر آپ ملے جلے خیالات کے ساتھ اپنا مینی فسٹو بناتے۔ اس لئے کہ ہم تو کامن میان (Common man) اور اس شخص کو فائدہ پہنچانے کی کوشش کرتے ہیں جو جھونپڑی میں بیٹھا ہوا ہے۔ نازک وقت پر تو آپ کو اپوزیشن سے سہیوگ حاصل کرنیکا خیال آتا ہے۔ لیکن اگر میجارٹی میں رہکر آپ اسی سہیوگ کے جذبہ سے کام کرتے تو ہم آپ کو ضرور سراہتے۔ میں اس بجٹ کو کس زبان سے سراہوں۔ میں کئی دنوں تک اس بارے میں چھان بین کرتا رہا۔ لیکن مجھے ایسی کوئی چیز نظر نہیں آئی جس سے یہ بجٹ عوامی بجٹ معلوم ہوسکے۔ یہ بات تو نہیں ہے کہ مجھے سراھنے کی بات نہیں آتی۔ لیکن اس میں خود کوئی ایسی بات نظر نہیں آتی جس کی وجہ سے اس کو سراہا جاسکے۔ اس سال ریوینیو اسٹس (Revenue Assets) ۲۸ کروڑ ہیں۔ اس میں سے نیشن بلڈنگ کے کاموں پر ۳ء۱۴ فیصد ہیں تو میں کس منہ سے اس کی تعریف کروں۔ آدھے سے زیادہ رقم تو اڈ منسٹریشن اور اسٹبلشمنٹ پر خرچ ہورہی ہے۔ ایسی صورت میں اس کو کس طرح عوامی بجٹ کہا جاسکتا ہے۔ آج کے بڑھتے ہوئے مسائل کے لحاظ سے آپ نے نیشن بلڈنگ کے کاموں کو کتنی اہمیت دی ہے اس کا اندازہ ہمیں ہوجاتا ہے۔ اہم مسئلہ کو پہلے ترجیح دینا چاہیئے اور جو دوسرا اہم مسئلہ ہے اس کو بعد میں ترجیح دینا چاہیئے۔

First things must be given the first place and second things second.

لیکن یہ اصول بجٹ کے تیار کرنے میں ملحوظ نہیں رکھا گیا ہے۔ بجٹ تو ہرسال تیار ہوتا ہی ہے۔ نظام کے زمانے میں بھی تیار ہوتا تھا اب بھی تیار ہوتا ہے۔ لیکن یہ آپ کے مینی فسٹو یا آپ کی ائیڈیالوجی (Ideology) کے لحاظ سے نہیں ہے۔ کیونکہ اس کو کیبنٹ نے تو نہیں بنایا ہے۔ وہی کھچڑی جو سیکریٹریٹ سے پک کر آئی اسی کو چالیا گیا اور اسکا ذائقہ لے رہے ہیں۔ آپ کے مینی فیسٹو میں کیا تھا آپ کی ان اسپیچس میں کیا تھا جو آپ نے جھونپڑیوں میں رہنے والے لوگوں

کے سامنے کی تھیں۔ کیا وہ باتیں بھول گئے ۔ اگر ان باتوں کو ملحوظ رکھکر انہیں بجٹ میں نچوڑا جاتا تو اس سے عوامی مشکلات دور ہوتیں۔ لیکن اس کے برعکس ہم آج بجٹ میں دیکھ رہے ہیں وہی اسٹیابلشمنٹ چارجس ہیں وہی

Pay of officers, Travelling Allowances, House rent Allowances, Menial staff etc.

ہے ۔ ہر ایٹم میں ہم یہی دیکھ رہے ہیں ۔ لیکن عوام کی ترقی پر کیا خرچ ہورہا ہے یہ بات کہیں نظر نہیں آتی ۔ یہاں سے وہاں اسٹیابلشمنٹ ہی اسٹیابلشمنٹ پر خرچہ ہورہا ہے ۔ مثال کے طور پر میں وھیکلس ٹیکس (Vehicles Tax) کے بارے میں عرض کرونگا کہ اس سے آمدنی ایک لاکھ ۱۶ ہزار بتائی گئی ہے ۔ اور اس کے لئے برابر اتنی ہی رقم خرچ کی جاتی ہے ایسی صورت میں میں پوچھتا ہوں کہ اتنی رقم صرف کرکے اتنی ہی رقم وصول کرنا کہانتک مناسب ہے ۔ بلا وجہ وصول کرنے کی درد سری کیوں مول لی جائے ۔ اسی طرح دوا خانوں کا اسٹابلشمنٹ ہے ۔ دوا خانوں کے اسٹاف پر تقسیم کی جانے والی دواؤں کی قیمت سے زیادہ خرچ کیا جاتا ہے ۔ یہ اندھیری کوٹھری میں کیا ہورہا ہے ۔ جسطرح راج پرمکھ نظام کے دور حکومت میں لوگوں کو فائدہ پہنچانے کے لئے من مانے خرچ کیا جاتا تھا اسی طرح اب بھی آنکھ بند کرکے اندھیری کوٹھری میں عمل ہورہا ہے ۔ آپ کے دلوں میں جو جذبہ ہے اسکے تحت آپ اپنا مینیفسٹو تیار کرتے ہیں ۔ لیکن بجٹ اور راج پرمکھ کے اڈریس کی جانب دیکھیں تو وہ جذبہ ہمیں نظر نہیں آتا ۔ سکرٹریٹس کے لئے اتنا خرچ ہوتا ہے بے آف منسٹرس پر اتنا خرچ ہوتا ہے ۔ گو تین منسٹرس نکالدئے گئے ہیں لیکن ایک نیا ڈپارٹمنٹ ڈائرکٹوریٹ آف انسپکشن اینڈ اکونٹس کھولا گیا ہے ۔ اس کے لئے ۵ لاکھ روپئے رکھے گئے ہیں۔ ٹیننسی کمیشن کے لئے ۱۰ لاکھ کا ایک نیا مدآگیا ہے ۔ میں یہ نہیں کہتا کہ یہ نہیں ہونا چاہئے تھا ۔ اگر عزم ہوتو سب کچھ ہوسکتا ہے ۔ جو باتیں ہوتی ہیں تو وہ ہوکر ہی رہینگی ۔ اگر نہیں ہونگی تو آپ کے بقاکا سوال بھی پیدا نہیں ہوتا ۔ جو کچھ کیا جاتا ہے وہ سمجھ بوجھ کر ہی کیا جاتا ہے ۔ آنریبل ممبر نے کہا کہ مینی فسٹو ہمارے سامنے ہے ۔ لیکن ۲۲ ہزار دیہاتوں میں جو کسان اور انکے بیل تکالیف میں مبتلا ہیں زمین کی پیدا وار کی حالت گھٹ رہی ہے انہیں فروغ دینا آپ کے مینی فیسٹو میں ہے ۔ ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ ہمارا بجٹ بالکل اسی نمونے پر بنا ہے ۔ تو کیا میں یہ سمجھوں کہ آپ کا مینیفسٹو ھی یہی ہے ۔ جسکا آئینہ یہ بجٹ ہے ۔ کیا آپ وہی نظام کی اندھیری کوٹھری میں رہنا چاہتے ہیں جس کے خلاف آپ اور ہم لڑے ہیں۔ اسی زمانے کے بجٹ کو آپ نے اپنے مینی فیسٹو سے جوڑ دیا ۔ اسطرح سے کہ پولیس ایکشن سے پہلے کا راج اور یہ بجٹ دونوں برابر ہیں اس سے تو یہی ثابت ہونا ہے ۔ اسلئے میں کہونگا کہ بجٹ مینی فسٹو کے مطابق ہے کہنا زمین اور آسمان کو ملانا ہے ۔ آپ یہاں صرف ۴۱ فیصد نیشن بلڈنگ پر خرچ کررہے ہیں تقریباً دو تہائی حصہ اپنے اڈمنسٹریشن اور پولیس وغیرہ پر خرچ کر رہے ہیں ۔ کیا یہ وہی ڈھانچہ نہیں ہے ۔ کیا اسی کے

آپ نے الکشن لڑا تھا - خواہ وہ جائز طریقوں سے ہوا ہو یا ناجائز طریقوں سے اس کا جو مینیفسٹو تھا کیا یہی تھا - اس سے تو معلوم ہوتا ہے کہ ہماری حکومت لرز رہی ہے اور کسی نہ کسی دن ٹوٹ کر رہیگی - ہم دیکھتے ہیں کہ ۵۱ - ۵۲ میں ریوینیو انکم ۲۹۸۷۳۹۰۰۰ ہے ۵۲ - ۵۳ء میں ۲۶۶۳۹۴۰۰۰ ریوینیو انکم ہوتی ہے - ۵۳ - ۵۴ء میں ۲۵۹۲۵۰۰۰۰ ریوینیو انکم ہوتی ہے - اسکے بعد ۵۴ - ۵۵ء کا اسٹیمیٹ ہمارے سامنے پیش ہوتا ہے - اسٹیمیٹس کے بارے میں مجھے یہ کہنا ہے کہ گو اسٹیمیٹس بنانے والے بڑے بڑے ڈگری ہولڈرس بڑے تجربہ کار ہوتے ہیں لیکن اسٹیمیٹس کبھی درست نہیں ہوتے - اگر کسی پھٹانے بیچنے والے کے سامنے پیش کریں تو وہ بھی یہی کہیگا کہ یہ کسطرح کا اسٹیمیٹ ہے - اتنے بڑے بڑے ایٹمس دئے گئے ہیں - بڑے بڑے ہیڈنگس (Headings) دئے گئے ہیں - جلد بندی کی گئی ہے - لیکن اسٹیمیٹ اور ریوائیزڈ اسٹیمیٹ میں زمین آسمان کا فرق ہو جاتا ہے - وہ یہی کہیگا کہ صحیح اعداد معلوم کرنے کی تمیز ھی نہیں - اس میں شک نہیں کہ اسٹیمیٹ میں کچھ کمی زیادتی کی گنجائش ہوسکتی ہے - لیکن اسٹیمیٹ اور حقیقی خرچ میں زمین آسمان کا فرق ہو جاتا ہے - اس سے معلوم ہوتا ہے کہ حالات کا صحیح جائزہ نہیں لیا جاتا - تنگبھدرا پراجکٹ کے پاس کوائیریز (Quaries) کا اسٹیمیٹ بنایا جاتا ہے تو اگر سافٹ سوائیل (Soft soil) کی جگہ ہارڈ سوائیل (Hard soil) رکھدیا جائے تو اس ایک لفظ کے اندازے کی غلطی سے لاکھوں کا فرق آجاتا ہے - کیونکہ وہاں جا کر تو نہیں دیکھا جاتا یہیں بیٹھے بیٹھے اندازہ لگایا جاتا ہے جسکے نتیجہ کے طور پر لاکھوں کے فرق سے اسٹیمیٹ بنایا جاتا ہے -

---

The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on Wednesday, the 10th March, 1954.
